E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 113 | प्रयागराज, बुधवार 12 अगस्त, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

ईरान के डर से ट्रम्प ने गुप्त फ्लाइट ली थी,तुर्किये में एयरफोर्स वन में बैठने का दिखावा किया, फिर सामान वाली गाड़ी से दूसरे प्लेन में पहुंच

तेहरान। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने पिछले महीने तुर्किये से ब्रिटेन जाने के लिए सीक्रेट रूप से एक छोटे मिलिट्री विमान का इस्तेमाल किया था। वॉशिंगटन पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, ईरान से ट्रम्प की हत्या की धमकी मिलने के बाद उनकी यात्रा का पूरा प्लान बदला गया था। तुर्किये की राजधानी अंकारा से निकलते समय ट्रम्प कैमरों के सामने पुराने एयरफोर्स वन में सवार हुए। इसके बाद उन्हें एयरपोर्ट पर सामान और खाना पहुंचाने वाली केटरिंग गाड़ी से चुपचाप छोटे मिलिट्री विमान सी-32ए तक पहुंचाया गया। पहले बड़े विमान में बैठे, फिर चुपचाप बाहर निकले-ट्रम्प 8 जुलाई को नाटो समिट में शामिल होने के लिए तुर्किये की राजधानी अंकारा पहुंचे थे। वे कतर से मिले नए बोइंग 747-8 विमान से वहां गए थे। वापसी के समय ट्रम्प ने कहा कि वे पुराने, हल्के नीले रंग के एयरफोर्स वन से

ब्रिटेन जाएंगे। वे कैमरों के सामने इसी विमान में सवार भी हुए। ट्रम्प ने इसकी वजह बताते हुए कहा था कि वे पुराने समय की याद में इस विमान से सफर करेंगे। नया कतर वाला विमान भी ब्रिटेन वे आरएएफ मिल्डेनहॉल एयरबेस गया था। सामान वाली गाड़ी से दूसरे विमान तक पहुंचे-वॉशिंगटन पोस्ट के मुताबिक, ट्रम्प के पुराने एयरफोर्स वन में चढ़ने के कुछ देर बाद एक कैटरिंग गाड़ी वहां पहुंची। ऐसी गाड़ियां आमतौर पर विमान में खाना और जरूरी सामान पहुंचाने के लिए इस्तेमाल होती हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, इसी गाड़ी से ट्रम्प को चुपचाप एयरपोर्ट पर खड़े एक छोटे मिलिट्री विमान सी-32ए तक ले जाया गया। यह बोइंग 757 का मिलिट्री विमान है। वॉशिंगटन पोस्ट को मिले वीडियो में भी कैटरिंग गाड़ी को पुराने एयरफोर्स वन के पास से निकलकर छोटे विमान की तरफ जाते देखा जा सकता है। इसके बाद सी-32ए ट्रम्प को लेकर ब्रिटेन के लिए रवाना हो गया। मीडिया को भी नहीं पता था कि ट्रम्प दूसरे विमान में हैं-पुराने एयरफोर्स वन में बैठे पत्रकारों को लगा कि ट्रम्प भी इसी विमान में सफर कर रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, **आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

अमेरिकी कोर्ट से अडाणी का केस खारिज, 2 साल पहले दर्ज हुआ था केस, भारतीय अधिकारियों को रिश्वत देने, अमेरिकी निवेशकों से धोखाधड़ी के थे आरोप

न्यूयॉर्क। अमेरिकी अदालत ने सोमवार को गौतम अडाणी के खिलाफ चल रहा रिश्वत और धोखाधड़ी का केस खारिज कर दिया। ब्रुकलिन की अमेरिकी

जिला अदालत के जज निकोलस गारौफिस ने केस खत्म करने की अमेरिकी न्याय विभाग की मांग मंजूर कर ली। गौतम अडाणी पर 2024 में भारतीय सरकारी अधिकारियों को रिश्वत देने पर सहमति जताने का आरोप लगा था। यह भी कहा गया कि रिश्वत के जरिए अडाणी ग्रुप की एक कंपनी को सोलर एनर्जी प्लांट का ठेका दिलाने की कोशिश की गई। अडाणी ग्रुप ने इन आरोपों को लगातार खारिज किया था। अदालत का फैसला आने के बाद गौतम अडाणी ने एक्स पर पोस्ट किया। उन्होंने कहा, 'मैं न्यायिक प्रक्रिया के प्रति विनम्रता और गहरे सम्मान के साथ अमेरिकी अदालत के फैसले का स्वागत करता हूं।' अडाणी ने समझौते की जानकारी से इनकार किया-मामला भारत में रिश्वत और सोलर पावर के ठेके से जुड़ा था, लेकिन इसमें अमेरिकी निवेशकों का पैसा भी लगा था। अडाणी ग्रीन एनर्जी ने सितंबर 2021 में 75 करोड़ डॉलर के बॉन्ड जारी किए थे। इनमें करीब 17.5 करोड़ डॉलर अमेरिकी निवेशकों ने लगाए थे। अमेरिकी जांच के मुताबिक, कंपनी ने इन निवेशकों को यह पूरी जानकारी नहीं दी कि रिश्वत से जुड़े क्या जोखिम है और उन्हें रोकने के लिए कंपनी ने क्या इंतजाम किए हैं।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

कोलंबिया में भूकंप से 132 लोगों की मौत,86 इमारतें गिरीं,570 घायल,1500 से ज्यादा घरों को नुकसान

कोलंबिया। साउथ अमेरिकी देश कोलंबिया में सोमवार रात आए 7.4 तीव्रता के भूकंप से अब तक

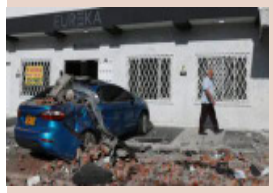

132 लोगों की मौत हो गई है। इसके अलावा 570 लोगों के घायल होने की खबर है। अधिकारियों के मुताबिक, देशभर में 86 इमारतें ढह गईं, जबकि 1,500 से ज्यादा घरों को नुकसान पहुंचा है। 18 स्वास्थ्य केंद्रों और 52 स्कूलों को भी नुकसान हुआ है। इसके अलावा 7 एयरपोर्ट पर काम रोक दिया गया है। पांच शहरों में रेड अलर्ट जारी किया गया है। राष्ट्रपति ने इमरजेंसी कमेटी की बैठक बुलाकर राहत और बचाव अभियान की निगरानी शुरू कर दी है। परेरा में सबसे ज्यादा मौतें-परेरा शहर में अकेले 60 लोगों की मौत हुई है। करीब 5 लाख की आबादी वाला यह शहर भूकंप के केंद्र से 64 किलोमीटर से भी कम दूरी पर है। राजधानी बोगोटा समेत कई शहरों में भी तेज झटके महसूस किए गए। एहतियात के तौर पर लोग इमारतों से बाहर निकलकर सड़कों पर आ गए। चोको और रिसाराल्डा में भारी नुकसान-अमेरिकी भूगर्भीय सर्वेक्षण (यूएसजीएस) के मुताबिक, भूकंप सोमवार सुबह करीब 7:34 बजे आया। इसका केंद्र चोको इलाके में सैन जोसे डेल पालमार के पास था। भूकंप की गहराई 107 किलोमीटर थी। बोगोटा से 100 रेस्क्यूकर्मी भेजे जाएंगे-बोगोटा के मेयर ने प्रभावित इलाकों के लिए 6 कलेक्शन सेंटर बनाए हैं। यहां पानी, कंबल, पैक्ड खाना, हाइजीन सामान और फर्स्ट-एड किट जमा की जा रही हैं। प्रभावित शहरों में राहत और बचाव अभियान के लिए बोगोटा से 100 रेस्क्यूकर्मियों को भेजने की तैयारी है। कोलंबिया में ज्यादा भूकंप क्यों आते हैं-कोलंबिया दुनिया के सबसे ज्यादा भूकंप प्रभावित देशों में से एक है। यहां हर साल हजार से ज्यादा छोटे-बड़े भूकंप आते हैं। कोलंबिया में बार-बार भूकंप आने की सबसे बड़ी वजह इसकी भौगोलिक स्थिति है। यह देश 'रिंग ऑफ फायर' नाम के भूकंप और ज्वालामुखी वाले क्षेत्र में आता है। यहां नाजका, कोकोस और दक्षिण अमेरिकी जैसी कई बड़ी टेक्टोनिक प्लेटें आपस में टकराती हैं। इनमें से एक प्लेट दूसरी के नीचे धंसती रहती है। इसी वजह से जमीन के अंदर लगातार हलचल होती रहती है, जिससे अक्सर तेज भूकंप और ज्वालामुखी विस्फोट होते हैं।

मोहम्मद बिन सलमान-सुधारों, कूटनीति से सल्तनत का चेहरा बदलते एमबीएस

दुबई। सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान इन दिनों

सक्रिय कूटनीति को लेकर चर्चा में हैं। जुलाई में अमेरिका से परमाणु समझौते और 7 अगस्त को सऊदी, पाकिस्तान व तुर्किये के रक्षा करार में उनकी सक्रियता दिखी है। राजनेता को कई चेहरे लगाकर राजकाज चलाना पड़ता है। सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान (एमबीएस) इसका उदाहरण हैं। एक तरफ वे सऊदी समाज में बदलाव और आधुनिकता लाने की कोशिश करते हैं तो दूसरी तरफ सत्ता पर पकड़ मजबूत रखने के लिए सख्त फैसलों को लेकर चर्चा में रहते हैं। जनवरी 2015 में किंग सलमान बिन अब्दुल अजीज अल सऊद के सत्ता संभालने के बाद एमबीएस को अहम जिम्मेदारियां मिलीं। इसके बाद वे तेजी से सत्ता के केंद्र में पहुंचे। आज 41 साल की उम्र में वे देश के सबसे प्रभावशाली नेताओं में शामिल हैं। हाल के दिनों में अमेरिका के साथ परमाणु समझौते और पाकिस्तान-तुर्किये के साथ रक्षा गठजोड़ ने उनकी सक्रिय कूटनीति को फिर चर्चा में ला दिया है। इन कदमों के जरिए वे एक तरफ ईरान जैसे क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्वी का मुकाबला करना चाहते हैं तो दूसरी तरफ चीन, रूस और अमेरिका के बीच संतुलन साधते नजर आते हैं। एमबीएस ने सत्ता में आने के बाद सामाजिक बदलावों पर भी जोर दिया। धार्मिक पुलिस के अधिकार सीमित किए गए। महिलाओं को लेकर कई पुरानी पाबंदियां हटाई गईं। स्कूलों में लड़कियों के खेलने पर लगी रोक खत्म हुई और करीब 40 साल बाद 2018 में देश में सिनेमा फिर शुरू हुआ। 2019 में महिलाओं को पुरुष अभिभावक के बिना यात्रा और काम करने की ज्यादा स्वतंत्रता मिली। विश्व बैंक के अनुसार 2025 में सऊदी अरब की लेबर फोर्स में महिलाओं की हिस्सेदारी करीब 35फीसदी थी। आर्थिक मोर्चे पर एमबीएस ने तेल पर निर्भरता घटाने के लिए महत्वाकांक्षी योजनाएं शुरू कीं। निओम का हाईटेक शहर, लाल सागर के पर्यटन प्रोजेक्ट और खेलों को बढ़ावा देना इसी रणनीति का हिस्सा हैं। रियाद में 2024 में ई-स्पोर्ट्स वर्ल्ड कप हुआ। सऊदी अरब 2030 में एक्सपो और 2034 में फुटबॉल विश्व कप की मेजबानी की तैयारी भी कर रहा है। हालांकि एमबीएस का दूसरा चेहरा विवादों से जुड़ा है। सत्ता मजबूत करने के दौरान उनके कई रिश्तेदारों और विरोधियों पर कार्रवाई हुई। पत्रकार जमाल खाशोगी की 2018 में हत्या के मामले में भी उन पर गंभीर आरोप लगे। मानवाधिकार संगठनों ने सऊदी सरकार की आलोचना की है। एमबीएस की निजी छवि भी पारंपरिक सऊदी शासकों से अलग है। उन्हें वीडियो गेम, फॉर्मूला-1 और मोटरसाइकिलों में दिलचस्पी है। वे आम लोगों के साथ सेल्फी लेते भी नजर आते हैं। हालांकि, एक दशक से अधिक समय से सत्ता के केंद्र में रहने के बावजूद सऊदी अरब की अर्थव्यवस्था अब भी तेल पर काफी निर्भर है। यही उनकी महत्वाकांक्षी योजनाओं के सामने सबसे बड़ी चुनौती है।

सीरिया के पूर्व राष्ट्रपति असद को फांसी की सजा,लाखों लोगों की मौत का जिम्मेदार ठहराया गया; ममेरे भाई को पिंजरे में कोर्ट लाया गया

दमिश्क। सीरिया की एक अदालत ने मंगलवार को देश के पूर्व राष्ट्रपति बशर अल-असद और उनके छोटे भाई माहेर अल-

असद को फांसी की सजा सुनाई। दोनों को गृहयुद्ध के दौरान लाखों लोगों की हत्या और अत्याचार के मामलों में दोषी ठहराया गया। इसी मामले में बशर अल-असद के मामा के बेटे अतीफ नजीब को भी फांसी की सजा सुनाई गई। बशर और माहेर दिसंबर 2024 में सरकार गिरने के बाद रूस भाग गए थे। पुतिन सरकार ने उन्हें शरण दी हुई है। दोनों की गैरमौजूदगी में सजा सुनाई गई। अतीफ नजीब को जनवरी 2025 में गिरफ्तार किया गया था। उन्हें मंगलवार को कैदी की वर्दी पहनाकर पिंजरे में कोर्ट लाया गया। अतीफ के आदेश के बाद सीरिया में गृहयुद्ध भड़का-अतीफ नजीब सीरियाई सेना में ब्रिगेडियर जनरल रह चुके हैं। 2011 में वे दारा प्रांत में राजनीतिक सुरक्षा शाखा के प्रमुख थे। वह असद सरकार के सबसे बड़े अधिकारियों में से एक हैं, जिन पर अदालत में मुकदमा चला। अतीफ पर आरोप है कि उन्होंने प्रदर्शनकारियों से सख्ती से निपटने का आदेश दिया था। आदेश के बाद सीरिया में विरोध प्रदर्शन और उग्र हो गया।

यह 14 साल तक चलता रहा। इस गृहयुद्ध में करीब 5 लाख लोगों की मौत हुई। कैसे शुरू हुआ सीरिया का गृहयुद्ध? सीरिया में गृहयुद्ध मार्च 2011 में दारा शहर से शुरू हुआ था। कुछ स्कूली बच्चों ने दीवार पर सरकार के खिलाफ नारे लिख दिए थे। बच्चों को बुरी तरह पीटा गया। उन्हें बिजली के झटके दिए गए और दूसरी तरह की यातनाएं भी दी गईं। इससे नाराज होकर लोग सड़कों पर उतर आए। शुरुआत में प्रदर्शन शांतिपूर्ण थे, लेकिन सरकार ने बल प्रयोग किया। कई लोग मारे गए और हजारों गिरफ्तार किए गए। इसके बाद कुछ प्रदर्शनकारियों ने हथियार उठा लिए और देश गृहयुद्ध की चपेट में आ गया। यह लड़ाई करीब 14 साल चली। इसमें करीब 5 लाख लोगों की मौत हुई, जबकि करोड़ों लोग अपना घर छोड़ने पर मजबूर हो गए। रूस और ईरान ने असद सरकार का साथ दिया, जबकि तुर्किये, अमेरिका और कई दूसरे देशों ने अलग-अलग विद्रोही गुटों का समर्थन किया।

दिसंबर 2024 में 53 साल पुराना राज खत्म हुआ-यह बशर अल-असद के खिलाफ किसी आपराधिक मामले में आया पहला फैसला है। दिसंबर 2024 में विद्रोहियों ने दमिश्क पर कब्जा कर उनकी सरकार गिरा दी थी। इसके साथ ही 1971 से सीरिया पर शासन कर रहे असद परिवार का 53 साल पुराना राज भी खत्म हो गया था।

सरकार गिरने से ठीक पहले बशर अल-असद ने देश छोड़ दिया था। इसके बाद सीरिया पर विद्रोही नेता अहमद अल-शरा का कब्जा हो गया।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

डोनाल्ड ट्रम्प की मीडिया कंपनी को 2200 करोड़ रुपए का घाटा,3 महीने में सिर्फ 16 करोड़ की कमाई

वॉशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की मीडिया कंपनी ट्रम्प मीडिया एंड टेक्नोलॉजी ग्रुप (टीएमटीजी) को अप्रैल-जून

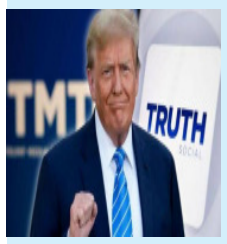

2026 में 2,261 करोड़ रुपए का घाटा हुआ। इस दौरान कंपनी की कुल कमाई सिर्फ 16.15 करोड़ रुपए रही। जनवरी से जून 2026 के बीच टीएमटीजी का कुल नेट लॉस 6,118 करोड़ रुपए रहा। इस दौरान कंपनी की कुल कमाई सिर्फ 23.75 करोड़ रुपए थी। यानी छह महीने में कंपनी का घाटा उसकी कुल कमाई से करीब 258 गुना रहा। कंपनी ने अमेरिकी सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज कमीशन (एसईसी) को दी रिपोर्ट में बताया कि तीन महीने का घाटा पिछले साल की इसी अवधि के मुकाबले काफी बढ़ा है। डिजिटल एसेट्स से 1,800 करोड़ का नुकसान-टीएमटीजी के घाटे की सबसे बड़ी वजह डिजिटल एसेट्स और शेयरों की कीमत में गिरावट रही। इनकी वैल्यू घटने से कंपनी ने करीब 1,809 करोड़ रुपए का नुकसान दर्ज किया। इसके अलावा 111 करोड़ रुपए ब्याज और 77 करोड़ रुपए शेयर आधारित भुगतान का खर्च आया। वहीं, कंपनी की कमाई बेहद कम रही। अप्रैल-जून में करीब 13.6 करोड़ रुपए विज्ञापन और 1.7 करोड़ रुपए सब्सक्रिप्शन से मिले। टीएमटीजी का मुख्य प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल है। इसके अलावा कंपनी ट्रुथ प्लस वीडियो स्ट्रीमिंग और ट्रुथ एफआई फिनटेक कारोबार चलाती है। पिछले एक साल में कंपनी ने क्रिप्टोकरेंसी कारोबार में भी विस्तार किया है। ट्रुथ सोशल की विजिट एक तिहाई से ज्यादा घटी-ट्रम्प ने 2022 में ट्रुथ सोशल शुरू किया था। यह उनका अपना सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है। लेकिन यह एक्स और फेसबुक जितना बड़ा नहीं बन पाया है। न्यूयॉर्क टाइम्स ने ऑनलाइन आंकड़े जुटाने वाली कंपनी सिमिलरवेब की रिपोर्ट के हवाले से बताया कि जुलाई 2026 में ट्रुथ सोशल की वेबसाइट पर आने वाले लोगों की संख्या पिछले साल के मुकाबले एक तिहाई से ज्यादा घट गई। टीएमटीजी के शेयर अमेरिकी शेयर बाजार नैस्डैक पर डिजेटी नाम से बिकते और खरीदे जाते हैं। कंपनी के खराब नतीजे सामने आने के बाद सोमवार को इसके शेयर करीब 8फीसदी गिर गए।

ट्रम्प की पोस्ट जल्दी पाने के लिए कंपनियां दे रही हैं लाखों रुपए-टीएमटीजी ने 1 अगस्त से ट्रुथ एपीआई नाम की सर्विस शुरू की है।

आसान भाषा में समझें तो यह कंपनियों को ट्रम्प की ट्रुथ सोशल पोस्ट सीधे और जल्दी पहुंचाने का काम करती है। कंपनी के अंतरिम सीईओ केविन मैकगर्नर के मुताबिक, अब तक 10 कंपनियां यह सर्विस ले चुकी हैं। इसके लिए वे हर महीने करीब 57 लाख से 95 लाख रुपए तक दे रही हैं।

चीन बोला- भारत का अरुणाचल का मैप जारी करना गलत, इससे हमारी बात नहीं बदलेगी, भारत ने 4 दिन पहले नक्शा जारी किया था

नयी दिल्ली। चीन ने सोमवार को कहा कि भारत का अरुणाचल प्रदेश की 27 जगहों को अपने मैप पर दिखाना गलत है। चीन ने इसे 'अमान्य' करार

दिया है।चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता गुओ जियाकुन ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि चीन भारत की ओर से बनाए गए अरुणाचल प्रदेश के मैप को मान्यता नहीं देता। केंद्र सरकार ने शुक्रवार को अरुणाचल प्रदेश की 27 जगहों और उनकी भौगोलिक विशेषताओं को आधिकारिक नक्शे पर दर्ज किया था। यह कदम चीन की ओर से राज्य की जगहों के नाम बदलने की कोशिशों के बीच उठाया गया है। गृह मंत्रालय के मुताबिक, यह काम अरुणाचल प्रदेश सरकार से सलाह लेकर किया गया है। इसका मकसद इन जगहों की सही पहचान बताना और आम लोगों में जागरूकता बढ़ाना है। सरकार ने ऐसा क्यों किया-इन नामों को आधिकारिक मानचित्रों में शामिल करने का मकसद प्रशासन को बेहतर बनाना है। इससे सरकारी रिकॉर्ड में एकरूपता आएगी, अलग-अलग विभागों के बीच बेहतर तालमेल होगा और आपदा के समय मदद पहुंचाने में आसानी होगी। हालांकि, अभी यह साफ नहीं है कि इन नामों के आधार पर लोगों के पासपोर्ट या दूसरे निजी दस्तावेजों में कोई बदलाव किया जाएगा। सरकार का मुख्य उद्देश्य इन क्षेत्रों की आधिकारिक पहचान तय करना और भारत के प्रशासनिक रिकॉर्ड में उन्हें शामिल करना है। चीन अरुणाचल की जगहों के नाम जारी करता रहा है-चीन ने कई बार अरुणाचल प्रदेश की जगहों के चीनी नामों की सूची जारी करता रहा है। वह अरुणाचल प्रदेश को जांगनान कहता है। भारत ने चीन की इन कोशिशों को लगातार खारिज किया है। भारत का कहना है कि इनका भारत की राज्य पर संप्रभुता पर कोई असर नहीं पड़ता।

हूती विद्रोहियों ने सऊदी के जहाज पर मिसाइल से किया हमला,2 पाकिस्तानी समेत 3 की मौत, लाल सागर में अब तक 8 जहाजों को निशाना बनाया गया

अल-मंदेब स्ट्रेट। यमन के हूती विद्रोहियों ने मंगलवार को बाब अल-मंदेब स्ट्रेट में सऊदी जहाज पर मिसाइल हमला किया। मीडिया रिपोर्ट्स के

मुताबिक, इसमें 3 क्रू मेंबर मारे गए। इनमें 2 पाकिस्तानी और 1 इंडोनेशियाई नागरिक था। रिपोर्ट्स के मुताबिक, तंजानिया के झंडे वाले इस जहाज का नाम 'तिहामा' था। यह ओमान के सलालाह पोर्ट से जिबूती जा रहा था। हूती विद्रोहियों ने 20 जुलाई को सऊदी जहाजों की नाकाबंदी शुरू की थी। इसके बाद से वे रेड सी में सऊदी से जुड़े 8 जहाजों पर हमला कर चुके है। इनमें एनसिलिया, लायला, गजल और वफा जैसे जहाज शामिल हैं। होर्मुज के बाद बाब अल-मंदेब में भी खतरा बढ़ा-यह हमला ऐसे समय हुआ है, जब होर्मुज स्ट्रेट बंद होने से समुद्री कारोबार पहले ही दबाव में है। अब बाब अल-मंदेब में भी जहाजों पर हमले बढ़ रहे हैं। इससे शिपिंग कंपनियों की परेशानी और बढ़ गई है। हूती विद्रोही रेड सी से गुजरने वाले जहाजों को निशाना बना रहे हैं। रॉयटर्स के मुताबिक सऊदी जहाजों पर हूतियों के हमलों में यह पहली बार है, जब किसी की मौत हुई है। हूतियों के हमलों का असर सऊदी अरब के तेल निर्यात पर भी पड़ा है। समुद्र में जहाजों की आवाजाही कम हुई है। सुरक्षा के डर से कई जहाज रेड सी और स्वेज नहर के रास्ते से बच रहे हैं। बाब अल-मंदेब से गुजरने वाले जहाज घटे-केप्लर के आंकड़ों के मुताबिक, पिछले हफ्ते बाब अल-मंदेब से रोज औसतन 32 जहाज गुजरे। पहले यहां रोज करीब 50 जहाज गुजरते थे। यानी अब इस रास्ते से करीब 18 जहाज कम गुजर रहे हैं।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

मोहसिन रेजाई बने ईरान के नए सिक्योरिटी चीफ-होर्मुज को कहा था परमाणु बम से भी कीमती

तेहरान। अमेरिका से टकराव और खाड़ी देशों के साथ तनाव के बीच ईरान ने देश की शीर्ष सुरक्षा संस्था सुप्रीम नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल के प्रमुख पद पर नई नियुक्ति की है। यह संस्था देश की सुरक्षा और विदेश नीति में अहम भूमिका निभाती है। तेहरान ने इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स के पूर्व कमांडर-इन-चीफ मोहसिन रेजाई को देश का नया सिक्योरिटी चीफ बनाया है। वे बाकर जोरगाद्र की जगह लेंगे। रेजाई को ईरान के कट्टरपंथी जनरलों में शुमार किया जाता है,

पाकिस्तानी आर्मी ने एलएसी पर 400 तोपें क्यों भेजी? भारतीय सेना के डीजीएमओ ने पाकिस्तान को धो डाला, बड़ा दावा

इस्लामाबाद। नयी दिल्ली। पिछले हफ्ते भारत और पाकिस्तान के डीजीएमओ स्तर पर हुई बातचीत के दौरान दोनों तरफ के सैन्य अधिकारियों के बीच तीखी बहसबाजी होने का दावा किया गया है। पाकिस्तानी सेना के पूर्व अधिकारी मेजर आदिल रजा ने दावा किया है कि डीजीएमओ स्तर पर हुई बातचीत के दौरान भारतीय डीजीएमओ ने पाकिस्तानी अधिकारी से एलएसी पर करीब 400 तोपें भेजने की वजह पूछा। (रिपोर्ट्स में 250 चीनी मूल के एसएच-15 तोप भेजे जाने का दावा)। इसपर पाकिस्तानी डीजीएमओ ने पहले रूटीन तैनाती बताया लेकिन बाद में उन्होंने कहा कि 'एहतियात बरतने के लिए तोपों की तैनाती की गई हैं।' आधुनिक समाचार इस दावे की पुष्टि नहीं करता है। लेकिन मेजर आदिल रजा ने अपने यूट्यूब चैनल पर विश्वसनीय सूत्रों के हवाले से ऐसी बातचीत होने का दावा किया है। आपको बता दें कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद से करीब करीब हर हफ्ते भारत और पाकिस्तानी सेना के बीच डायरेक्टर जनरल ऑफ मिलिट्री ऑपरेशन (डीजीएमओ) के बीच बातचीत होती है ताकि तनाव को कंट्रोल किया जा सके। भारतीय डीजीएमओ ने पाकिस्तानी सेना से पूछे तीखे सवाल-पाकिस्तानी सेना के डीजीएमओ अभी कासिफ अब्दुल्ला हैं जो मेजर जनरल रैंक के अधिकारी हैं। वहीं भारतीय डीजीएमओ लेफ्टिनेंट जनरल अभिजीत एस. पेंढारकर हैं।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

पुलिस उपायुक्त नगर द्वारा दिनांक-11.08.2026 को पुलिस कार्यालय में जनसुनवाई कर फरियादियों की शिकायतें सुनी गयीं तथा उनके समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

पोस्टमास्टर जनरल एवं वरिष्ठ साहित्यकार कृष्ण कुमार यादव के जन्मदिन पर स्वदेशी समाज सेवा समिति ने किया वृक्षारोपण कार्यक्रम

जन्मदिन व वर्षगांठ जैसे महत्वपूर्ण दिनों पर वृक्षारोपण कर दी जा सकती है समाज को नई दिशा- पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) पोरबंदर ,भारतीय परंपरा में पेड़-

पौधों को परमात्मा का प्रतीक मान कर उनकी पूजा का विधान बनाया गया है। हमारी साँसें

चलती रहें, इसके लिए ऑक्सीजन बेहद जरुरी है। पर्यावरण की रक्षा के लिए जरुरी है कि हम इसे अपनी दिनचर्या में शामिल करने के साथ पौधारोपण को जीवन के विभिन्न महत्वपूर्ण दिनों से जोड़ें। ऐसे में जन्मदिन व विवाह वर्षगांठ जैसे जीवन के महत्वपूर्ण दिनों को विशेष बनाने के लिए पौधारोपण कर समाज को नई दिशा दी जा सकती है। उक्त संदेश वरिष्ठ ब्लॉगर, साहित्यकार, लोकप्रिय प्रशासक एवं सम्प्रति उत्तर गुजरात परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने स्वदेशी समाज सेवा समिति द्वारा अपने 49वें जन्मदिन पर अहमदाबाद में आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में दिया। स्वदेशी समाज सेवा समिति के संस्थापक सचिव विवेक यादव 'रुद्राक्ष मैन' ने श्री यादव को रुद्राक्ष का पौधा भेंट कर उनके सुखद एवं स्वस्थ जीवन की कामना की। स्वदेशी समाज सेवा समिति के तत्त्वावधान में अहमदाबाद में आयोजित उक्त कार्यक्रम में श्री कृष्ण कुमार यादव, पोस्टमास्टर जनरल के 49 वें जन्मदिन पर 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत रुद्राक्ष, गुलमोहर,

अमलतास, अशोक, तुलसी, नीम, आम, आंवला, तेजपत्ता, दालचीनी, पान, सिंगोनियम, रजनीगन्धा, गंधराज इत्यादि के फलदार, औषधीय, छायादार वृक्षों, बेल व पुष्प सहित 49 पौधों का रोपण कर धरा को हराभरा एवं पर्यावरण को शुद्ध बनाने का संकल्प लिया गया। स्वदेशी समाज सेवा समिति के संस्थापक सचिव विवेक यादव 'रुद्राक्ष मैन' ने कहा कि सम्पूर्ण धरा और प्रकृति को सुरक्षित व संतुलित रखने हेतु हमें पौधारोपण के प्रति लोगों को सजग बनाना होगा। स्वदेशी समाज सेवा समिति के संकल्पों से जुड़कर सेवा, संस्कार एवं पर्यावरण रक्षा के इस यज्ञ में लोगों से अपनी आहुति देने का आह्वान भी किया। इस अवसर पर अहमदाबाद मंडल के वरिष्ठ डाक अधीक्षक श्री शिशिर कुमार ने कहा कि, वृक्षारोपण पर्यावरण संरक्षण, ग्लोबल वार्मिंग को कम करने और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित भविष्य का निर्माण करने का सबसे प्रभावी जरिया है। रघुनाथ हिंदी हायर सेकेंडरी स्कूल के प्रिंसिपल श्री महेंद्र डी. यादव ने कहा, यह जीवन परमात्मा का उपहार है, सेवा ही सबसे बड़ी उपासना है और प्रकृति की रक्षा ही आज का सबसे बड़ा धर्म है। सहायक निदेशक श्री अल्पेश शाह ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में जब वन क्षेत्र का निरंतर ह्रास होता जा रहा है तब संपूर्ण समाज को इस तरह के आयोजनों से सीख लेने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर सहायक निदेशक श्री रितुल गाँधी, वारिस व्होरा, सहायक अधीक्षक बिरंग शाह, जिनेश पटेल, रमेश पटेल, रोनक शाह, विशाल चौहान, सुभाष, जीबी कटारिया सहित तमाम पर्यावरण प्रेमियों ने पौधारोपण में अपना योगदान दिया।

डीएम की अध्यक्षता में सीएम डैशबोर्ड पर विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा बैठक सम्पन्न,विकास कार्यों में तेजी लाने, योजनाओं की प्रगति में सुधार तथा विभागीय लक्ष्य समयबद्ध ढंग से पूर्ण करने के दिए गए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी

सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में सीएम डैशबोर्ड (विकास कार्यों से संबंधित) पर विभिन्न विभागों की योजनाओं एवं विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने विभागवार योजनाओं की प्रगति, निर्धारित लक्ष्यों के सापेक्ष उपलब्धियों तथा सीएम डैशबोर्ड पर विभागों की रैंकिंग एवं प्रदर्शन की विस्तृत समीक्षा की। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि शासन की प्राथमिकता वाली योजनाओं एवं विकास कार्यों का समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि सीएम डैशबोर्ड पर प्रदर्शित आंकड़ों को केवल रैंकिंग के दृष्टिकोण से न देखा जाए, बल्कि योजनाओं के वास्तविक धरातलीय प्रभाव को सुनिश्चित करने पर विशेष ध्यान दिया जाए। उन्होंने विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिन योजनाओं में अपेक्षित प्रगति नहीं हुई है, उनमें कारणों की समीक्षा कर तत्काल सुधारात्मक कार्यवाही की जाए। निर्धारित लक्ष्यों को समय से पूरा करने के साथ ही योजनाओं का लाभ

पात्र लाभार्थियों तक पारदर्शी एवं प्रभावी ढंग से पहुंचाया जाए। जिलाधिकारी ने कहा कि विकास कार्यों की प्रगति में किसी भी स्तर पर अनावश्यक विलंब स्वीकार नहीं किया जाएगा। सभी अधिकारी अपने-अपने विभागों की योजनाओं की नियमित समीक्षा करते हुए लंबित कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण कराएं। साथ ही, सीएम डैशबोर्ड पर फीड किए जाने वाले आंकड़ों एवं सूचनाओं की शुद्धता, अद्यतन स्थिति एवं प्रमाणिकता का विशेष ध्यान रखा जाए। बैठक में विभिन्न विभागों द्वारा संचालित योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने अधिकारियों से उनके विभाग से संबंधित कम प्रगति वाले बिंदुओं पर जानकारी प्राप्त की तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता, उपायुक्त श्रम रोजगार प्रमोद सिंह, परियोजना निदेशक डीआरडीए मुनेश चन्द्र, जिला विकास अधिकारी वर्षा सिंह, उप निदेशक कृषि हिमांशु पाण्डेय, उपायुक्त उद्योग परमहंस मौर्या, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी राहुल सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी आर.वी. सिंह सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

यूपी में पानी और जमीन पर दौड़ने वाला 'हनुमान रथ', कीमत- 3 करोड़, अंधेरे में देखने वाले कैमरे, पहली बार बाढ़ में इस्तेमाल होगा

लखनऊ। यूपी में पहली बार बाढ़ में फंसे लोगों को बचाने के लिए 'SHERP' रेस्क्यू व्हीकल का इस्तेमाल होगा। कई खूबियों से

लैस यह गाड़ी 360 डिग्री पर घूम जाती है। जमीन पर 40 किमी की रफ्तार से दौड़ सकती है। 5 किमी की रफ्तार से पानी पर चलती है। लगातार 40 घंटे तक बाढ़ में फंसे लोगों को बचाकर सुरक्षित जगह तक पहुंचा सकती है। इसको इस तरह से डिजाइन किया गया है कि एक बार में यह 8 से 9 लोगों को सुरक्षित जगह तक पहुंचा सके। 3 करोड़ कीमत की यह गाड़ी भाजपा विधायक प्रतीक भूषण सिंह ने गोंडा जिला प्रशासन को दी है। इसका नाम 'हनुमान रथ' रखा गया है।SHERP एक खास ऑल-टेरेन रेस्क्यू गाड़ी है। इसे ऐसे मुश्किल इलाकों में चलने के लिए बनाया गया है, जहां सामान्य गाड़ियां, ट्रैक्टर और नाव काम नहीं आतीं। बाढ़ के समय नाव सिर्फ गहरे पानी में चल सकती है। तेज बहाव, जलकुंभी या उथले पानी में फंस सकती है। वहीं, ट्रैक्टर और भारी वाहन कीचड़ या गहरे पानी में धंस जाते हैं। SHERP की खासियत है कि यह जमीन से सीधे पानी और फिर पानी से कीचड़ या दलदल में जा सकता है।

सीएम डैशबोर्ड की प्रदेश स्तरीय रैंकिंग में रायबरेली ने हासिल की 34वीं रैंक,राजस्व विभाग ने प्रदेश में 12वीं रैंक प्राप्त कर जनपद की उपलब्धि में जोड़ा नया आयाम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। सीएम डैशबोर्ड के अंतर्गत विभिन्न विकास एवं जनकल्याणकारी योजनाओं तथा शासकीय कार्यों में प्रदर्शित प्रगति के आधार पर जनपद रायबरेली ने विगत माह प्रदेश स्तरीय रैंकिंग में 34वीं रैंक हासिल की है। वहीं राजस्व विभाग द्वारा प्रदेश में 12वीं रैंक प्राप्त की गई है। यह उपलब्धि विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा योजनाओं एवं निर्धारित कार्यों के समयबद्ध निस्तारण तथा निरंतर प्रभावी अनुश्रवण के परिणामस्वरूप प्राप्त हुई है। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका द्वारा जनपद में संचालित शासकीय योजनाओं एवं विकास कार्यों की नियमित समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्धारित लक्ष्यों की समयबद्ध पूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए जाते रहे हैं। जिलाधिकारी के निर्देशों के अनुरूप राजस्व विभाग द्वारा लंबित प्रकरणों के समयबद्ध निस्तारण, योजनाओं की नियमित समीक्षा, निर्धारित लक्ष्यों की सतत निगरानी तथा विभागीय कार्यों में तेजी लाने के लिए निरंतर प्रयास किए गए, जिसके परिणामस्वरूप राजस्व विभाग ने प्रदेश स्तर पर 12वीं रैंक प्राप्त की है। जिलाधिकारी ने इस उपलब्धि पर संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि सीएम डैशबोर्ड शासन की प्राथमिकताओं एवं विभागीय कार्यों की प्रगति का महत्वपूर्ण माध्यम है। इसके माध्यम से विभिन्न विभागों के कार्यों की नियमित मॉनीटरिंग एवं समीक्षा की जा रही है।

युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या का प्रयास किया किन्तु 112 पुलिस की त्वरित कार्रवाई ने उसकी जान बचाई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) गौरीगंज/अमेठी। शनिवार रविवार की रात एक युवक ने

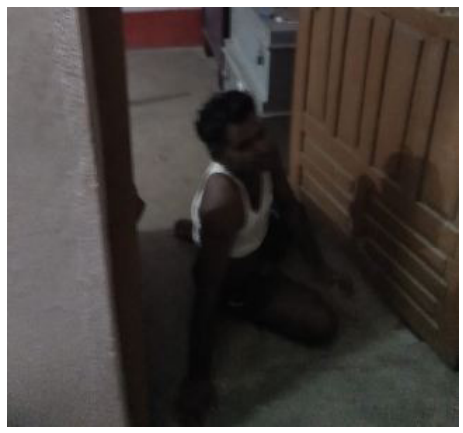

फांसी लगाकर अपनी आत्महत्या करने का असफल प्रयास किया किन्तु 112 पुलिस की त्वरित कार्रवाई से युवक की जान बच गयी। युवक को जिला अस्पताल से लखनऊ रिफर कर दिया गया है जहां उसे अब स्वस्थ बताया गया है।जानकारी के अनुसार यह घटना गौरीगंज के कटरालालगंज वार्ड संख्या आठ गौरीगंज निवासी रिटायर्ड प्रधानाध्यापक के पी सविता के घर की है।शनिवार की रात सौरभ उर्फ साहित्य सौरभ सिंह अपने किसी परिचित को ऊपर अपने कमरे में रोके हुए था और नीचे से उसके लिए खाना लेकर ऊपर गया इस पर उसके पिता को शंका हो गयी तो उसने अपनी पत्नी को ऊपर जाकर देखने को कहा। शिक्षक पत्नी ऊपर गयी और अपरिचित आदमी से बात कर नीचे उतर आई और अपने पति से अपरिचित के रुके होने की बात बताई। इस पर शिक्षक ने अपने पुत्र से अपरिचित व्यक्ति को घर से बाहर करने को कहा तो वह कहने लगा कि ऊपर कोई नहीं है।के पी सविता ने इस पर 112 पुलिस को सूचना दे दी। सूचना पर पुलिस आई लेकिन पुलिस को सूचना देने की भनक उसके पुत्र सौरभ को लग गयी तो वह अपरिचित व्यक्ति को लेकर पुलिस के आने के पहले घर से बाहर भाग गये। पुलिस पूछताछ कर वापस चली गई। कुछ देर बाद सौरभ फिर कमरे में आया और दरवाजे बंद कर अपनी मां को फोन पर सूचित किया कि आज मेरी अंतिम मुलाकात है। इस पर मां ने अपने पति से यह बात बताई तो किसी अनहोनी की आशंका वश फिर से 112 पुलिस को सूचना दी गई तो पुनः बिना समय गंवाये तुरंत पहुंच गई।नीचे स्थित आंगन में लगे लोहे के जालीनुमा ढक्कन को एक और पड़ोसी की सहायता से सीढ़ी लगाकर खोलकर पहुंची पुलिस ने युवक को दरवाजा खोलने के लिए आवाज लगाई लेकिन कोई उत्तर नहीं मिलने पर पुलिस ने दरवाजा तोड़ कर कमरे के अंदर पहुंच कर कुछ पल पहले ऊपर छत के पंखे पर अपनी गर्दन में फंसाये युवक (सौरभ) को उतार कर पुलिस ने उसकी जान बचाई। कुछ परेशानियां महसूस होने पर युवक को जिला अस्पताल ले जाया गया जहाँ से उसे लखनऊ रिफर कर दिया गया। लखनऊ में अब युवक अपने को स्वस्थ महसूस कर रहा है। लखनऊ रहने वाले रिश्तेदार ने उसके स्वास्थ्य की जानकारी दी है। वैसे युवक का चाल चलन व कार्य व्यवहार पिता की नजर में असंतोषजनक है। जिसके कारण पिता ने उसे 2022 ई में ही कागज पर बेदखल कर दिया था।पहले वह अपनी पत्नी के साथ लखनऊ में रहता था।इधर कुछ दिनों से उसकी मां द्वारा उसके लिए दरवाजा खोल देने से वह घर में रुकने लगा था। पिता के इस समय अस्वस्थ रहने के चलते वे इस बात का विरोध नहीं कर पाये और यह घटना घटित हो गयी। इस बात की जानकारी खुद युवक के पिता के पी सविता ने दी है। पिता ने संबंधित घटना की सूचना 10 अगस्त सोमवार को कोतवाली थाना गौरीगंज में दे दी है।

जैविक खेती को बढ़ावा देकर महिलाओं की आजीविका संवर्धन की दिशा में रायबरेली ने बढ़ाया कदम

गौशालाओं के गोबर से 15 स्वयं सहायता समूहों की 180 महिलाएं तैयार कर रहीं बायो कम्पोस्ट खाद,अब तक 250 से 300 टन बायो कम्पोस्ट का उत्पादन, किसानों को उपलब्ध कराने के लिए बिक्री केन्द्रों से किया गया समन्वय, डीएम सरनीत कौर ब्रोका की पहल से महिलाओं को मिला स्वरोजगार का नया अवसर, गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने पर जोर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका के निर्देशन एवं मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता के मार्गदर्शन में जनपद रायबरेली में 'जैविक खेती अपनाएं, स्वस्थ जीवन पाएं एवं विषमुक्त खेती, कर्जमुक्त किसान' की थीम के तहत जैविक खेती को बढ़ावा देने तथा स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं की आजीविका को सशक्त एवं स्थायी बनाने की दिशा में अभिनव पहल की जा रही है। उपायुक्त श्रम रोजगार प्रमोद सिंह ने बताया कि राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत विकास खण्ड अमावां, बछरावां, सलोन, डलमऊ, महराजगंज एवं डीह में संचालित गौशालाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए 15 स्वयं सहायता समूहों की 180 महिलाओं को बायो कम्पोस्ट खाद के उत्पादन से जोड़ा गया है। महिलाओं द्वारा गौशालाओं से प्राप्त गोबर का वैज्ञानिक एवं उपयोगी तरीके से प्रसंस्करण करते हुए जून 2026 से बायो कम्पोस्ट खाद का उत्पादन किया जा रहा है। बायो कम्पोस्ट के गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के साथ-साथ स्वयं सहायता समूहों को तकनीकी एवं विपणन संबंधी मार्गदर्शन उपलब्ध कराने के लिए एवरग्रीन ऑर्गेनिक कम्पनी, रायबरेली के साथ समूहों का अनुबंध कराया गया है। इसके माध्यम से महिलाओं को बायो कम्पोस्ट के उत्पादन, गुणवत्ता, पैकेजिंग एवं बाजार उपलब्धता से संबंधित आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा अब तक लगभग 250 से 300 टन बायो कम्पोस्ट खाद का उत्पादन किया जा चुका है। इससे महिलाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार एवं आय का नया स्रोत प्राप्त होने के साथ-साथ जैविक एवं पर्यावरण अनुकूल कृषि को भी बढ़ावा मिल रहा है। बायो कम्पोस्ट की बिक्री को बढ़ावा देने के लिए सहकारिता विभाग एवं कृषि विभाग द्वारा संचालित उर्वरक बिक्री केन्द्रों के साथ स्वयं सहायता समूहों का समन्वय एवं अनुबंध कराया गया है। इन बिक्री केन्द्रों के माध्यम से समूहों द्वारा उत्पादित बायो कम्पोस्ट को किसानों तक पहुंचाया जा रहा है।इसी क्रम में 30 जुलाई 2026 को पायलट प्रोजेक्ट के रूप में बी-पैक्स उतरपारा, विकास खण्ड राही में बायो कम्पोस्ट बिक्री कार्यशाला का शुभारम्भ किया गया। कार्यशाला में किसानों द्वारा 50 बोरी बायो कम्पोस्ट का क्रय किया गया। किसानों द्वारा बायो कम्पोस्ट की लगातार की जा रही

मांग से स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा उत्पादित जैविक खाद की उपयोगिता एवं स्वीकार्यता को बल मिला है।बायो कम्पोस्ट की किसानों द्वारा निरंतर की जा रही मांग को देखते हुए स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं से इसके उत्पादन में वृद्धि के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। उद्देश्य है कि अधिक से अधिक महिलाओं को इस गतिविधि से जोड़कर उनकी आजीविका में वृद्धि, नियमित आय एवं स्थायी स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएं।जिलाधिकारी के निर्देशानुसार बायो कम्पोस्ट के उत्पादन एवं बिक्री की गतिविधियों को और व्यापक रूप देने पर विशेष जोर दिया जा रहा है, ताकि स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ-साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान की जा सके। बायो कम्पोस्ट के उत्पादन से जहां स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को आजीविका का नया साधन उपलब्ध हो रहा है, वहीं गौशालाओं में उत्पन्न होने वाले गोबर का उपयोगी एवं वैज्ञानिक प्रबंधन भी सुनिश्चित हो रहा है। इससे गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाया जा रहा है। जनपद में संचालित अन्य गौशालाओं में भी बायो कम्पोस्ट खाद के उत्पादन की संभावनाओं को बढ़ाने तथा अधिक से अधिक स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को इस कार्य में नियोजित करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जा रहा है। जिलाधिकारी के मार्गदर्शन में संचालित यह पहल महिला सशक्तिकरण, जैविक खेती को बढ़ावा देने, गौशालाओं के बेहतर प्रबंधन, अपशिष्ट के सदुपयोग तथा ग्रामीण महिलाओं को स्थायी आजीविका से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं अनुकरणीय प्रयास है।

हज-2027 के लिए प्रशिक्षकों के चयन हेतु ऑनलाइन आवेदन 23 अगस्त तक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी महिमा ने बताया कि हज-2027 पर जाने वाले हज यात्रियों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए प्रशिक्षकों के चयन की प्रक्रिया शुरू कर

दी गई है। अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय एवं उत्तर प्रदेश राज्य हज समिति के निर्देशानुसार प्रशिक्षक पद के लिए ऑनलाइन आवेदन 11 अगस्त 2026 से शुरू हो गए हैं, जिसकी अंतिम तिथि 23 अगस्त 2026 निर्धारित की गई है। उन्होंने बताया कि इच्छुक अभ्यर्थी हज कमेटी ऑफ इंडिया की वेबसाइट https://hajcommittee.gov.in पर केवल ऑनलाइन आवेदन कर सकते

हैं। ऑफलाइन आवेदन स्वीकार नहीं किए जाएंगे। प्रशिक्षकों के चयन के लिए कम्प्यूटर बेस्ड परीक्षा (सीबीटी) 30 अगस्त 2026 को आयोजित होगी। सीबीटी में शॉर्टलिस्ट किए गए अभ्यर्थियों का साक्षात्कार 1 से 6 सितम्बर 2026 तक होगा। चयनित प्रशिक्षकों का दो दिवसीय प्रशिक्षण सितम्बर 2026 के अंतिम सप्ताह में मुंबई में संभावित है।प्रशिक्षक चयन के लिए 150 हज आवेदकों पर एक प्रशिक्षक का चयन किया जाएगा। अभ्यर्थी की न्यूनतम शैक्षिक योग्यता इंटरमीडिएट/12वीं पास या समकक्ष होनी चाहिए। स्नातक एवं सूचना तकनीकी का ज्ञान रखने वाले अभ्यर्थियों को साक्षात्कार में छह अतिरिक्त अंक दिए जाएंगे। प्रशिक्षक हेतु आयु 7 अगस्त 2026 को 25 से 60 वर्ष के मध्य होनी आवश्यक है। पुरुष एवं महिला प्रशिक्षकों का चयन पुरुष एवं महिला हज यात्रियों की संख्या के अनुपात में किया जाएगा। आवेदक के लिए पिछले पांच वर्षों में हज किया होना आवश्यक है। इसके प्रमाण के रूप में वीजा, पासपोर्ट के संबंधित पृष्ठ अथवा हज कमेटी द्वारा जारी प्रपत्र संलग्न करना होगा। अभ्यर्थी को हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी एवं स्थानीय भाषा बोलने-समझने में दक्ष होने के साथ मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ, कम्प्यूटर में निपुण तथा हज सुविधा एप से पूर्णतः परिचित होना चाहिए। चयन होने पर सरकारी चिकित्सक द्वारा जारी फिटनेस प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा। इसके अतिरिक्त आवेदक को हज के अरकानों की जानकारी, भीड़ अथवा समूह को संबोधित एवं नियंत्रित करने का अनुभव होना चाहिए। आवेदक के विरुद्ध किसी आपराधिक प्रकरण में कोई कार्यवाही लंबित नहीं होनी चाहिए, जिसके प्रमाण के लिए स्व-अभिप्रमाणित हलफनामा देना होगा। चयन सीबीटी में प्राप्त 100 अंकों तथा साक्षात्कार में प्राप्त 20 अंकों के संयुक्त अंकों की मेरिट के आधार पर किया जाएगा। सफल होने के लिए सीबीटी एवं साक्षात्कार में अलग-अलग न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य है।

सीबीटी में निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित 50 प्रश्न पूछे जाएंगे, जिसके लिए एक घंटे का समय दिया जाएगा। प्रत्येक प्रश्न दो अंक का होगा तथा प्रत्येक गलत उत्तर पर 0.50 अंक की कटौती की जाएगी।

2027 से पहले तेज हुई सियासी हलचल, शालिनी सिंह के नाम की चर्चा,नोएडा विधानसभा सीट से बृज भूषण शरण सिंह की पुत्री शालिनी सिंह की दावेदारी की चर्चा, टिकट को लेकर सियासी गलियारों में बढ़ी हलचल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नोएडा। वर्ष 2027 के विधानसभा चुनाव नजदीक आते ही नोएडा की सियासत में हलचल तेज होती नजर आ रही है। लखनऊ से लेकर नोएडा तक राजनीतिक गलियारों में संभावित प्रत्याशियों को लेकर चर्चाओं का दौर शुरू हो गया है। इसी बीच कैसरगंज के पूर्व सांसद बृज भूषण शरण सिंह की पुत्री शालिनी सिंह के नोएडा विधानसभा सीट से चुनाव लड़ने की संभावित दावेदारी को लेकर चर्चाएं तेज हो गई हैं। सूत्रों के मुताबिक, भारतीय जनता पार्टी में नोएडा विधानसभा सीट को लेकर संभावित प्रत्याशियों के नामों पर मंथन के बीच शालिनी सिंह का नाम भी चर्चा में है। हालांकि, पार्टी की ओर से अभी तक इस संबंध में कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है। शालिनी सिंह की दावेदारी की चर्चा ने बढ़ाई राजनीतिक गर्मी-शालिनी सिंह लंबे समय से नोएडा में सामाजिक गतिविधियों से जुड़ी रही हैं। उनके समर्थकों का मानना है कि क्षेत्र में सामाजिक कार्यों के चलते उन्हें स्थानीय स्तर पर समर्थन मिल सकता है। इसी आधार पर उनके नोएडा विधानसभा से चुनाव लड़ने की संभावनाओं को लेकर राजनीतिक चर्चाएं तेज हुई हैं। वहीं, बृज भूषण शरण सिंह से जुड़े चर्चित महिला पहलवान मामले में अदालत के फैसले के बाद भी राजनीतिक हलकों में उनके परिवार की भूमिका को लेकर चर्चाएं जारी हैं। वर्तमान विधायक को लेकर भी अटकलें-नोएडा विधानसभा सीट पर वर्तमान विधायक के टिकट को लेकर भी राजनीतिक चर्चाओं का दौर शुरू हो गया है। सूत्रों के हवाले से यह दावा किया जा रहा है कि आगामी विधानसभा चुनाव में पार्टी नए चेहरे पर दांव लगा सकती है। हालांकि, टिकट में बदलाव अथवा किसी नए प्रत्याशी को लेकर अभी तक भाजपा की ओर से कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। शालिनी सिंह मैदान में उतरीं तो दिलचस्प होगा मुकाबला-यदि भाजपा की ओर से शालिनी सिंह को नोएडा विधानसभा सीट से प्रत्याशी बनाया जाता है तो मुकाबला बेहद दिलचस्प होने की संभावना जताई जा रही है। नोएडा में भाजपा का मजबूत राजनीतिक आधार होने के बावजूद संभावित उम्मीदवारों को लेकर अभी से सियासी समीकरणों पर चर्चा शुरू हो गई है।

फिलहाल सभी की निगाहें भाजपा के शीर्ष नेतृत्व और आगामी चुनावी रणनीति पर टिकी हैं। टिकट को लेकर अंतिम फैसला पार्टी नेतृत्व द्वारा ही किया जाएगा। ऐसे में शालिनी सिंह की संभावित दावेदारी को लेकर चल रही चर्चाएं अभी राजनीतिक अटकलों तक सीमित हैं।

पंजाबी समाज रचेगा इतिहास-12 अगस्त को नोएडा में फेडरेशन ऑफ पंजाबी एसोसिएशन का होगा भव्य 'संकल्प' समारोह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नोएडा। पंजाबी समाज की एकता, सामाजिक शक्ति, सांस्कृतिक विरासत और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से फेडरेशन ऑफ पंजाबी एसोसिएशन द्वारा सेक्टर 51 स्थित शेवरॉन हॉल में बुधवार, 12 अगस्त 2026 को एक भव्य 'संकल्प' समारोह आयोजित किया जा रहा है। समारोह में देश के विभिन्न क्षेत्रों से पंजाबी समाज के प्रतिनिधियों के साथ-साथ अनेक वरिष्ठ जनप्रतिनिधि, सामाजिक एवं सार्वजनिक जीवन से जुड़े गणमान्य व्यक्तित्व विशेष रूप से शामिल होंगे।

विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति-संकल्प समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष सतीश महाना वहीं विशिष्ट अतिथियों में प्रमुख रूप से पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सांसद, गौतमबुद्ध नगर डॉ. महेश शर्मा, नोएडा विधायक पंकज सिंह, हरियाणा विधानसभा उपाध्यक्ष डॉ. कृष्ण मिड्ढा, पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री एवं वरिष्ठ सार्वजनिक व्यक्तित्व हर्ष मल्होत्रा वेव अतिरिक्त देश के विभिन्न राज्यों से पंजाबी समाज के अनेक प्रतिनिधि, सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी, उद्योग जगत के प्रतिनिधि, युवा एवं मातृशक्ति भी समारोह में भाग लेंगे।

फेडरेशन वेव राष्ट्रीय अध्यक्ष वीरेंद्र मेहता ने कहा कि संकल्प समारोह का उद्देश्य किसी व्यक्ति या संस्था को प्रतिस्थापित करना नहीं, बल्कि देशभर के पंजाबी समाज को एक साझा मंच पर लाना है, उन्होंने कहा कि पंजाबी समाज ने हमेशा देश को देने का काम किया है।

आज आवश्यकता है कि समाज की अलग-अलग संस्थाएं अपने छोटे-छोटे मतभेदों से ऊपर उठकर एक बड़े उद्देश्य के लिए एकजुट हों इसलिए अब समय मतभेदों का नहीं, समाज को एक मंच पर लाने का है। उन्होंने कहा कि फेडरेशन देशभर की पंजाबी संस्थाओं को जोड़कर यूनिटी - हेरिटेज - स्ट्रैंथ के सिद्धांत पर काम करेगा।उन्होंने कहा कि हमारा संकल्प अपने समाज को मजबूत करने का है। पंजाबी समाज की पहचान, संस्कृति, भाषा, विरासत और नई पीढ़ी को सुरक्षित रखना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। अगर हम आज एकजुट नहीं हुए तो आने वाली पीढ़ियां हमसे सवाल करेंगी कि जब समय था तब हमने क्या किया?' फेडरेशन के राष्ट्रीय महासचिव सुनील मेहता ने कहा कि संकल्प समारोह कि फेडरेशन का प्रयास रहेगा कि विभिन्न शहरों और राज्यों में सक्रिय पंजाबी संस्थाओं को एक साझा मंच मिले तथा सामाजिक सेवा, शिक्षा, स्वास्थ्य, युवा एवं महिला सशक्तिकरण जैसे क्षेत्रों में संयुक्त रूप से बड़े कार्य किए जाएं।

उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य संख्या बढ़ाना मात्र नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक शक्ति को सही दिशा देना है।

फेडरेशन वेव राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सुभाष जैन ने कहा कि किसी भी सामाजिक संगठन की वास्तविक ताकत उसकी सेवा भावना और पारदर्शी कार्यप्रणाली होती है।

उन्होंने कहा कि फेडरेशन आने वाले समय में जरूरतमंद परिवारों की सहायता, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सेवा और समाज के कमजोर वर्गों के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि समाज की एकता तभी सार्थक है जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। मातृशक्ति और युवा शक्ति की रहेगी विशेष भूमिका-संकल्प समारोह में फेडरेशन की मातृशक्ति और युवा वर्ग की सक्रिय भागीदारी भी विशेष आकर्षण वेव केंद्र रहेगी। फेडरेशन का मानना है कि पंजाबी समाज की सामाजिक शक्ति को मजबूत करने में महिलाओं और युवाओं की भूमिका निर्णायक है। मातृशक्ति के माध्यम से समाज की महिलाओं को सामाजिक सेवा, संस्कार, शिक्षा और सामुदायिक गतिविधियों से जोड़ने का अभियान भी आगे बढ़ाया जा रहा है।

संकल्प समारोह में लिया जाएगा सामाजिक एकता का संकल्प-समारोह वेव दौरान पंजाबी समाज की एकता, संस्कृति और विरासत को सुरक्षित रखने के साथ-साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, जरूरतमंदों की सहायता, महिला सशक्तिकरण, युवा सहभागिता और सामाजिक संस्थाओं के बीच समन्वय बढ़ाने का संकल्प लिया जाएगा। फेडरेशन वेव अध्यक्ष वीरेंद्र मेहता, महासचिव सुनील मेहता एवं कोषाध्यक्ष सुभाष जैन ने सभी पंजाबी संस्थाओं, समाज के गणमान्य नागरिकों, युवाओं एवं मातृशक्ति से इस ऐतिहासिक अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर एकता और सामाजिक संकल्प की इस मुहिम को मजबूत करने का आह्वान किया है।

देशभर से जुटेंगे पंजाबी समाज के प्रतिनिधि, जनप्रतिनिधि एव सामाजिक क्षेत्र के गणमान्य लोग

नोएडा के पीजी में असम की 19 वर्षीय महक अहमद की बेरहमी से हत्या, मुख्य संदिग्ध फरार

शराब के दौरान कहासुनी के बाद हत्या की आशंका, बंद कमरे से मिला लहूलुहान शव; पुलिस की कई टीमें आरोपी की तलाश में जुटीं

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नोएडा। सेक्टर-49 थाना क्षेत्र के बरौला गांव स्थित एक पीजी में 19 वर्षीय युवती की धारदार हथियार से हत्या किए जाने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। युवती का लहूलुहान शव उसी फ्लोर पर रहने वाले एक युवक के बंद कमरे से बरामद हुआ। घटना के बाद से कमरे में रहने वाला मुख्य संदिग्ध रमन फरार है। पुलिस ने हत्या का मुकदमा दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है। मृतका की पहचान महक अहमद (19) के रूप में हुई है, जो मूल रूप से डिब्रूगढ़, असम की रहने वाली थी। महक 12वीं पास थी और करीब तीन सप्ताह पहले अपने माता-पिता को बिना बताए नोएडा आई थी। वह बरौला गांव स्थित पीजी में अपनी 18 वर्षीय सहेली संजना के साथ पहली मंजिल पर रह रही थी। शराब के दौरान हुई थी कहासुनी-पुलिस की शुरुआती जांच के मुताबिक, 8 अगस्त की रात महक और उसकी सहेली लॉबी में टहल रही थीं। इसी दौरान उसी फ्लोर पर रहने वाला रमन कमरे के बाहर बैठकर शराब पी रहा था। किसी बात को लेकर दोनों पक्षों के बीच कहासुनी हुई थी। पुलिस इसी विवाद को हत्या की संभावित वजह मानकर जांच कर रही है।रमन मूल रूप से कटिहार, बिहार का रहने वाला बताया जा रहा है। वह बीटेक पास है और पूर्व में एक आईटी कंपनी में काम कर चुका है। फिलहाल वह बेरोजगार था। सहेली के लौटने पर गायब मिली महक-बताया गया कि 9 अगस्त को महक की सहेली संजना किसी काम से बाहर गई थी। वापस लौटने पर महक कमरे में नहीं मिली। उसका मोबाइल भी बंद था। संजना को लगा कि वह किसी काम से बाहर गई होगी। इसी बीच पीजी के अन्य किरायेदारों को रमन के कमरे से तेज दुर्गंध आने लगी। कमरे के बाहर ताला लगा हुआ था। किरायेदारों ने मामले की जानकारी मकान मालिक सार्थक बंसल को दी। इसके बाद पुलिस को सूचना दी गई। ताला तोड़ने पर कमरे में मिला शव-10 अगस्त को दोपहर करीब 12 बजे डायल-112 के माध्यम से पुलिस को घटना की सूचना मिली। पुलिस मौके पर पहुंची और कमरे का ताला तोड़कर अंदर दाखिल हुई। कमरे के भीतर महक का लहूलुहान शव पड़ा मिला। शुरुआती जांच में उसके शरीर पर धारदार हथियार से कई वार किए जाने की बात सामने आई है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटनास्थल पर फॉरेंसिक टीम को बुलाकर साक्ष्य एकत्र किए गए हैं। मोबाइल और चैट की जांच में जुटी पुलिस-पुलिस ने मृतका का मोबाइल फोन कब्जे में लेकर उसकी कॉल डिटेल और चैट की जांच शुरू कर दी है। साथ ही पीजी में रहने वाले अन्य लोगों से भी पूछताछ की जा रही है। घटनास्थल और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज भी खंगाली जा रही है। मकान मालिक की शिकायत के आधार पर पुलिस ने रमन के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कर लिया है। घटना के बाद से फरार मुख्य संदिग्ध की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की कई टीमें संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही हैं। पुलिस का कहना है कि आरोपी की गिरफ्तारी के बाद हत्या की वजह और वारदात से जुड़े अन्य पहलुओं का स्पष्ट खुलासा हो सकेगा।

जगदीश पुरी मार्केट में अमरनाथ बर्फानी के भंडारे का आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
रायबरेली। सावन मास के दूसरे सोमवार को गांव जगदीशपुर मार्केट में बाबा अमरनाथ बर्फानी का विशाल भंडारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जी आईं सी के पूर्व प्रधानाचार्य शिव नारायण सोनी एवं शिव शक्ति सेवादार समिति रायबरेली वेव अध्यक्ष नवल किशोर बाजपेई ने भण्डारे के पूर्व भूत-भावन भगवान अमरनाथ बर्फानी के शिव लिंग का विधिवत पूजन करवेव कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर शिव नारायण सोनी ने कहा कि बाबा अमरनाथ बर्फानी यात्रा एक माह चली और लगभग पांच लाख लोगों ने बाबा अमरनाथ बर्फानी वेव दर्शन किये।शिव शक्ति सेवादार समिति के अध्यक्ष नवल किशोर बाजपेई ने बताया कि हर साल लाखों लोग अमर नाथ यात्रा में जाते हैं।

शिव शक्ति सेवादार समिति नयी दिल्ली द्वारा पिस्सू टॉप पर भंडारा आयोजित किया जाता है।

जगदीशपुर वेव प्रधान विजय यादव ने बताया आज़ अमर नाथ वर्फानी का भण्डारा भक्तों के सहयोग से किया जा रहा है,जो देर रात तक चलेगा।

भण्डारे में जमुना प्रसाद कोटेदार,ओम् प्रकाश यादव, गोविंद जायसवाल, विनोद सोनी ,दीपक,शिवटहल, बब्लू,शनि, विकास, राकेश, कृष्णा जायसवाल, गंगा प्रसाद, गया प्रसाद,विनय यादव का विशेष योगदान रहा। समारोह में आयोजन समिति ने शिव शक्ति सेवादार समिति के अध्यक्ष नवल किशोर बाजपेई, उपाध्यक्ष शिव नारायण सोनी, राजाराम मौर्य,आडीटर राम गोपाल वर्मा, संगठन सचिव पारस नाथ वर्मा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राम सुन्दर पाण्डेय,विनय यादव को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन शिव नारायण सोनी ने किया। भण्डारे में बूंदी,चना, पूड़ी सब्जी, चावल छोले का आनंद भक्तों ने प्राप्त किया,देर रात तक प्रसाद बंटता रहा।

डीएम की अध्यक्षता में स्कूली बच्चों की सुरक्षा को लेकर विद्यालय संचालकों के साथ महत्वपूर्ण बैठक सम्पन्न,बिना फिटनेस एवं पूर्ण अभिलेख के कोई भी स्कूली वाहन संचालित न हो, कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करें-डीएम

स्कूल वाहनों के चालक-परिचालक का पुलिस सत्यापन एवं स्वास्थ्य परीक्षण अनिवार्य, अभिभावकों को भी किया जाए जागरूक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जनपद में संचालित विभिन्न विद्यालयों के संचालकों के साथ स्कूली बच्चों की सुरक्षा एवं सुरक्षित परिवहन व्यवस्था के दृष्टिगत महत्वपूर्ण बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में विद्यालयों में संचालित स्कूली वाहनों की स्थिति, वाहनों की फिटनेस, अभिलेखों की उपलब्धता तथा चालक-परिचालकों के सत्यापन एवं स्वास्थ्य परीक्षण सहित बच्चों की सुरक्षा से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। जिलाधिकारी ने स्पष्ट निर्देश दिए कि बिना फिटनेस तथा पूर्ण अभिलेखों के किसी भी स्कूली वाहन का संचालन न होने दिया जाए। विद्यालय प्रबंधन यह सुनिश्चित करें कि उनके विद्यालय में बच्चों के परिवहन के लिए संचालित प्रत्येक वाहन निर्धारित मानकों एवं नियमों का पालन करता हो। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को भी निर्देशित किया कि नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों के विरुद्ध नियमानुसार कड़ाई से कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि स्कूली वाहनों के चालक एवं परिचालक का पुलिस विभाग से चरित्र सत्यापन कराया जाए तथा उनका स्वास्थ्य परीक्षण अनिवार्य रूप से कराया जाए। स्वास्थ्य परीक्षण के दौरान विशेष रूप से नेत्र परीक्षण (आई चेकअप) पर ध्यान दिया जाए, ताकि बच्चों को विद्यालय तक लाने-ले जाने वाले चालक पूर्ण रूप से स्वस्थ एवं वाहन संचालन के लिए सक्षम हों। जिलाधिकारी ने विद्यालय संचालकों को निर्देशित किया कि वे अपने-अपने विद्यालयों में बच्चों की सुरक्षित आवाजाही को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। अभिभावकों को भी जागरूक किया जाए कि वे बच्चों को अनाधिकृत अथवा असुरक्षित निजी वाहनों से विद्यालय न भेजें। इसके लिए विद्यालय संचालकों एवं अभिभावकों के बीच जागरूकता कार्यशाला आयोजित करने के निर्देश दिए गए, जिसमें स्कूली बच्चों की सुरक्षित परिवहन व्यवस्था, यातायात नियमों तथा अभिभावकों की जिम्मेदारियों के संबंध में जानकारी दी जाए। जिला प्रशासन ने अभिभावकों से अपील की है कि वे बिना पंजीकरण अथवा अनधिकृत प्राइवेट वाहन से बच्चों को विद्यालय न भेजें। साथ ही, नाबालिग बच्चों को किसी भी दशा में वाहन चलाकर विद्यालय जाने की अनुमति न दें।

जिलाधिकारी ने विद्यालय संचालकों को निर्देशित किया कि यदि कोई नाबालिग बच्चा स्वयं वाहन चलाकर विद्यालय आता है तो विद्यालय परिसर में उस वाहन को पार्क न कराया जाए तथा संबंधित अभिभावक को इसकी जानकारी देते हुए आवश्यक रूप से जागरूक किया जाए। बच्चों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए जिला प्रशासन द्वारा ई-रिक्शा से बच्चों को विद्यालय ले जाने पर पूर्ण प्रतिबंध सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। विद्यालय प्रबंधन यह सुनिश्चित करें कि बच्चों के आवागमन के लिए असुरक्षित एवं नियमविरुद्ध साधनों का प्रयोग न हो। जिलाधिकारी ने कहा कि बच्चों की सुरक्षा केवल प्रशासन या विद्यालय की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि विद्यालय प्रबंधन, अभिभावकों एवं समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। सभी संबंधित पक्ष निर्धारित सुरक्षा मानकों एवं यातायात नियमों का पूरी गंभीरता से पालन करें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि स्कूली वाहनों की नियमित जांच एवं प्रवर्तन कार्रवाई के साथ-साथ विद्यालयों और अभिभावकों के मध्य निरंतर जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएं। बैठक में अपर जिलाधिकारी (वि./रा.) सहदेव मिश्र, एआरटीओ (प्रशासन) अरविंद कुमार, एआरटीओ (प्रवर्तन) उमेश चन्द्र कटियार, जिला विद्यालय निरीक्षक संजीव कुमार सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी राहुल सिंह सहित विभिन्न विद्यालयों वेव संचालक एवं संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

हर घर तिरंगा अभियान के तहत निकली भव्य तिरंगा यात्रा, देशभक्ति के रंग में रंगा रॉबट्र्सगंज,तहसील परिसर से बढ़ौली चौराहा तक गूंजे देशभक्ति के नारे, हाथों में तिरंगा लेकर उमड़ा जनसैलाब

मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी सहित जनपद स्तरीय अधिकारियों ने तिरंगा यात्रा में किया प्रतिभाग,छात्र-छात्राओं एवं जनमानस ने बढ़-चढ़कर लिया हिस्सा, देशभक्ति गीतों से गुलजार हुआ पूरा वातावरण,तिरंगे की आन-बान-शान के संदेश के साथ नगर पालिका परिषद रॉबट्र्सगंज तिरंगा रंग में रंगी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। 'हर घर तिरंगा अभियान-2026' के अंतर्गत आज जनपद सोनभद्र में देशभक्ति एवं राष्ट्रीय एकता की भावना से ओत-प्रोत भव्य तिरंगा यात्रा रैली का आयोजन किया गया। तिरंगा यात्रा में बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं, जनपद स्तरीय अधिकारियों, कर्मचारियों एवं जनमानस ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग करते हुए राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता का संदेश दिया। तिरंगा यात्रा तहसील परिसर रॉबट्र्सगंज से प्रारंभ होकर बढ़ौली चौराहा तक निकाली गई। यात्रा में बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं हाथों में तिरंगा लेकर शामिल हुए। भारत माता की जय, वंदे मातरम् सहित देशभक्ति के नारों से पूरा मार्ग गूंजता रहा। देशभक्ति गीतों और राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत नारों ने पूरे वातावरण को जोश एवं उत्साह से भर दिया। तिरंगा यात्रा में मुख्य विकास अधिकारी श्रीमती जागृति अवस्थी सहित जनपद स्तरीय अधिकारियों ने सहभागिता की। इस दौरान मुख्य

चिकित्सा अधिकारी डॉ. रमेश कुमार, जिला विकास अधिकारी हेमंत कुमार सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी ज्ञानेंद्र सिंह भदौरिया, डीसी मनरेगा रविंद्र सिंह, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी सुधांशु शेखर शर्मा, जिला विद्यालय निरीक्षक जयराम सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी मुकुल आनंद पांडेय तथा अपर जिला सूचना अधिकारी विनय कुमार सिंह सहित विभिन्न विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे। अधिकारियों ने छात्र-छात्राओं एवं आमजन के साथ हाथों में तिरंगा लेकर यात्रा में प्रतिभाग किया और नागरिकों को राष्ट्रध्वज के सम्मान तथा राष्ट्रप्रेम की भावना से जुड़ने का संदेश दिया। तिरंगा यात्रा में बड़ी संख्या में विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की सहभागिता रही। विद्यार्थियों में विशेष उत्साह एवं उमंग देखने को मिली। तिरंगा यात्रा के दौरान भारत माता की जय, वंदे मातरम् तथा देशभक्ति के अन्य नारों से पूरा क्षेत्र गूंज उठा। देशभक्ति गीतों से वातावरण पूरी तरह राष्ट्रप्रेम की भावना से सराबोर रहा। मार्ग में आम नागरिकों ने भी तिरंगा यात्रा का उत्साहपूर्वक स्वागत किया और अभियान के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया। हर घर तिरंगा अभियान-2026 का उद्देश्य जन-जन में राष्ट्रध्वज के प्रति सम्मान एवं गौरव की भावना को मजबूत करना तथा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रत्येक नागरिक को राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्रीय एकता के भाव से जोड़ना है। तिरंगा यात्रा के माध्यम से लोगों को अपने घरों पर सम्मानपूर्वक तिरंगा फहराने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर नगर पालिका परिषद रॉबट्र्सगंज क्षेत्र को भी तिरंगे के रंग में सजाया गया, जिससे पूरा नगर देशभक्ति के रंग में रंगा नजर आया। प्रमुख मार्गों एवं सार्वजनिक स्थलों पर तिरंगा सजावट और यात्रा में लहराते राष्ट्रीय ध्वज ने आयोजन की भव्यता को और बढ़ा दिया। तिरंगा यात्रा ने जनपद में स्वतंत्रता दिवस के उत्सव के माहौल को और अधिक उत्साहपूर्ण बना दिया। चारों ओर लहराते तिरंगे, देशभक्ति के गीत और भारत माता के जयघोष से रॉबट्र्सगंज नगर राष्ट्रभक्ति के रंग में सराबोर नजर आया।

वर्ष 2026 तक सोनभद्र को बाल श्रम मुक्त बनाने की दिशा में तेज होंगे प्रयास एडीएम की अध्यक्षता में जिला टास्क फोर्स की बैठक संपन्न

सोनभद्र। जनपद सोनभद्र को बाल श्रम के अभिशाप से पूरी तरह मुक्त कराने के उद्देश्य से मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) की अध्यक्षता में जिला टास्क फोर्स की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में बाल एवं किशोर श्रमिकों के प्रभावी चिन्हांकन, रेस्क्यू, पुनर्वासन तथा बाल श्रम उन्मूलन अभियान में विभिन्न विभागों की सक्रिय सहभागिता को लेकर बिंदुवार विस्तृत चर्चा की गई। बैठक में जानकारी दी गई कि श्रम विभाग उत्तर प्रदेश शासन एवं माननीय मुख्यमंत्री जी की मंशा के अनुरूप प्रदेश के सभी जनपदों को वर्ष 2027 तक तथा सोनभद्र जैसे आकांक्षी जनपदों को वर्ष 2026 तक बाल श्रम मुक्त घोषित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसी क्रम में जनपद सोनभद्र में श्रम विभाग, मानव तस्करी विरोधी इकाइ (AHTU) एवं एसोसिएशन फॉर वॉलंटरी एक्शन के संयुक्त समन्वय से लगातार सघन जागरूकता एवं रेस्क्यू अभियान संचालित किए जा रहे हैं।समीक्षा के दौरान बताया गया कि इस विशेष अभियान के तहत जून और जुलाई 2026 माह में कुल 33 बाल एवं किशोर श्रमिकों का चिन्हांकन कर उन्हें रेस्क्यू किया गया। साथ ही बाल श्रम कराने वाले 27 व्यावसायिक संस्थानों के विरुद्ध नियमानुसार विधिक कार्रवाई की गई है। बैठक में रेस्क्यू किए गए इन सभी बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए उनके त्वरित शैक्षणिक नामांकन, आर्थिक पुनर्वासन और शासकीय योजनाओं के तहत आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने पर बल दिया गया। सोनभद्र के सभी 10 विकास खंडों की 621 ग्राम पंचायतों, 6 नगर पंचायतों तथा 1 नगर पालिका को दिसंबर 2026 तक पूर्ण रूप से बाल श्रम मुक्त घोषित करने की कार्ययोजना तय की गई है। ग्राम पंचायत एवं ब्लॉक स्तरीय बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति के माध्यम से प्रस्ताव पारित कराए जाएंगे। वार्ड स्तरीय समितियों द्वारा बाल श्रम मुक्ति से संबंधित औपचारिक प्रस्ताव तैयार किए जाएंगे।

इन सभी प्रस्तावों की समीक्षा के उपरांत जिला स्तरीय समिति द्वारा अंतिम स्वीकृति प्रदान की जाएगी। बैठक में बाल एवं किशोर श्रमिकों के साथ-साथ बंधुआ श्रमिकों के चिन्हांकन तथा सड़कों पर रहने वाले बेघर/अनाथ बच्चों के बचाव व पुनर्वास के लिए गठित टीमों व नामित नोडल अधिकारियों की जिम्मेदारियां तय की गईं। एडीएम ने खंड विकास अधिकारियों (BDO), ग्राम विकास अधिकारियों/पंचायत सचिवों तथा नगर निकायों के अधिशासी अधिकारियों (EO) को आपस में बेहतर समन्वय स्थापित कर आवश्यक बैठकों का आयोजन कराने का निर्देश दिया। बैठक में मुख्य रूप से जिला विद्यालय निरीक्षक (DIOS) क्षेत्राधिकारी (CO, पुलिस विभाग), डिप्टी सीएमओ (Health Dept.), DLSA प्रतिनिधि, जिला बाल संरक्षण इकाई व बाल कल्याण समिति (CWC) प्रतिनिधि, चाइल्ड हेल्पलाइन कोआर्डिनेटर, जिला कौशल विकास प्रबंधन व जिला पूर्ति अधिकारी प्रतिनिधि, AHT, BDO प्रतिनिधि, श्रम विभाग के अधिकारी एवं NGO प्रतिनिधि सहित विभिन्न विभागों के अधिकारीगण एवं जिला टास्क फोर्स के सदस्य उपस्थित रहे।

सोनभद्र के प्रभारी मंत्री एवं राज्य मंत्री हंसराज विश्वकर्मा 12 अगस्त को जनपद के भ्रमण पर,तिरंगा यात्रा महोत्सव एवं तिरंगा यात्रा में मुख्य अतिथि के रूप में होंगे शामिल

हरसेवानंद विद्यालय चुर्क एवं राजा शारदा महेश इंटर कॉलेज रॉबट्र्सगंज में आयोजित कार्यक्रमों में करेंगे प्रतिभाग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनपद सोनभद्र के

प्रभारी मंत्री एवं मा0 राज्य मंत्री, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार श्री हंसराज विश्वकर्मा जी का 12 अगस्त 2026 को जनपद सोनभद्र का भ्रमण कार्यक्रम प्रस्तावित है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रभारी मंत्री प्रातः वाराणसी स्थित सर्किट हाउस से प्रस्थान कर लगभग 10:40 बजे सोनभद्र स्थित सर्किट हाउस, लोढ़ी पहुंचेंगे। प्रभारी मंत्री श्री हंसराज विश्वकर्मा जी प्रातः 11:00 बजे सर्किट हाउस, लोढ़ी से प्रस्थान कर हरसेवानंद विद्यालय, चुर्क में आयोजित तिरंगा यात्रा महोत्सव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होंगे। कार्यक्रम में राष्ट्रध्वज के प्रति सम्मान, देशभक्ति एवं राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करने के उद्देश्य से आयोजित विभिन्न गतिविधियों में प्रतिभाग करेंगे। इसके उपरांत प्रभारी मंत्री लगभग 11:10 बजे हरसेवानंद विद्यालय, चुर्क से प्रस्थान कर दोपहर 12:30 बजे राजा शारदा महेश इंटर कॉलेज, रॉबट्र्सगंज पहुंचेंगे। यहां से प्रारंभ होने वाली तिरंगा यात्रा में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होंगे। तिरंगा यात्रा के माध्यम से जनसामान्य एवं विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय एकता एवं तिरंगे के प्रति सम्मान की भावना को प्रोत्साहित किया जाएगा। कार्यक्रम के पश्चात प्रभारी मंत्री द्वारा रॉबट्र्सगंज स्थित बिचपई, वार्ड नंबर-3 में श्री अंगद विश्वकर्मा के पारिवारिक कार्यक्रम में भी प्रतिभाग किया जाएगा। इसके बाद अपराह्न लगभग 14:15 बजे वह सोनभद्र से प्रस्थान कर वाराणसी के लिए रवाना होंगे तथा लगभग 16:00 बजे सर्किट हाउस, वाराणसी पहुंचेंगे। प्रभारी मंत्री का यह भ्रमण हर घर तिरंगा अभियान-2026 के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों में सहभागिता के साथ-साथ जनपद में राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रीय एकता एवं नागरिक सहभागिता की भावना को और अधिक मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण रहेगा।

वर्ष 2026 तक सोनभद्र को बाल श्रम मुक्त बनाने की दिशा में तेज होंगे प्रयास,जिला टास्क फोर्स की बैठक में सभी विभागों को सक्रिय भूमिका निभाने के निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार, सोनभद्र

में जिला टास्क फोर्स की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जनपद को बाल श्रम मुक्त बनाने, बाल एवं किशोर श्रमिकों के प्रभावी चिन्हांकन, रेस्क्यू, पुनर्वासन तथा बाल श्रम उन्मूलन अभियान में विभिन्न विभागों की सहभागिता पर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक में बताया गया कि श्रम विभाग, उत्तर प्रदेश शासन एवं मा0 मुख्यमंत्री जी की प्राथमिकता के अंतर्गत प्रदेश के सभी जनपदों को वर्ष 2027 तक तथा आकांक्षी जनपदों सहित 16 जनपदों को वर्ष 2026 तक बाल श्रम मुक्त घोषित किया जाना है। इसी क्रम में सोनभद्र में श्रम विभाग,AHT एव Association for Voluntary Action के समन्वय से जागरूकता एवं रेस्क्यू अभियान संचालित किए जा रहे हैं। अभियान के अंतर्गत जून एवं जुलाई माह में 33 बाल/किशोर श्रमिकों का चिन्हांकन किया गया तथा 27 संस्थानों के विरुद्ध आवश्यक कार्रवाई की गई। चिन्हांकित बच्चों के शैक्षणिक एवं आर्थिक पुनर्वासन तथा आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने पर भी बैठक में चर्चा की गई। जनपद के 10 विकास खंडों की 621 ग्राम पंचायतों, 6 नगर पंचायतों एवं 1 नगर पालिका को दिसंबर 2026 तक बाल श्रम मुक्त घोषित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके लिए ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पंचायत एवं ब्लॉक स्तर की बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति तथा शहरी क्षेत्रों में वार्ड स्तर की समितियों के माध्यम से बाल श्रम मुक्त प्रस्ताव पारित कराने की प्रक्रिया अपनाई जाएगी। इसके उपरांत जिला स्तरीय समिति द्वारा अनुमोदन किया जाएगा। बैठक में बाल एवं किशोर श्रमिकों के साथ-साथ बंधुआ श्रमिकों के चिन्हांकन, सड़कों पर रहने वाले एवं बेघर बच्चों के बचाव और पुनर्वासन के लिए गठित टीमों एवं नामित नोडल अधिकारियों की भूमिका के संबंध में भी जानकारी दी गई। सभी संबंधित विभागों को रेस्क्यू एवं पुनर्वासन अभियान में सक्रिय सहयोग करने तथा अपने-अपने स्तर पर प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। श्रम विभाग द्वारा विकास खंड अधिकारियों, ग्राम विकास अधिकारियों/पंचायत सचिवों तथा अधिशासी अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर बाल श्रम मुक्त प्रस्ताव पारित कराने हेतु आवश्यक बैठकों के आयोजन पर भी जोर दिया गया।

बैठक में उपस्थित प्रमुख अधिकारी/प्रतिनिधि-बैठक में जिला विद्यालय निरिक्षक, सीओ,डिप्टी सीएमओ, DLS प्रतिनिधि, जिला बाल संरक्षण इकाई/बाल कल्याण समिति के प्रतिनिधि, पुलिस विभाग, चाइल्ड हेल्प लाइन कोआर्डिनेटर, जिला कौशल प्रबन्धान, विकास खांड अधिकारी, जिला पूर्ती अधिकारी प्रतिनिधि, एएचटी, BDO प्रतिनिधि, श्रम विभाग के अधिकारी एवं NGO प्रतिनिधि सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

मास्टर एथलेटिक्स एसोसिएशन के प्रदेश उपाध्यक्ष बने सोनभद्र के रमेश सिंह यादव

सोनभद्र। यूपी मास्टर्स एथलेटिक्स एसोसिएशन, उत्तर

प्रदेश की वर्ष 2026-2031 की नई राज्य कार्यकारिणी का विधिवत गठन कर दिया गया है। लखनऊ विश्वविद्यालय में मुख्य चुनाव अधिकारी विनय कुमार श्रीवास्तव के कुशल निर्देशन में संपन्न हुई चुनाव प्रक्रिया में सभी पदों पर पदाधिकारियों का निर्विरोध निर्वाचन हुआ। इस नई कार्यकारिणी में सोनभद्र का नाम रोशन करते हुए वरिष्ठ खेल अनुरागी रमेश सिंह यादव को सर्वसम्मति से प्रदेश उपाध्यक्ष चुना गया है। नई कार्यकारिणी के अंतर्गत उपाध्यक्ष पद पर सोनभद्र के रमेश सिंह यादव के साथ-साथ झांसी के यू.एन. सिंह, अलीगढ़ के रामशाद निसार, कानपुर के ओम प्रकाश तथा बस्ती के राना दिनेश प्रताप सिंह को प्रदेश उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई है। कार्यकारिणी के प्रमुख पदों पर निर्वाचित अन्य पदाधिकारी अध्यक्ष डॉ. बाबादीन चौधरी (लखनऊ), वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुरेंद्र सिंह (फिरोजाबाद), महामंत्री राजेश कुमार सिंह (आजमगढ़),संयुक्त मंत्री संजय कुमार त्रिपाठी (अमेठी), संजीव कुमार (मुजफ्फरनगर) एवं उमेश चंद्र शर्मा (मथुरा),कोषाध्यक्ष राम लखन यादव (सुल्तानपुर) रमेश सिंह यादव के प्रदेश उपाध्यक्ष निर्वाचित होने की खबर मिलते ही ओबरा एवं सोनभद्र जनपद के खेलप्रेमियों, खिलाड़ियों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर दौड़ गई। खेल प्रेमियों का कहना है कि रमेश सिंह के लंबे अनुभव, खेल के प्रति समर्पण और सक्रियता का सीधा लाभ जिले के साथ-साथ संपूर्ण प्रदेश के मास्टर एथलीट खिलाड़ियों को मिलेगा। स्थानीय खेलप्रेमियों ने उम्मीद जताई है कि उनके नेतृत्व में सोनभद्र में एथलेटिक्स इंफ्रास्ट्रक्चर और ग्रामीण अंचलों के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के नए और बेहतर अवसर प्राप्त होंगे।

योगा जोनल खेल प्रतियोगिता में डीएवी बना क्लस्टर चैंपियन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। डी ए वी पब्लिक स्कूल

रॉबट्र्सगंज के तत्वाधान में आयोजित (9 अगस्त और 10 अगस्त- 2026) दो दिवसीय जोनल खेल प्रतियोगिता का शुभारंभ बेसिक शिक्षा अधिकारी सोनभद्र मुकुल आनंद पांडे जी ने किया । खेल और संस्कृति के अनूठे संगम का शुभारंभ क्लस्टर खेलों में देखने को मिला। क्लस्टर खेलों में क्रिकेट, खो -खो,कबड्डी, चैस, योगा, वेट लिफ्टिंग, आदि खेलों का संगम देखने को मिला। प्रतियोगिता के अंतिम दिन विभिन्न खेल स्पर्धा में खिलाड़ियों ने अपने प्रतिभा अनुशासन और खेल भावना का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के संपन्न पर घोषित ओवरऑल क्लस्टर चैंपियनशिप में अंडर - 14 योगा खेल प्रतियोगिता मे डी ए वी - खड़िया - प्रथम स्थान, डी ए वी - रॉबट्र्सगंज - द्वितीय स्थान, डी ए वी - ओबरा- तीसरे स्थान पर रहे और अंडर -17 योगा खेल प्रतियोगिता में डी ए वी - खड़िया- प्रथम स्थान, डी ए वी - बीना - द्वितीय स्थान और डी ए वी परासी - तृतीय स्थान पर रहे। इस अवसर पे ऑफिसियल और कोच कि भूमिका मे प्रभात सर , अनामिका मैम और मनोरंजन सर रहे।

लोक अदालत के माध्यम से विशिष्ट विषयों का निस्तारण किया जायेगा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के आदेशानुसार एवं माननीय जनपद न्यायाधीश श्री राम सुलीन सिंह, अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, सोनभद्र के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, सोनभद्र द्वारा दिनांक 12.09.2026 को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत के माध्यम से विशिष्ट विषय आपराधिक शमनीय वाद, धारा-138 एन.आई.एक्ट, आर्बिट्रेशन, (झूब र्धिहमे) के वाद, बैंक वसूली वाद, मोटर दुर्घटना प्रतिकर याचिकायें, पारिवारिक वादों, श्रम वादों, भूमि अधिग्रहण वादों, विद्युत एवं जल बिल (र्ह्मत्ल्हु हदह-म्दस्ज्दर्ल्हें त), सर्विस में वेतन एवं भत्तों से सम्बन्धित एवं सेवानिवृतिक परिलाभों से सम्बन्धि विवाद, राजस्व वाद (केवल मान्नीय उच्च न्यायालय एवं जिला न्यायालयों में लम्बित वाद), अन्य सिविल वादों (किराया,सुखाविकार, व्ययादेष, विशिष्ट अनुतोष वाद) से सम्बन्धित मामलों के साथ साथ सुलह योग्य प्री-लिटिगेशन मामलों को भी सुलह समझौते के आधार पर निस्तारण किया जायेगा। उक्त राष्ट्रीय लोक अदालत में अधिकाधिक वादों के निस्तारण हेतु आज दिनांक 11.08.2026 को अपराह्न 02:00 बजे ए0डी0आर0 भवन स्थित मेरे विश्राम कक्ष में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, सोनभद्र द्वारा समस्त तहसीलदार, खनन विभाग, मनरेगा जनपद सोनभद्र की बैठक आहूत की गयी। जिसमें श्री विदित तिवारी, नायब तहसीलदार घोरावल, श्री भूपेन्द्र कुमार नायब तहसीलदार दुद्धी, श्री शिवकुमार सर्वेक्षक खनन विभाग एवं श्री विनय मिश्रा डी0सी0 मनरेगा सोनभद्र उपस्थित हुए। उक्त बैठक में उपस्थित अधिकारीयों को निर्देशित किया गया कि दिनांक 12.09.2026 को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत में संबंधित वादों का अधिक से अधिक संख्या में सुलह समझौते के आधार पर निस्तारण कराया जाना सुनिश्चत करें, जिससे मा0 राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण एवं उ0 प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आयोजित की जा रही राष्ट्रीय लोकअदालत का लाभ अधिक से अधिक संख्या में आमजनमानस को प्राप्त हो सके। यह जानकारी श्री राहुल सिविल जज सी0डी0/सचिव(पूर्णकालिक) जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, सोनभद्र द्वारा दी गयी।

स्पोर्ट्स

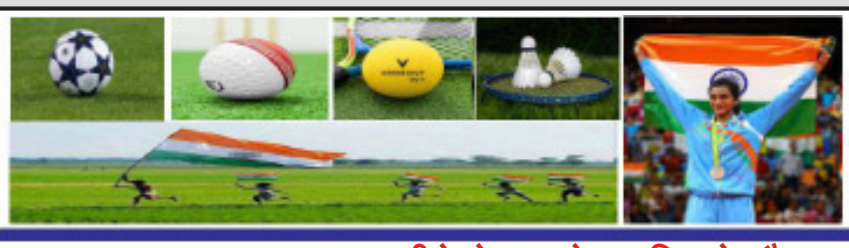

सबको खुश रखता हूं, सबकी 'हां में हां' मिलाता हूं, लगता है मेरी अपनी कोई पहचान नहीं, या मैं चाटुकारिता करने लगा हूँ

नयी दिल्ली। उम्र के अलग-अलग पड़ाव पर विचार बदलते रहते हैं, ऐसा होना सामान्य बात हो सकती हैं. इस विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं 27 साल का हूं और पिछले कुछ समय से एक अजीब बात नोटिस कर रहा हूं। मैं जब अपने परिवार के साथ होता हूं तो एक तरह से व्यवहार करता हूं, दोस्तों के साथ दूसरी तरह से और ऑफिस में एकदम अलग ही इंसान बन जाता हूं। कई बार लगता है कि मैं हर जगह लोगों की अपेक्षाओं के हिसाब से खुद को बदल लेता हूं। प्रॉब्लम ये है कि मुझे समझ नहीं आता कि इनमें से असली मैं कौन हूं। मैं किस तरह का इंसान हूं, मेरी अपनी पसंद-नापसंद क्या है। मैं खुद को नहीं जानता। इसलिए भीतर एक अजीब-सा खालीपन महसूस होता है। क्या यह पहचान से जुड़ा संकट है? मैं खुद को कैसे जानूं? मैं क्या करूं? सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। 'लोग क्या सोचेंगे?' ये सवाल कुछ लोगों के जीवन और फैसलों को तय करने वाला सबसे बड़ा पैमाना है। ऐसे लोग हर माहौल में खुद को इस तरह ढाल लेते हैं कि सामने वाले को वे बिल्कुल अपने जैसे लगें। दोस्तों के बीच अलग व्यक्तित्व, ऑफिस में अलग, परिवार में अलग और पार्टनर के साथ अलग। ऊपर से वे मिलनसार, आत्मविश्वासी और हर परिस्थिति में एडजस्ट करने वाले नजर आते हैं, लेकिन अंदर-ही-अंदर वे खुद से कहते हैं-'मुझे समझ ही नहीं आता कि असल में मैं हूं कौन।' दूसरों के साथ तालमेल बिठाना अच्छी बात हैं। लेकिन अगर हर रिश्ते में अपनी पहचान और अपने विचार बदलने पड़ें तो यह मानसिक रूप से थका सकता है। स्वस्थ रिश्ते वही हैं, जहां व्यक्ति

अपनी असहमति भी सम्मानपूर्वक रख सके। क्या है 'कैमेलियन पर्सनैलिटी'? मनोविज्ञान में इसे 'कैमेलियन पर्सनैलिटी' कहते हैं। यानी ऐसा व्यक्ति, जो हर परिस्थिति और हर व्यक्ति के मुताबिक खुद को बदल लेता है। हालांकि यह कोई मानसिक बीमारी या मनोवैज्ञानिक डायग्नोसिस नहीं है। हर इंसान अलग-अलग परिस्थितियों में अपना व्यवहार बदलता है। हम बॉस से जिस तरह बात करते हैं, उसी तरह अपने दोस्त या परिवार से नहीं करते। यह सामाजिक लचीलापन सामान्य है और जरूरी भी। समस्या तब शुरू होती है, जब एडजेस्टमेंट करते-करते व्यक्ति अपनी असली पहचान, पसंद, सीमाएं और मूल्य ही खोने लगता है। क्या है 'कैमेलियन पर्सनैलिटी'? हरेक के सामने अलग व्यक्तित्व दिखाना। दूसरों को खुश करने के लिए खुद को बदलना। असहमति जताने से डरना। अपनी पसंद-नापसंद दबा लेना। स्वीकृति के लिए अपनी पहचान खोना। कैमेलियन पर्सनैलिटी कब समस्या? कैमेलियन पर्सनैलिटी वाले लोग बाहर से आत्मविश्वासी, मिलनसार और सहयोगी दिखाई देते हैं, लेकिन उनके भीतर काफी कॉन्फ्लिक्ट चलते रहते हैं। वे अक्सर- सामने सहमति जताते हैं, जबकि अंदर से असहमत होते

हैं। दूसरों की पसंद को अपनी पसंद बताने लगते हैं। हर ग्रुप के हिसाब से अपने विचार बदल लेते हैं। अपनी इच्छा बताने से बचते हैं। हर अनुरोध पर 'हां' कह देते हैं और बाद में पछताते हैं।पसंदीदा व्यक्ति की लाइफस्टाइल या व्यक्तित्व की नकल करते हैं। अपनी सीमाएं टूटने पर भी चुप रहते हैं। अकेले होने पर समझ नहीं पाते कि वास्तव में उन्हें क्या पसंद है। मनोवैज्ञानिक शोध बताते हैं कि इस तरह के व्यवहार के पीछे ये संभावित कारण हो सकते हैं- अप्रूवल सीकिंग (हर समय स्वीकृति पाने की चाह) सोशल एंग्जाइटी (सामाजिक चिंता) लो सेल्फ इस्टीम (कम आत्मसम्मान) कंफॉर्मिटी (भीड़ के अनुसार चलने, उनकी बात मानने की प्रवृत्ति) सेल्फ कंसेप्ट (अपनी पहचान को लेकर भ्रम) ये संकेत दिखें तो सावधान हो जाएं:-सामने हां बोलना, पीछे असहमत होना। दूसरों की पसंद को अपनी पसंद बताना। समूह के अनुसार अपने विचार बदलना। अपनी राय देने से बचना। पहले 'हां' कहना, फिर पछताना। किसी की लाइफस्टाइल कॉपी करना। लोग बाउंड्री लांघे तो भी चुप रहना। अपनी इच्छा जरूरत समझ न पाना। हर फैसले पर दूसरों की मंजूरी लेना। लोगों के नाराज होने से डरना। क्यों बनती है 'कैमेलियन पर्सनैलिटी'? ज्यादातर मामलों में यह व्यवहार बचपन के या जीवन के पुराने अनुभवों से सीखा हुआ होता है। अगर बचपन में व्यक्ति ने यह महसूस किया हो कि-केवल आज्ञाकारी होने पर प्यार मिलेगा। गलती करने पर आलोचना होगी। अपनी बात रखने पर डांट पड़ेगी। परिवार में विरोध करना सुरक्षित नहीं है।स्कूल में बुलीइंग या रिजेक्शन झेलना पड़ा हो। कंट्रोल करने वाले रिश्तों में रहना पड़ा हो। तो धीरे-धीरे उसके मन में यह विश्वास बैठ सकता है कि- 'अगर मैं दूसरों जैसा नहीं बनूंगा, तो लोग मुझे स्वीकार नहीं करेंगे।' यह मानसिक चक्र कैसे चलता है? स्थिति- कोई व्यक्ति अपनी मजबूत राय या अपेक्षा सामने रखना चाहता है। मन में आया विचार- 'अगर मैंने ऐसा किया, अगर असहमति जताई तो सामने वाला मुझे पसंद नहीं करेगा।' भावना- डर, चिंता, अपराधबोध या शर्म। व्यवहार- तुरंत सहमति जताना, माफी मांगना या चुप रह जाना। तत्काल नतीजा- तनाव कम होता है और विवाद टल जाता है। लंबे समय में इसका असर:-अगर कोई व्यक्ति हमेशा ही दूसरों से सहमति जता रहा है और अपनी असली भावनाएं नहीं बता रहा है तो लंबे समय में इसका नेगेटिव प्रभाव दिख सकता है। जैसेकि- मन में नाराजगी, मानसिक थकान, कमजोर सेल्फ बाउंड्री, आत्मविश्वास में कमी, अपनी पहचान खोने का एहसास, लोगों से सहमत होना हमेशा समस्या नहीं है। समस्या तब होती है, जब असहमति जताने का विचार ही आपको असुरक्षित महसूस कराने लगे। थेरेपी का उद्देश्य व्यक्ति को झगड़ालू बनाना नहीं, बल्कि उसे अपनी बात सम्मानपूर्वक रखने का आत्मविश्वास देना है। 1950 के दशक का मशहूर प्रयोग पोलिश-अमेरिकी सामाजिक मनोवैज्ञानिक सोलोमन ऐश ने 1950 के दशक में एक प्रसिद्ध प्रयोग किया। इस प्रयोग में हिस्सा ले रहे प्रतिभागियों को तीन रेखाएं दिखाई गईं। एक सीधी रेखा और तीन अन्य रेखाएं। उन्हें बताना था कि कौन-सी रेखा पहली वाली के बराबर लंबी है। इस सवाल का जवाब बेहद आसान था। लेकिन प्रयोग में शामिल अधिकांश लोग असल में रिसर्च टीम का ही हिस्सा थे। उन लोगों ने जानबूझकर गलत उत्तर देना शुरू किया। अब असली प्रतिभागी के सामने दो विकल्प थे-या तो वो अपनी आंखों पर भरोसा करे। या वो भीड़ की बात मान ले। इस प्रयोग का नतीजा चौंकाने वाला था। लगभग 75फीसदी लोगों ने कम-से-कम एक बार भीड़ का गलत जवाब स्वीकार कर लिया। कई लोग जानते थे कि जवाब गलत है, लेकिन वे अलग नहीं दिखना चाहते थे। कुछ लोगों को तो अपनी ही समझ पर शक होने लगा। भीड़ का दबाव कैसे काम करता है? 1. स्वीकृति की चाहः- अलग नहीं दिखना चाहते। डरते हैं- 'लोग क्या कहेंगे।' इसलिए 'हां में हां' मिलाते हैं। 2. खुद पर शकः-खुद पर डाउट करते हैं। अपनी समझ पर यकीन नहीं। दूसरों के पर यकीन है। एक व्यक्ति भी ला सकता है फर्क सोलोमन ऐश के प्रयोग में एक और दिलचस्प बात सामने आई। वो ये कि सिर्फ एक व्यक्ति भी फर्क ला सकता है। उन्होंने इस प्रयोग के दौरान देखा कि अगर भीड़ में सिर्फ एक व्यक्ति भी अलग राय रखता था तो बाकी लोगों के लिए भी स्वतंत्र होकर जवाब देना आसान हो जाता था। यानी अगर सिर्फ एक भरोसेमंद दोस्त, परिवार का सदस्य, काउंसलर या थेरेपिस्ट यह कहे कि- 'तुम्हें अलग सोचने का भी अधिकार है।' -तो व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी सोच पर दोबारा भरोसा करना सीख सकता है। भारतीय परिवारों के संदर्भ में इसे कैसे समझें? भारतीय समाज में ये सब महत्वपूर्ण सामाजिक मूल्य माने जाते हैं- बड़ों का सम्मान परिवार को प्राथमिकता दूसरों के लिए समझौता सामूहिक फैसला इसलिए हर जगह और हरेक स्थिति में दूसरे की बात मान लेना, उसके अनुसार चलना मानसिक समस्या नहीं है। असली सवाल ये है कि- क्या आप अपनी इच्छा से दूसरों की बात मानते हैं, या मना करने से डरते हैं? क्या जरूरत पड़ने पर आप सम्मानपूर्वक 'नहीं' कह सकते हैं? क्या आप अपनी गरिमा और सीमा बचाते हुए रिश्ते निभा सकते हैं? यदि इसका जवाब 'नहीं' है, तो इस पैटर्न पर ध्यान देने की जरूरत है। क्या आप 'कैमेलियन पर्सनैलिटी' हैं? करें सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट-यहां मैं आपको एक सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट दे रहा हूं। आपको इन सवालों को 0 से 3 के स्केल पर रेट करना है। जैसेकि पहले सवाल के लिए अगर आपका जवाब 'कभी नहीं' है तो 0 नंबर दें और अगर आपका जवाब 'लगभग हमेशा' है तो 3 नंबर दें। अंत में अपने टोटल स्कोर की एनालिसिस करें। स्कोर का इंटरप्रिटेशन भी ग्राफिक में दिया है। 'कैमेलियन पर्सनैलिटी' को कैसे बदलें? चार हफ्तों का सेल्फ हेल्प प्लान यहां मैं आपको चार हफ्तों का एक सेल्फ हेल्प प्लान दे रहा हूं। स्टेप-बाय-स्टेप इस प्लान को फॉलो करें और प्रोग्रेस को रोज अपनी डायरी में नोट करें। सप्ताह 1 : अपनी आदत पहचानें हर दिन किसी एक घटना के बारे में लिखें-वहां क्या हुआ? मेरी असली राय क्या थी? लेकिन मैंने क्या कहा? मुझे किस बात का डर था? क्या मुझे तुरंत राहत महसूस हुई? बाद में इसका क्या नुकसान हुआ?साथ ही डायरी में अपने जीवन के पांच सबसे महत्वपूर्ण मूल्य लिखें, जैसे- ईमानदारी परिवार स्वतंत्रता सीखना करुणा रचनात्मकता आप अपने हिसाब से कुछ भी लिख सकते हैं। फिर अपने लिए जरूरी हरेक मूल्य के लिए एक छोटा कदम तय करें। जैसेकि आप खुद से कह सकते हैं-अगर 'ईमानदारी' महत्वपूर्ण है, तो मैं रोज कम-से-कम एक बार ईमानदारी से अपने मन की बात जरूर कहूंगा। दूसरा सप्ताहः अपने डर को चुनौती दें-जब भी लगे कि सामने वाला नाराज हो जाएगा तो खुद से पूछें-क्या मेरे डर का कोई ठोस सबूत है? क्या इसका उल्टा भी संभव है? क्या मैं बिना वजह सबसे बुरा सोच रहा हूं? अगर किसी और ने राय न दी होती तो मैं क्या सोचता? क्या मैं सचमुच सहमत हूं या सिर्फ डर रहा हूं? फिर छोटी-छोटी शुरुआत करें- अपनी पसंद का खाना चुनें। किसी एक्टिविटी का सुझाव दें। किसी बात पर विनम्र असहमति जताएं। तीसरा सप्ताहः सम्मानपूर्वक 'ना' कहना सीखें ऐसे वाक्य बोलने का अभ्यास करें-'मैं आपकी बात समझता, लेकिन मेरी राय अलग है।' 'धन्यवाद, लेकिन मैं इसमें शामिल नहीं हो पाऊंगा।' 'मैं आपकी बात का सम्मान करता हूं, फिर भी मेरी पसंद अलग है।' चौथा सप्ताहः अपनी पहचान मजबूत करें अपनी डायरी में इन वाक्यों को पूरा करें-मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण है। मुझे वास्तव में पसंद है। मैं यह बिल्कुल स्वीकार नहीं करूंगा कि। मैं ऐसा इंसान बनना चाहता हूं, जो। किसी भी बड़े फैसले से पहले खुद से ये 4 सवाल पूछें- अगर कोई मुझे देख नहीं रहा होता, तब भी क्या मैं यही फैसला लेता? क्या यह मेरे मूल्यों से मेल खाता है? क्या मैं यह अपनी इच्छा से कर रहा हूं या अस्वीकृति के डर से? अगर असहमति जताना पूरी तरह सुरक्षित होता, तो मैं क्या चुनता? प्रोफेशनल हेल्प कब जरूरी? शुरुआती स्तर पर इस पैटर्न को समझकर और कुछ सेल्फ-हेल्प उपाय अपनाकर काफी सुधार किया जा सकता है। लेकिन अगर इसकी वजह से मानसिक स्वास्थ्य, रिश्ते या रोजमर्रा की जिंदगी प्रभावित होने लगे, तो प्रोफेशनल मदद लेने में देर नहीं करनी चाहिए। प्रोफेशनल हेल्प कब जरूरी? लगातार डिप्रेशन, हर रिश्ते में एंजाइटी हो।

शोषण होने लगे। आत्मसम्मान गिरने लगे। मामूली निर्णय भी न ले पाएं। काम और स्वास्थ्य प्रभावित हो। अंतिम बात-याद रखें, इस पूरी एक्सरसाइज का मकसद आपको जिद्दी, बहस करने वाला या असंवेदनशील बनाना नहीं है। इसका उद्देश्य सिर्फ इतना है कि आप बिना डर के अपनी बात कह सकें। अपनी राय और अपनी असहमति व्यक्त कर सकें।

6 महीने से आ रहे पत्र जिसमे सौरव गांगुली, पत्नी डोना को जान से मारने की धमकी, 2 लेटर मिले, लिखा- सबको खत्म कर देंगे

कोलकाता। भारतीय टीम के पूर्व कप्तान और बीसीसीआई के पूर्व अध्यक्ष सौरव गांगुली को जान से मारने की धमकी मिली है। कुरियर से भेजे गए धमकी भरे पत्र में सौरव समेत उनकी पत्नी डोना गांगुली और उनके स्टाफ को जान से मारने की बात कही गई। गांगुली परिवार ने कोलकाता के ठाकुरपुकुर पुलिस स्टेशन में इसकी शिकायत दर्ज कराई है। सीएबी ऑफिस में कुरियर से आया पैकेट-शिकायत के अनुसार सोमवार को बंगाल क्रिकेट संघ (सीएबी) के दफ्तर में एक कूरियर पैकेट पहुंचा। इसमें अंग्रेजी में लिखे दो लेटर मिले। इनमें बेहद आक्रामक और हिंसक भाषा का इस्तेमाल किया गया था। गांगुली परिवार को इस तरह के पत्र पिछले 6 महीने से लगातार मिल रहे थे। शुरुआती दिनों में परिवार ने इन्हें किसी सिरफिरे फैन या निजी नाराजगी जताने वाले व्यक्ति की हरकत समझकर नजरअंदाज कर दिया था। पीटीआई ने मामले की जांच कर रहे एक पुलिस अधिकारी के हवाले से लिखा-'हम शिकायत को गंभीरता से ले रहे हैं और जांच जारी है। जिम्मेदार व्यक्ति की पहचान के लिए लेटर्स, उनके सोर्स और कूरियर की जानकारी की जांच की जा रही है।' 3 पॉइंट्स पर जांच जारी-पुलिस पत्रों भेजने वाले की पहचान और उसकी वजह पता करने के साथ लेटर्स के सोर्स और कूरियर के पूरे रूट की भी जांच रही है। शुरुआती जांच में सामने आया है कि पैकेज कूरियर के जरिए भेजे गए हो सकते हैं। पुलिस को शक है कि उत्तर 24 परगना जिले के बेलघरिया के किसी व्यक्ति ने इन्हें भेजा है। पुलिस एक सिम कार्ड की भी जांच कर रही है। संबंधित कूरियर एजेंसी से संपर्क कर भेजे गए सामान की जानकारी मांगी गई है। गांगुली ने 16 साल इंटरनेशनल क्रिकेट खेला-गांगुली ने 1992 में वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे डेब्यू किया और 1996 में इंग्लैंड के लॉर्ड्स मैदान पर टेस्ट डेब्यू करते हुए 131 रन की शानदार पारी खेली।अपने इंटरनेशनल करियर में 113 टेस्ट मैचों में 7,212 रन और 311 वनडे में 11,363 रन बनाए।

उन्होंने टेस्ट में 16 और वनडे में 22 शतक जड़े। वे साल 2000 में भारत के कप्तान बने। गांगुली की कप्तानी में भारत ने विदेशों में कई ऐतिहासिक टेस्ट मैच जीते और 2003 वर्ल्ड कप फाइनल तक का सफर तय किया। 2002 में भारत को चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में पहुंचाया।

फिर श्रीलंकाई कप्तान सनथ जयसूर्या के साथ ट्रॉफी साझा की।

इसी साल लॉर्ड्स में नेटवेस्ट ट्रॉफी जीती। 2008 में इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास लिया था।

10 साल का बेटा गाली देने लगा है,स्कूल के दोस्तों से एडल्ट गालियां सीख रहा है, बच्चे को बाहर के प्रभाव से कैसे बचाएं?

जयपुर। ऐसा होना बहुत जगहों पे देखा जाता हैं जब बच्चा घर के प्रोटेक्टेड माहौल को छोड़ बहार निकलता हैं वहां उसका परिचय किस्से होता हैं और उसका परिवेश कैसा हैं महत्वपूर्ण हैं इसी विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड काउंसलर, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से -सवाल- मैं यूपी के आगरा से हूं। मेरा बेटा 10 साल का है। वह पढ़ने-लिखने में काफी अच्छा है। लेकिन हाल ही में एक घटना ने हमें सोचने पर मजबूर कर दिया। किसी छोटी बात पर उसने एडल्ट गाली (फाउल वर्ड) इस्तेमाल की। जब हमने प्यार से पूछा कि उसने यह कहां सीखा, तो बताया कि स्कूल में उसके दोस्त भी ऐसा बोलते हैं। हम घर में हमेशा सही भाषा का इस्तेमाल करते हैं और उसे अच्छे व्यवहार की सीख देते हैं। ऐसे में मुझे समझ नहीं आ रहा कि सही माहौल के बावजूद वह बाहर से ऐसी चीजें कैसे सीख रहा है। उसे बाहरी इन्फ्लुएंस से कैसे बचाएं और गाली देना गलत है, यह कैसे समझाएं? प्लीज गाइड मी। जवाब- सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि 8-12 साल की उम्र में बच्चे अपने आसपास की भाषा, व्यवहार और रिएक्शन बहुत तेजी से कॉपी करते हैं। इसलिए अगर बच्चा गाली दे तो इसका मतलब यह नहीं कि उसकी परवरिश गलत हो रही है। बच्चे गाली का मतलब अक्सर बिना समझे 'मजेदार', 'कूल' या 'अटेंशन पाने वाला शब्द' मानकर दोहराते हैं। यहां सबसे जरूरी बात यह है कि इस पर माता-पिता कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। पहले ये समझें कि बच्चे आखिर गाली कैसे सीखते हैं। बच्चे गाली कैसे सीखते हैं? बच्चे अपने आसपास के माहौल को देखकर, सुनकर और उसकी नकल करके भाषा सीखते हैं। कई बार उन्हें किसी शब्द का मतलब भी नहीं पता होता, लेकिन वह दूसरों की प्रतिक्रिया देखकर उसे दोहराने लगते हैं। इसलिए यह समझना जरूरी है कि बच्चा गाली कहां से और किन परिस्थितियों में सीख रहा है, तभी उसे रोका जा सकता है। आमतौर पर बच्चे इन वजहों से गाली सीखते हैं- दूसरो से सुनकर, घर के माहौल, स्कूल के दोस्तों से, मो/टीवी कंटेंट से। बच्चे गाली क्यों देते हैं? हर बार गाली देना बदतमीजी या खराब परवरिश की निशानी नहीं है। छोटे बच्चे अक्सर किसी का ध्यान आकर्षित

करने, अपनी भावनाएं व्यक्त करने या दोस्तों के बीच खुद को बड़ा और स्मार्ट दिखाने के लिए ऐसे शब्द बोल देते हैं। कई बार वे गुस्सा, निराशा या हताशा को शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाते, इसलिए भी गाली का सहारा लेते हैं। बच्चे गली क्यों देते हैं- अटेंशन पाने के लिए। 'कूल' दिखने के लिए। गुस्सा जताने के लिए। भावनाएं व्यक्त करने के लिए। पेरेंट्स क्या करें? सबसे पहले शांत माहौल में बच्चे से बात करें। उससे पूछें- 'क्या तुम्हें पता है इसका मतलब क्या होता है?' 'अगर कोई तुम्हें ऐसे बोले तो कैसा लगेगा?' इस तरह की बातचीत बच्चे की सोचने-समझने की क्षमता बढ़ाती है। बच्चे को बताना जरूरी है कि ये शब्द दूसरों को चोट पहुंचा सकते हैं। बच्चे को क्या समझाना चाहिए?उसे यह बताना जरूरी है कि हर शब्द का अपना एक मतलब और असर होता है। इसके लिए बच्चे से कहें- गाली देना 'बड़ा' या 'स्मार्ट' होने की निशानी नहीं है। गुस्सा, मजाक या निराशा जताने के और भी तरीके हो सकते हैं। आप उसे कुछ 'रिप्लेसमेंट वर्ड्स' भी सिखा सकते हैं। जैसे गुस्सा आए तो गाली की जगह 'ओह नो', 'ये सही नहीं है', 'मुझे बहुत गुस्सा आ रहा है' जैसे शब्द इस्तेमाल करे। बच्चे गली दे तो क्या करें? दोस्त बनकर बात करें। सही-गलत का फर्क बताएं। बिना जजमेंट के सुनें। उदाहरण देकर समझाएं। खुद रोल मॉडल बनें। शब्दों की ताकत बताएं। पॉजिटिव शब्द सिखाएं । टीचर्स से बात करें। ऑनलाइन कंटेंट मॉनिटर करें। घर में खुशी का माहौल बनाएं। स्थिति को संभालने के 5 प्रभावी तरीके- ऐसी स्थिति में पेरेंट्स को रोल नहीं, रिस्पॉन्स बदलने की जरूरत है। 1. उस पल की प्रतिक्रिया तय करेगी आगे का व्यवहार- जब बच्चा पहली बार गाली देता है तो पेरेंट्स अक्सर शॉक या गुस्से में रिएक्ट करते हैं। लेकिन यही सबसे बड़ी गलती होती है। क्या करें? शांत रहें और उस समय ज्यादा प्रतिक्रिया न दें। बाद में अकेले में बात करें। क्यों? अगर आप ओवररिएक्ट करेंगे, तो बच्चा या तो डर जाएगा या वही शब्द बार-बार अटेंशन पाने के लिए इस्तेमाल करेगा। 2. 'मत बोलो' की जगह 'क्यों नहीं बोलना' समझाएं-बच्चे को सिर्फ रोकना काफी नहीं होता, उसे समझना जरूरी है कि गाली देना गलत क्यों है। कैसे समझाएं? 'ये गाली है, इससे सामने वाले को दुख होता है।''अगर कोई तुम्हें ऐसे बोले तो तुम्हें कैसा लगेगा?' इससे बच्चे में दूसरों की भावना समझने की क्षमता विकसित होती है। 3. 'विकल्प' देना जरूरी-अगर बच्चा गुस्सा या फ्रस्ट्रेशन निकालने के लिए गाली देता है तो उसे बताएं कि गुस्सा आने पर- अपनी फीलिंग्स शब्दों में बताए। थोड़ा रुककर बोले। इसके लिए सही वाक्य हो सकते हैं- 'मुझे अच्छा नहीं लग रहा।' 'मुझे गुस्सा आ रहा है।' यह टेक्नीक 'बिहेवियर रिप्लेसमेंट' कहलाती है और बहुत इफेक्टिव होती है। 4. दोस्तों से दूर करने की बजाय समझ विकसित करें-

बहुत से पेरेंट्स सोचते हैं कि बच्चे को उन दोस्तों से दूर कर देना चाहिए। लेकिन यह हमेशा प्रैक्टिकली पॉसिबल नहीं होता और उल्टा बच्चा रिबेल (विद्रोही) भी बन सकता है। बेहतर तरीका क्या है? बच्चे से खुलकर बात करें। उससे पूछें- 'तुम्हें क्या लगता है, ये सही है?' 'अगर सब कर रहे हैं, तो क्या वो सही है?' इससे बच्चे में इंडिपेंडेंट थिंकिंग विकसित होती है। 5. घर का माहौल ही सबसे बड़ा फिल्टर है-बच्चा बाहर के लोगों इन्फ्लुएंस हो सकता है, लेकिन वह क्या अपनाएगा, यह घर तय करता है। क्या करें? घर में रिस्पेक्टफुल बातचीत करें। मजाक में भी गाली से बचें। अच्छे व्यवहार पर तुरंत तारीफ करें। फैमिली वैल्यूज को रीइन्फोर्स करें। याद रखें, बच्चे सुनने से ज्यादा देखने से सीखते हैं। क्या बिल्कुल नहीं करना चाहिए? इस स्थिति में पेरेंट्स की कुछ प्रतिक्रियाएं बच्चे को गलत दिशा में ले जा सकती हैं- पब्लिक में डांटना या शर्मिंदा करना। 'तुम बिगड़ गए हो' जैसी बातें कहना। बहुत ज्यादा सख्ती दिखाना। पूरी तरह कंट्रोल करने की कोशिश करना। बच्चे की बात सुने बिना फैसला देना। ओवररिएक्ट करना।गुस्से में मारना-पीटना। इससे बच्चा या तो डर जाता है या छुपकर वही व्यवहार जारी रखता है। आउटर इंफ्लुएंस से पूरी तरह बचाना संभव नहीं- बच्चे स्कूल, इंटरनेट, गेमिंग और सोशल सर्कल से कई अच्छी-बुरी चीजें सीखते हैं। इसलिए लक्ष्य यह नहीं होना चाहिए कि वह कभी गलत शब्द सुने ही नहीं। असली लक्ष्य यह होना चाहिए कि बच्चा सही-गलत में फर्क समझना सीख जाए। यानी बच्चा अगर बाहर गाली सुनता भी है, तब भी वह खुद तय कर सके कि उसे कौन-सी भाषा इस्तेमाल करनी है। यही इमोशनल और सोशल मैच्योरिटी है। कब सावधान होने की जरूरत है? अगर बच्चा-लगातार आक्रामक भाषा इस्तेमाल करे। दूसरों को नीचा दिखाने लगे। गुस्से पर कंट्रोल न रहे। व्यवहार में अचानक बड़ा बदलाव दिखे। आपकी बातें बिल्कुल न सुने। तो यह बिहेवियरल इश्यू बन सकता है। ऐसे में चाइल्ड साइकोलॉजिस्ट या काउंसलर की मदद लेना बेहतर है। अंत में यही कहूंगी कि बच्चे को बाहरी दुनिया से पूरी तरह अलग रखना संभव नहीं है। लेकिन उसे सही सोच, संवेदनशीलता और सम्मानजनक व्यवहार सिखाया जा सकता है। अगर घर में खुला माहौल हो, जहां बच्चा बिना डर अपनी बात कह सके और माता-पिता धैर्य के साथ उसे गाइड करें, तो वह धीरे-धीरे सही और गलत में फर्क समझने लगता है।

बुरी जीत से अच्छा है, शान से हार जाएं

1960 में दक्षिण अफ्रीका में जन्मे केविन कार्टर रंगभेद युग में पले-बढ़े थे। गोरे होने के नाते उन्होंने विशेषाधिकारों का आनंद लिया, पढ़ाई की और वायुसेना में शामिल हुए। 1980 में भेदभाव का सामना कर रहे एक अश्वेत का बचाव करने पर उन्हें पीटा गया। यह घटना उनकी जाग्रति का महत्वपूर्ण मोड़ बनी। 1983 में उन्होंने कुछ भयानक बम विस्फोट देखे और हिंसा से खिन्न होकर उन्होंने रंगभेद की भयावहता को उजागर करने के लिए खुद को समर्पित कर दिया। 1984 में वे जोहान्सबर्ग स्टार अखबार के फोटोग्राफर बन गए। अगले 10 वर्षों में केविन को विरोध प्रदर्शनों, अंतिम संस्कारों और पुलिस व रंगभेद विरोधी कार्यकर्ताओं के बीच झड़पों की तस्वीरें लेने के लिए कई बार गिरफ्तार किया गया। 1993 में कार्टर को सूडान में एक असाइनमेंट मिला। सूखे और गृहयुद्ध से बर्बाद इस देश पर दुनिया के मीडिया ने तब तक बहुत कम ध्यान दिया था। केविन संयुक्त राष्ट्र के एक फूड-कैम्प में पहुंचे। वहां उन्होंने एक बच्ची को देखा, जो अकाल से ग्रस्त होकर मिट्टी में पड़ी थी। उसके बगल में एक गिद्ध लालचपूर्ण-धैर्य के साथ उसके मरने का इंतजार कर रहा ?था। केविन के शरीर की हर रग उस भयावह दृश्य को देखकर चीख उठी। उन्होंने यंत्रवत ही कैमरा उठाया और अनेक छायाचित्रों में हर कोण से उस बच्ची की पीड़ा को कैमरे में कैद कर लिया। उन्हें इस त्रासदी को दुनिया के सामने लाने वाला भयावह दृश्य मिल गया था। कुछ खबरों के मुताबिक केविन ने गिद्ध को भगा दिया था और उस कृशकाय बच्ची को उठाकर उसके कानों में फुसफुसाते हुए उसे सांत्वना दी थी कि जल्द ही सब ठीक हो जाएगा। फिर उन्होंने बच्ची को बचाव दल को सौंप दिया था। लेकिन उन्हें नहीं पता था कि यह तस्वीर उन्हें आजीवन परेशान करेगी। वापस लौटने पर उन्हें इस तस्वीर के लिए प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजा गया। लेकिन प्रशंसा के साथ-साथ आलोचना और पड़ताल भी हुई। कई लोगों ने उनके इरादों पर सवाल उठाए और उन पर अपने निजी मकसद के लिए एक बच्ची की पीड़ा का फायदा उठाने का आरोप लगाया। अप्रैल 1994 में जब केविन को पुलित्जर पुरस्कार मिला तो यह उनके लिए सबसे बड़ी उपलब्धि होनी चाहिए थी। लेकिन वह पुरस्कार उन्हें अपने उस असहनीय अपराध-बोध की याद दिलाने लगा। मुझे 1994 में जोहान्सबर्ग में केविन से मिलने का मौका मिला था, जब मैं नेल्सन मंडेला के दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति बनने की घटना को कवर कर रहा था। इसके चार महीने बाद ही केविन ने 33 साल की उम्र में आत्महत्या कर ली। उसी साल (1994) और उसी देश (सूडान) से आठ साल के गुओर मारिअल गृह युद्ध के दौरान दक्षिण सूडान के एक शरणार्थी शिविर से भाग निकले थे। एक रात सैनिकों ने उनके घर पर छापा मारा था और एक राइफल के प्रहार से उनका जबड़ा तोड़ दिया था। वे बेहोश हो गए। बाद में उन्होंने खुद को एक शरणार्थी शिविर में पाया। उनके परिवार के 28 सदस्य मारे गए, लेकिन वे मिस्र भागने में सफल रहे, और फिर 16 साल की उम्र में स्थायी रूप से अमेरिका चले गए। चूंकि वे बचपन से ही सशस्त्र विद्रोहियों से भागते आ रहे थे, इसलिए 28 की उम्र में उन्हें 2012 के लंदन ओलिम्पिक में मैराथन के लिए प्रतिस्पर्धा करने का अवसर मिला। तब सवाल उठा कि वे किस देश का झंडा लेकर चलेंगे? वे अमेरिकी नागरिक नहीं थे और उनकी मातृभूमि दक्षिण सूडान को 2011 में ही एक स्वतंत्र देश का दर्जा मिला था।

वह देश ओलिम्पिक में सम्मिलित होने की पात्रता को पूरा नहीं कर पाया था। यही कारण था कि जब गुओर के समक्ष सूडान का झंडा लेकर चलने की पेशकश की गई, तो उन्होंने विनम्रता से मना कर दिया। क्योंकि सूडान से हुआ गृहयुद्ध ही उनके परिवार की हत्या के लिए जिम्मेदार था।

उन्होंने ओलिम्पिक ध्वज उठाया और वे पहले या तीसरे नहीं, बल्कि 47वें स्थान पर रहे। लेकिन पूरी दुनिया और मीडिया ने उनकी 'विजयी' हार का जश्न मनाया, क्योंकि उन्होंने मात्र एक साल पुराने एक देश को पहचान दी थी।

फंडा यह है कि तय करें हमारे बच्चों को क्या चुनना चाहिए- एक विजयी हार को अपनाना या एक बुरी जीत का आनंद लेना।

चीन से मेलजोल बढ़ाकर क्षेत्र को खतरे में डाल रहे हैं ट्रम्प

विदेश-नीतियां रातों-रात नहीं बदलतीं। अकसर उन्हें बदलते बयानों, नौकरशाही के समायोजनों और कूटनीतिक प्राथमिकताओं में हेरफेर के जरिये धीरे-धीरे ध्वस्त किया जाता है। अमेरिका की हिन्द-प्रशांत रणनीति भी इसका अपवाद नहीं है। एक दशक पहले, जापानी प्रधानमंत्री शिन्जो आबे ने स्वतंत्र और खुले हिन्द-प्रशांत के विचार को सामने रखा था। इसके पीछे यह सोच थी कि हिन्द और प्रशांत महासागर ऐसा रणनीतिक क्षेत्र हैं, जिस पर किसी ताकत को हावी होने से रोकने के लिए प्रतिबद्ध लोकतंत्रों का गठबंधन बनाना होगा। बाद में अमेरिका ने भी इस दृष्टिकोण को अपनाया और क्वाड को पुनर्जीवित किया। इसके सदस्यों- ऑस्ट्रेलिया, भारत, जापान, अमेरिका को क्षेत्रीय शक्ति संतुलन के स्तम्भ माना गया। लेकिन अब डोनाल्ड ट्रम्प अमेरिका और चीन से मिलकर बने जी2 के विचार को आगे बढ़ा रहे हैं। मुक्त और खुले हिन्द-प्रशांत दृष्टिकोण के विपरीत जी2 अवधारणा यह मानती है कि दुनिया की दो सबसे बड़ी ताकतों को ही आपसी बातचीत के जरिये क्षेत्रीय संतुलन को गढ़ना चाहिए। यह दृष्टिकोण बहुपक्षीय कूटनीति की कीमत पर द्विपक्षीय सौदेबाजी को बढ़ावा देता है, जिससे मिडिल-पावर्स का रणनीतिक महत्व कम हो जाता है। इसकी स्थिरता काफी हद तक वॉशिंगटन और बीजिंग के नेताओं की व्यक्तिगत केमिस्ट्री और बदलते कैलकुलेशंस पर निर्भर करती है। आज तो ट्रम्प, शी जिनपिंग के प्रति नरम होते दिख रहे हैं, लेकिन यह कहना मुश्किल है कि कल क्या होगा। इसे ट्रम्प की गैर-परम्परागत कूटनीति का एक और उदाहरण बताया जा सकता है, जो अकसर द्विपक्षीय सौदेबाजी पर जोर देती है। लेकिन उनके प्रशासन ने क्वाड को भी कम प्राथमिकता दी है और उनकी नवीनतम राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति में इस समूह का केवल एक बार ही संक्षिप्त उल्लेख किया गया है। अमेरिकी रक्षा विभाग ने भी इसे फिर से इंडो-पैसिफिक के बजाय केवल पैसिफिक कहना शुरू कर दिया है। यह कोई फौरी कूटनीतिक गड़बड़ी नहीं है। ट्रम्प के राज में खुले तौर पर हिन्द-प्रशांत रणनीति बिखर रही है। पिछले दशक में आबे की हिन्द-प्रशांत दृष्टि ने जापान की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति को आधार दिया था, जिसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना था कि चीन पूर्वी एशिया में सैन्य-दबाव न बनाए। यदि अमेरिका पश्चिमी-प्रशांत पर ध्यान केंद्रित करता है, तो जापान के सामने चीन की समुद्री ताकत का सामना करने का खतरा होगा। इस सबमें भारत भी एक केंद्रीय स्थान रखता है। यह पिछले महीने जापान की प्रधानमंत्री ताकाइची की नई दिल्ली की यात्रा के दौरान स्पष्ट हो गया था, जब उन्होंने और नरेंद्र मोदी ने इंडो-पैसिफिक ढांचे के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को फिर से दोहराया था। वे एआई और महत्वपूर्ण खनिजों से लेकर रक्षा प्रौद्योगिकी तक के क्षेत्रों में सहयोग का विस्तार करने पर सहमत हुए थे। जापान के लिए, भारत सिर्फ एक और रणनीतिक भागीदार नहीं है। अपने विशाल आकार, मजबूत सैन्य शक्ति, गतिशील अर्थव्यवस्था और हिन्द महासागर में अपनी प्रभुत्वशाली स्थिति के साथ भारत हिन्द-प्रशांत वास्तुकला का अडिग पश्चिमी स्तम्भ है। भारत चीन के सामने दो-मोर्चों वाली दुविधा पेश करता है, जो चीनी सैन्य योजनाकारों को अपने फोकस और संसाधनों को दो जगहों पर विभाजित करने के लिए मजबूर करता है। अगर चीन को भारत के साथ अपनी लंबी, तनावपूर्ण हिमालयी सीमा की निगरानी और हिन्द महासागर व्यापार मार्गों की रक्षा न करनी पड़ती, तो वह पश्चिमी-प्रशांत में भारी संख्या में बल केंद्रित कर पाता। इंडो-पैसिफिक से इंडो को हटाकर ट्रम्प प्रशासन ने इस महत्वपूर्ण गतिशीलता की अपनी समझ की कमी को उजागर किया है। जी2 के साथ मिलकर, यह बदलाव चीन के लिए एक महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक और भू-राजनीतिक जीत के समान है। आखिरकार, चीनी नेताओं का लंबे समय से यह तर्क रहा है कि इंडो-पैसिफिक रणनीति का वास्तविक उद्देश्य चीन को रोकना और एशिया-प्रशांत देशों को अमेरिकी प्रभुत्व के मोहरे बनाना था। वे एक प्रशांत-केंद्रित ढांचे को कहीं अधिक पसंद करेंगे, जिसमें अमेरिका और चीन सीधे बातचीत करें और अन्य क्षेत्रीय शक्तियां जैसा कहा जाए वैसा करें। ट्रम्प जी2 के विचार को आगे बढ़ा रहे हैं। हिन्द-प्रशांत दृष्टिकोण के विपरीत यह अवधारणा यह मानती है कि दुनिया की दो सबसे बड़ी ताकतों अमेरिका और चीन को ही आपसी बातचीत के जरिये क्षेत्रीय संतुलन को गढ़ना चाहिए। (प्रोजेक्ट सिंडिकेट,ब्रह्मा चेलानी)

एक लोकतंत्र में जनता को विश्वास में लेना जरूरी है

अक्टूबर 1962 में चीन ने भारत के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया था। सरकार ने राष्ट्रीय आपातकाल घोषित किया। उस समय संसद में सबसे छोटी पार्टियों में से एक जनसंघ से पहली बार राज्यसभा सांसद बने 36 वर्षीय एक युवा नेता ने प्रधानमंत्री नेहरू से संसद का विशेष सत्र बुलाने का अनुरोध किया। उनका नाम अटल बिहारी वाजपेयी था। पं. जवाहरलाल नेहरू की कांग्रेस सरकार को उस समय लोकसभा में दो-तिहाई बहुमत प्राप्त था। 72 वर्ष के नेहरू वाजपेयी से ठीक दोगुनी आयु के भी थे। लेकिन नेहरू ने उनके अनुरोध पर सहमति जताई और अपनी ही पार्टी के सदस्यों के इस सुझाव को खारिज कर दिया कि यह एक 'गुप्त सत्र' होना चाहिए। जब ??संसद की बैठक हुई, तो वाजपेयी ने सरकार पर तीखा हमला किया। लेकिन नेहरू ने इसे देशभक्ति के खिलाफ नहीं माना। इतिहास को हमारे लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभानी चाहिए। जब ऑपरेशन सिंदूर चल रहा था, तो भारत के लोग सरकार के साथ एकजुट थे और हमारे बहादुर सशस्त्र बलों का पूरा समर्थन किया गया, जिन्होंने सफलतापूर्वक लड़ने के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी। हालांकि, अब जब युद्ध विराम हो गया है, तो ऑपरेशन से संबंधित किसी वैध सवाल को यह कहकर नहीं टाला जा सकता कि यह राष्ट्र-विरोधी है। लोकतंत्र में सरकार को राष्ट्रीय हित की सीमाओं के भीतर लोगों को विश्वास में लेना चाहिए और किसी सवाल को टालना नहीं चाहिए। खास तौर पर, इसको लेकर बहुत प्रासंगिक सवाल उठ रहे हैं कि युद्ध को अचानक क्यों समाप्त कर दिया गया। युद्ध में हमने कितने विमान खोए या नहीं खोए, इसका सटीक विवरण महत्वपूर्ण नहीं है। क्योंकि किसी भी युद्ध में दोनों पक्षों को कुछ ना कुछ नुकसान तो होगा ही, और हमारी सरकार ने पाकिस्तान में महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों को हुए नुकसान के पर्याप्त विजुअल प्रमाण भी उपलब्ध कराए हैं। लेकिन अब सार्वजनिक वृत्त में इस बात पर कुछ गंभीर विरोधाभास सामने आए हैं कि युद्ध विराम कैसे और क्यों हुआ। अमेरिकी वाणिज्य मंत्री हॉवर्ड लुटनिक ने 23 मई को अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय व्यापार न्यायालय में शपथ लेकर कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम 'केवल तभी संभव हो सका' जब ट्रम्प ने उसमें हस्तक्षेप किया और 'एक फुल-स्केल परमाणु युद्ध को टालने' के लिए दोनों देशों को व्यापार-पहुंच की पेशकश की। हालांकि इससे पहले 13 मई को भारतीय विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने सार्वजनिक तौर पर इसके ठीक उलट बात कही थी। अपनी प्रेस ब्रीफिंग में उन्होंने कहा कि 7 से 10 मई के बीच भारतीय और अमेरिकी नेताओं के बीच केवल 'बातचीत' हुई थी और 'व्यापार के मुद्दों पर कोई चर्चा नहीं हुई थी।' जायसवाल ने आगे कहा कि युद्ध विराम भारत और पाकिस्तान के बीच 'सीधे संपर्क' के जरिए हुआ था, 'अमेरिकी मध्यस्थता के जरिए नहीं'। पाठक इस बात से सहमत होंगे कि अमेरिका के सबसे वरिष्ठ मंत्रियों में से एक के द्वारा न्यायालय में शपथ लेकर कही गई बात और हमारे आधिकारिक प्रवक्ता द्वारा प्रेस वार्ता में दिया गया बयान- दोनों एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं। भारतीय जनता इन विपरीत रुखों को कैसे समझे? यह भी रहस्य बना हुआ है कि राष्ट्रपति ट्रम्प युद्ध विराम की घोषणा कैसे कर सकते हैं, जबकि हमारे आधिकारिक प्रवक्ता ने सार्वजनिक रूप से कहा है कि भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम 'प्रत्यक्ष संपर्क' के माध्यम से हुआ है। फिर इस मामले में अमेरिका की क्या भूमिका थी? युद्ध कब छेड़ा जाए और युद्ध को समाप्त करने का सबसे अच्छा समय कौन-सा है- इसको लेकर हमें निर्वाचित सरकार पर भरोसा करना चाहिए। लेकिन सरकार को भी और अधिक पारदर्शी होना चाहिए। ऐसा कहना 'पाकिस्तानी एजेंट' होना नहीं है। अगर सार्वजनिक क्षेत्र में सूचना पर तथ्यात्मक स्पष्टीकरण का प्रावधान है, तो जनता को इसे पूछने का अधिकार है। चुनावी लाभ के लिए तिरंगा यात्रा निकालना इसका उत्तर नहीं है। युद्ध का पक्षपातपूर्ण राजनीतिकरण भले राजनीति के लिए आकर्षक हो, लेकिन इसमें कुछ सतहीपन और अवसरवादिता की झलक मिलती है। लोकतंत्र में परिपक्व-संवाद उसकी मजबूती का प्रतीक है, कमजोरी का नहीं। युद्ध विराम का अमेरिकी संस्करण हमारे संस्करण से अलग क्यों है- सरकार को इसे स्पष्ट करना चाहिए, या तो संसद के विशेष सत्र के माध्यम से या सर्वदलीय ब्रीफिंग के जरिए। अतीत में नेहरू और वाजपेयी द्वारा स्थापित ऐतिहासिक उदाहरण को हमें नहीं भूलना चाहिए। अब जब युद्ध विराम हो गया है, तो ऑपरेशन ??सिंदूर से संबंधित किसी वैध सवाल को यह कहकर नहीं टाला जा सकता कि यह राष्ट्र-विरोधी है। सरकार को राष्ट्रीय हित की सीमाओं के भीतर लोगों को विश्वास में लेना चाहिए। (ये लेखक के अपने विचार हैं।)

भारत अब केवल कूटनीति पर ही निर्भर नहीं रहने वाला है

अब जब ऑपरेशन सिंदूर को एक साल से अधिक होने आया है, उससे जुड़े कुछ निष्कर्षों को ठीक से समझ लेना जरूरी है। भारत की सेना ने पाकिस्तानी क्षेत्र में आतंकवादी ठिकानों और अन्य फेसिलिटीज पर जोरदार लेकिन ऐहतियाती और टारगेटेड हमला किया था।यहां तक कि आक्रमण का समय भी रात को इसलिए चुना गया ताकि नागरिकों को होने वाली क्षति से बचा जा सके। पाकिस्तान हाई-अलर्ट पर था, इसके बावजूद भारत ने सफलतापूर्वक उसकी डिफेंसिव-लाइंस को भेद दिया और अपने लक्ष्यों पर प्रहार करके कुछ आतंकवादियों का खात्मा करने में सफलता पाई। याद रहे कि इन आतंकवादियों के अंतिम संस्कार में उच्च-स्तरीय पाकिस्तानी अधिकारी शामिल हुए थे।इस ऑपरेशन के बाद पाकिस्तान से भारत के इंगेजमेंट्स की शर्तें हमेशा के लिए बदल गई हैं, क्योंकि अब भारत ने सैन्य-कार्रवाई को लेकर झिझक छोड़ दी है। एक अरसे तक कश्मीर मुद्दे के 'अंतरराष्ट्रीयकरण' के अंदेशे ने भारत को निरर्थक कूटनीतिक प्रक्रियाएं अपनाने के लिए प्रेरित किया था, लेकिन उनसे हमें बहुत कम हासिल हो सका। यहां तक ??कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की आतंकवाद प्रतिबंध समिति ने भी लंबे समय तक पाकिस्तान को अपने एक स्थायी सदस्य की छत्रछाया में रहने की अनुमति दी है।भारत अंतरराष्ट्रीय कूटनीति को छोड़ नहीं रहा है, लेकिन अब वह केवल उसी पर निर्भर भी नहीं रहेगा। इसके बजाय, भारत अब आतंकवाद का सैन्य-बल से जवाब देगा और किसी भी जवाबी कार्रवाई का स्पष्ट और दृढ़ संकल्प के साथ सामना भी करेगा। लेकिन भारत पाकिस्तान को उसके परमाणु हथियारों की धौंस दिखाने की अनुमति नहीं देने वाला।2016 में सीमा पार सर्जिकल स्ट्राइक से लेकर 2019 में खैबर पख्तूनख्वा में हवाई हमले तक, भारत ने अपने अभियानों के दायरे का उत्तरोत्तर विस्तार किया है और ऐसा करते हुए नियंत्रण रेखा और अंतरराष्ट्रीय सीमा दोनों को लांघा है। ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान के गढ़ में प्रहार किए गए। भारत ने दिखाया है कि आतंकवाद का मुकाबला परमाणु-युद्ध को आमंत्रित किए बिना भी एक संतुलित सैन्य-प्रतिक्रिया से किया जा सकता है।पाकिस्तान का सैन्य नेतृत्व अब जब भविष्य में कश्मीर या अन्य जगहों पर तबाही मचाने के लिए आतंकवादियों को भेजने पर विचार करेगा, तो पहले उसे खुद से पूछना होगा कि क्या वह भारत के जवाबी हमले के लिए भी तैयार है? उलटे इससे पाकिस्तान के लोगों को पानी की किल्लत हो सकती है। भारत ने सिंधु जल संधि को स्थगित करके यही संदेश दिया था।जहां उसके बाद से भारत ने जलप्रवाह को मोड़ने के लिए कोई इच्छा नहीं दिखाई है, लेकिन इस संदेश ने उपमहाद्वीप की भू-राजनीति को मौलिक रूप से बदल दिया है। भारत अब शांति के लिए बातचीत भर नहीं कर रहा है; वह पानी की निरंतर आपूर्ति के बदले में आतंकवाद की समाप्ति की मांग भी कर रहा है।ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत ने दुनिया को यह भी याद दिलाया है कि पाकिस्तान के आतंकवाद से कितने गहरे ताल्लुक हैं। युद्ध विराम को अंजाम देने वाली परदे के पीछे की बातचीतों के बारे में नए विवरण निस्संदेह सामने आएंगे, लेकिन यह निर्विवाद है कि यह भारतीय सैन्य दबाव के बिना संभव नहीं था।इसके बाद अब निकट-भविष्य में भारत और पाकिस्तान के द्विपक्षीय संबंधों में कोई खास बदलाव होने की संभावना नहीं है, क्योंकि ऐसी कोई भी बातचीत-खासकर कश्मीर मुद्दे पर-फिलहाल दूर की संभावना है।वैसे भी कश्मीर भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव का मूल कारण नहीं है, यह तो पाकिस्तान द्वारा भारतीय क्षेत्र पर अपने दावों को सही ठहराने के लिए फैलाया गया एक मिथक है। यह नैरेटिव एक ऐसे कट्टरपंथी तर्क पर आधारित है- जिसे हाल ही में पाकिस्तान के सेना प्रमुख आसिम मुनीर ने दोहराया था- कि मुसलमान गैर-मुस्लिम बहुसंख्यक देश में नहीं रह सकते।भारत व पाकिस्तान में कोई तुलना नहीं है।

भारत की जीडीपी पाकिस्तान से 11 गुना अधिक है और उसकी सैन्य-श्रेष्ठता के आगे भी पाकिस्तान नहीं टिकता। पाकिस्तान में उसकी फौज को हासिल अत्यधिक अधिकार, राष्ट्रीय बजट पर नियंत्रण, चीन और तुर्किए के साथ रणनीतिक गठबंधन उसे सशस्त्र संघर्ष को बनाए रखने के लिए शक्तिशाली उपकरण प्रदान करते हैं, जबकि किसी भी पारंपरिक युद्ध में भारत हमेशा पाकिस्तान पर न केवल जीत हासिल करेगा, बल्कि उसे काफी नुकसान भी पहुंचा सकता है।

भारत ने सीमापार आतंकवाद का सामना करने में जैसी दृढ़ता दिखाई, उस पर वह गर्व कर सकता है।

अब भारत ने सैन्य-कार्रवाई को लेकर झिझक छोड़ दी है। एक अरसे तक कश्मीर मुद्दे के 'अंतरराष्ट्रीयकरण' के अंदेशे ने भारत को निरर्थक कूटनीतिक प्रक्रियाएं अपनाने के लिए प्रेरित किया था, लेकिन उनसे हमें क्या हासिल हुआ? (शशि थरूर)

'पॉटरी कला' को 'नया योग' क्यों कहा जा रहा है?

इस रविवार, वाट्सएप मैसेज का बैकलॉग चेक करते समय मैंने अपने एक दोस्त के स्टेटस पर तस्वीर देखी। वह क्ले से बनी कुछ सजावटी व प्राचीन चीजों के बीच खड़ा था। जब मैंने ये जानने के लिए तस्वीर पर क्लिक किया कि वो कहां है, तो मैं हैरान रह गया। सफेद पैंट-शर्ट पहने हुए उसके हाथ क्ले में भिड़े थे और वह लालटेन पकड़े था। जब मैंने उसे फोन किया, तो उसने मुझे एक और तस्वीर भेजी। इसमें हमारे कुछ अन्य परिचित भी उसके साथ रविवार की एक पॉटरी क्लास में पोज दे रहे थे। हर कोई पिछले तीन रविवार की क्लास में खुद की बनाई कलाकृति पकड़े था। पहले हफ्ते में उन्होंने कला सीखी, दूसरे हफ्ते में कप, गिलास या फूलदान बनाया और एक हफ्ते तक सूखने दिया। इस रविवार को उन्होंने उसे रंगा। उनके चेहरों पर सुंदर-उपयोगी वस्तुएं बनाने की खुशी झलक रही थी। तभी मुझे एहसास हुआ कि सिरेमिक व पॉटरी (क्ले या मिट्टी से कलात्मक चीजें बनाना) की दुनिया युवाओं के बीच लोकप्रिय हो रही है। यह स्थिरता व आत्म-अभिव्यक्ति का संगम है, जो उनकी व्यस्त जिंदगी में ताजगी भरी राहत प्रदान करती है। आज के समय में जब वेलनेस ट्रेंड्स तेजी से बदल रहे हैं, प्राचीनतम कलाओं में से एक पॉटरी एक बार फिर से लोकप्रिय हो रही है। कई युवा मानते हैं कि यह कला, मानसिक शांति और आराम का सही मिश्रण है, जो योग या ध्यान के समान एक चिकित्सीय अनुभव प्रदान करती है। चाहे आप रचनात्मक पुनरुत्थान की तलाश में हों, तनाव से राहत चाहते हों, या आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम खोज रहे हों, पॉटरी एक नया क्लासरूम बन गया है। पिछले आठ-दस वर्षों में यह अपमार्केट सर्कल में एक ट्रेंड बन गया है। 1 से 12 हफ्तों के ये कार्यक्रम शहरी युवाओं को आकर्षित कर रहे हैं? पहला कारण इसकी पहुंच है और दूसरा ध्यान केंद्रित करने वाला गुण। पहले क्ले पकाने के लिए भट्ठी एक बड़ी बाधा थी, पर आज ये छोटे एयर कंडीशंड स्टूडियो में उपलब्ध हैं। दबाव में काम करने वाले अधिकांश युवा समझ चुके हैं कि पॉटरी के चिकित्सीय लाभ हैं। मेरे एक मित्र ने कहा, 'ये ध्यान की तरह है, जो आपको दिनचर्या से अलग करने में मदद करता है।' अधिकांश शिक्षित लोग इस प्राचीन कला की ओर लौट रहे हैं क्योंकि यह न केवल विज्ञान है, जिसमें सामग्री, ऑक्साइड, फायरिंग, ग्लेजिंग का ज्ञान जरूरी है, बल्कि कला भी है, जिसमें पेंटिंग है। आप ताज्जुब कर रहे होंगे कि आखिर क्यों पॉटरी लोकप्रिय वेलनेस ट्रेंड बनता जा रहा है? इसके पीछे कई कारण हैं। 1. माइंडफुलनेस व मेडिटेशनः मिट्टी के साथ काम करने के लिए फोकस की जरूरत है, इससे मानसिक उथल-पुथल कम होती है। बार-बार चाक घुमाकर बर्तन बनाना या हाथ से आकार देना, दोनों ही क्रियाएं ध्यान की तरह शांतिप्रद और थेरेप्यूटिक होती हैं। 2. तनाव में कमीः मिट्टी को आकार देने का स्पर्श अनुभव व रचनात्मक प्रक्रिया दैनिक चिंताओं से ध्यान हटाने में मदद करती है। इसका सीधा असर होता है कि यह कोर्टिसोल को कम करता है। कोर्टिसोल एक ऐसा हार्मोन है जो तनाव और चिंता से जुड़ा होता है। 3. थेरेप्यूटिक लाभः कुछ लोगों के लिए शब्दों में अपनी बात कहना मुश्किल होता है। उनके लिए कुछ बनाना एक प्रकार का संवाद है। इसका एक स्पष्ट लाभ यह है कि यह स्क्रीन से डिस्कनेक्ट कर प्राकृतिक स्व के साथ जुड़ने का मौका देता है। पॉटरी मूर्त कला के माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति की अनुमति देता है। यह प्रक्रिया आत्म-सम्मान और उपलब्धि की भावना को बढ़ा सकती है।

4. शारीरिक लाभः फायदों की सूची में ये सबसे निचले क्रम पर हो सकते हैं। लेकिन मिट्टी को गूंथने, आकार देने और मोल्ड करने की शारीरिक क्रिया उन लोगों के लिए फायदेमंद हो सकती है जो शारीरिक चोटों से उबर रहे हैं।

मिट्टी के साथ काम करना फाइन मोटर स्किल्स और हाथ की दक्षता में सुधार कर सकता है।

फंडा यह है कि पॉटरी कला युवाओं को उनकी व्यस्त जिंदगी से बचने का मौका देता है। यह कला, माइंडफुलनेस और रिलैक्सेशन का मिश्रण है और इस तरह यह 'नया योग' बनती जा रही है।

संजय कुमार का कॉलमःराज्यों में क्षेत्रीय दल अपना जनाधार कायम रखे हुए हैं

बंगाल में टीएमसी की हार और उसके बाद कई दलों में हुए दलबदल ने क्षेत्रीय दलों की प्रासंगिकता को लेकर सवाल खड़े कर दिए थे। यह सच है कि इस समय क्षेत्रीय दल संकट का सामना कर रहे हैं, लेकिन उनके महत्व को समाप्त मान लेना अभी जल्दबाजी होगी। बंगाल में टीएमसी या दिल्ली में आप जैसे दलों की हार को क्षेत्रीय दलों के स्थायी पतन के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। पिछले चार लोकसभा चुनावों के साथ-साथ विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों में भी राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों के वोट शेयर में बहुत अधिक बदलाव नहीं आया है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि वोट शेयर किसी दल के अंतर्निहित जनाधार का सबसे बेहतर इंडिकेटर होते हैं। इसके अलावा मतदाता लोकसभा चुनावों की तुलना में विधानसभा चुनावों में क्षेत्रीय दलों को अधिक प्राथमिकता देते हैं। यह स्थानीय राजनीतिक पहचानों के महत्व को रेखांकित करता है। बंगाल में हार के बाद टीएमसी को कई विधायकों और सांसदों के दलबदल का सामना करना पड़ा। आप के राज्यसभा सांसदों के बीच भी बड़े पैमाने पर दलबदल हुआ। महाराष्ट्र में एनसीपी (एसपी) के सांसदों ने भी पाला बदला। ये घटनाक्रम संगठनात्मक कमजोरियों की ओर जरूर संकेत करते हैं, लेकिन इसे जनसमर्थन के घटने का संकेत नहीं माना जा सकता। फिलहाल, 11 राज्यों में भाजपा की सरकार है, जबकि कांग्रेस की सरकारें 3 राज्यों में हैं। क्षेत्रीय दल 4 राज्यों में सरकार चला रहे हैं। इसके अलावा, 10 अन्य राज्यों-यूटी में भाजपा के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकारें सत्ता में हैं। इनमें से 4 में क्षेत्रीय दल गठबंधन के प्रमुख साझेदार हैं, जबकि भाजपा की भूमिका सहयोगी की है। ये हैं- आंध्र प्रदेश, मेघालय, नगालैंड और पुडुचेरी। शेष 6 में भाजपा क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन करके सरकार का नेतृत्व कर रही है। इनमें बिहार, यूपी, असम, गोवा, महाराष्ट्र और त्रिपुरा शामिल हैं। 3 राज्यों में कांग्रेस भी क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन सरकार का हिस्सा है। झारखंड में कांग्रेस झामुमो की कनिष्ठ गठबंधन सहयोगी है और जम्मू-कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस की। केरल में कांग्रेस अन्य क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन सरकार का नेतृत्व कर रही है। पिछले चार लोकसभा चुनावों के दौरान विभिन्न दलों को मिले वोटों के विश्लेषण से पता चलता है कि इस अवधि में राष्ट्रीय दलों का संयुक्त वोट शेयर 60.04फीसदी से 68.15फीसदी के बीच रहा है। यानी उनका समग्र चुनावी समर्थन अपेक्षाकृत स्थिर रहा है। राष्ट्रीय दलों का सबसे कम संयुक्त वोट शेयर 2014 के लोकसभा चुनाव में दर्ज किया गया, जब उन्हें कुल मतों का 60.04फीसदी मिला था।

ईरान के डर से ट्रम्प ने गुप्त फ्लाइट ली थी,तुर्किये में एयरफोर्स वन में बैठने का दिखावा किया, फिर सामान वाली गाड़ी से दूसरे प्लेन में पहुंचे

तेहरान। व्हाइट हाउस के कुछ कर्मचारियों को भी असली प्लान की जानकारी नहीं थी। उड़ान के दौरान पत्रकारों को अपनी खिड़कियों के शेड नीचे रखने को कहा गया। यानी उन्हें बाहर देखने की इजाजत नहीं थी। ऐसी सावधानी आमतौर पर तब बरती जाती है, जब विमान किसी खतरे वाले इलाके से गुजर रहा हो। बाद में पत्रकारों ने ट्रम्प से पूछा कि खिड़कियों के शेड बंद रखने को क्यों कहा गया था। ट्रम्प ने कहा, 'शायद हम एक खतरनाक फ्लाइट पर थे।' ट्रम्प वाला छोटा विमान पहले ब्रिटेन पहुंचा-ट्रम्प को लेकर छोटा सी-32ए विमान रात करीब 10:20 बजे ब्रिटेन के आरएएफ मिल्डेनहॉल एयरबेस पहुंचा। इसके कुछ मिनट बाद पुराना एयरफोर्स वन भी वहां पहुंच गया। इस विमान में पत्रकार सवार थे। हालांकि, यह साफ नहीं है कि सी-32ए से उतरने के बाद ट्रम्प पुराने एयरफोर्स वन तक कैसे पहुंचे। ट्रम्प के साथ यात्रा कर रहे पत्रकारों के मुताबिक, वे रात 10:56 बजे पुराने एयरफोर्स वन की सीढ़ियों से नीचे उतरते दिखाई दिए। ट्रम्प ने पत्रकारों की तरफ हाथ हिलाया, लेकिन उनसे बात नहीं की। इसके बाद वे अमेरिकी सैनिकों से मिले और फिर कतर

से मिले नए विमान की तरफ चले गए। ऐसा तरीका पहले भी अपनाया जा चुका है-राष्ट्रपति को खतरे से बचाने के लिए उनके असली सफर को छिपाने का तरीका नया नहीं है। साल 2000 में राष्ट्रपति बिल क्लिंटन पाकिस्तान गए थे। तब उन्हें एक ऐसे सरकारी विमान से भेजा गया था, जिस पर राष्ट्रपति के विमान की कोई पहचान नहीं थी। वहीं, उनका असली एयरफोर्स वन दूसरे रास्ते से भेजा गया था, ताकि लोगों को पता न चले कि राष्ट्रपति किस विमान में हैं।

कतर से मिले नए विमान की सुरक्षा पर भी सवाल उठे-ट्रम्प जिस बोइंग 747-8 विमान से तुर्किये पहुंचे थे, वह कतर के शाही परिवार ने पिछले साल अमेरिका को दिया था। अमेरिकी डिफेंस कंपनी एल3 हैरिस टेक्नोलॉजीज ने इसे ऐसे सरकारी विमान से भेजा गया था, जिस पर राष्ट्रपति के विमान की कोई पहचान नहीं थी। वहीं, उनका असली एयरफोर्स वन दूसरे रास्ते से भेजा गया विमान से अपनी पहली विदेश यात्रा पर तुर्किये पहुंचे। इस विमान की सुरक्षा को लेकर पहले से सवाल उठते रहे हैं। अमेरिकी मीडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, पुराने एयरफोर्स वन में राष्ट्रपति को हमले से बचाने के लिए कुछ खास सुरक्षा इंतजाम हैं, जो कतर से मिले विमान में नहीं हैं या उनकी क्षमता अलग है। व्हाइट हाउस ने कहा- नए विमान की सुरक्षा में कोई कमी नहीं-कतर से मिले वाले विमान की सुरक्षा पर सवालों के जवाब में व्हाइट हाउस के कम्युनिकेशन डायरेक्टर स्टीव चेउंग ने कहा कि इस विमान में ट्रम्प और उनके साथ मौजूद लोगों की सुरक्षा के लिए खास इंतजाम किए गए हैं। उन्होंने कहा-'अमेरिका के कई दुश्मन ट्रम्प को निशाना बनाना चाहते हैं।

इसलिए उनकी सुरक्षा के लिए हम हर जरूरी तरीका अपनाते हैं।' यानी व्हाइट हाउस ने यह नहीं माना कि नए विमान में सुरक्षा की कोई कमी थी। उसका कहना है कि ट्रम्प की सुरक्षा के लिए जरूरत पड़ने पर अलग-अलग तरीके अपनाए जा सकते हैं। पेंटागन यानी अमेरिकी रक्षा विभाग ने इस मामले पर तुरंत कोई जवाब नहीं दिया।

पाकिस्तान के स्वतंत्रता दिवस पर पीओके में 'ब्लैक डे'-प्रदर्शनकारी तैयार

रावलकोट। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के प्रदर्शनकारियों ने पाकिस्तान के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ब्लैक डे का ऐलान किया है। अवामी एक्शन कमेटी ने कहा है कि 13 और 14 अगस्त को पीओक समेत पूरी दुनिया में ब्लैक डे मनाया जाएगा। उन्होंने दुनिया भर के कश्मीरियों से पाकिस्तानी सुरक्षाबलों के अत्याचारों के खिलाफ प्रदर्शन करने की अपील की है। प्रदर्शनकरियों ने यह भी कहा है कि वे इस मौके पर दुनियाभर में पाकिस्तानी दूतावासों का घेराव करेंगे और पीओके में हिंसा के खिलाफ विरोध जताएंगे। उन्होंने ज्यादा से ज्यादा संख्या में इन विरोध प्रदर्शनों में शामिल होने की अपील की है। विदेशों में पाकिस्तानी दूतावासों के घेराव की अपील-अवामी एक्शन कमेटी के नेता उमर नजीर कश्मीरी ने विदेश में रहने वाले कश्मीरियों से 13 अगस्त को रैलियां करने और पीओके में पाकिस्तानी सुरक्षाबलों के हमले और उनकी ज्यादतियों को दुनिया को बताने की अपील की है। इस अपील का मकसद पीओके में जारी विरोध प्रदर्शनों को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने का है, जिससे दुनिया का ध्यान खींचा जा सके और पाकिस्तान पर दबाव बढ़े।

संसद परिसर में एनडीए-कांग्रेस सांसद में टकरार,बीजेपी सांसद ने पूछा- राहुल झारखंड क्यों नहीं गए, प्रियंका बोलीं- वे छात्रों से मिल चुके

नयी दिल्ली। संसद परिसर में एनडीए और इंडिया ब्लॉक के

सांसदों ने मंगलवार को एक-दूसरे के खिलाफ प्रदर्शन किया। एनडीए सांसदों ने विपक्ष पर संसद में चर्चा से भागने का आरोप लगाया, जबकि विपक्ष ने गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ नारेबाजी की। इस दौरान दोनों पक्ष आमने-सामने भी आ गए।प्रियंका गांधी के संसद पहुंचने पर बीजेपी सांसद राहुल गांधी के खिलाफ नारे लगाने लगे। बीजेपी सांसद मुकेश दलाल ने पूछा कि राहुल झारखंड में छात्र प्रदर्शनकारियों से क्यों नहीं मिल रहे हैं। प्रियंका मुस्कुराती हुई उनके पास गईं और कहा- राहुल झारखंड गए हैं और छात्रों से मिल चुके हैं। लोकसभा और राज्यसभा में भी हंगामा हुआ। लोकसभा की कार्यवाही पहले 11 बजे तक स्थगित की गई। दोपहर 2 बजे सदन दोबारा शुरू हुआ, लेकिन करीब आधे घंटे बाद ही हंगामे के चलते कार्यवाही बुधवार तक स्थगित कर दी गई। राज्यसभा की कार्यवाही जारी है। 20 जुलाई से शुरू हुए मानसून सत्र का 13 अगस्त को आखिरी दिन है। ती हफ्तों के दौरान संसद की कार्यवाही लगातार हंगामे के कारण प्रभावित रही है। विपक्ष दिल्ली में 20 जुलाई को जंतर-मंतर पर छात्र प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज के मुद्दे पर गृह मंत्री के जवाब की मांग कर रहा है। सरकार ने सोमवार को कहा कि अमित शाह इस मुद्दे पर चर्चा के लिए तैयार हैं। हालांकि, राहुल ने कहा कि हमें शाह की राय नहीं सुननी बल्कि यह जानना है कि छात्रों पर पुलिस एक्शन का आदेश किसने दिया था। पूर्व शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा- 'कांग्रेस छात्रों के हितों को लेकर लगातार झूठ फैला रही है। राहुल के पास तथ्यों की कमी है।विपक्ष के नेता न तो संसद में आना चाहते हैं और न ही सरकार के जवाब सुनना चाहते हैं। उनका मकसद सिर्फ झूठ फैलाना और घड़ियाली आंसू बहाना है।'

झारखंड विधानसभा घेराव के दौरान एबीवीपी कार्यकर्ताओं-पुलिस में झड़प,छात्रों पर लाठीचार्ज के विरोध में भाजपा का प्रदेश बंद
सीएम हेमंत बोले- विपक्ष युवाओं को भटका रहा

रांची। झारखंड विधानसभा घेराव के दौरान एबीवीपी कार्यकर्ताओं और पुलिस में झड़प हुई है। कार्यकर्ता पुरानी विधानसभा के पास जुटे, जहां उन्हें डिटेन करने के लिए पुलिस पहुंची। जिसके बाद कुछ कार्यकर्ता सड़क पर लेट गए, कुछ पुलिस वैन के आगे बैठ गए। पुलिस लगातार उन्हें उठाने की कोशिश में है, इस दौरान झड़प हुई है। मानसून सत्र के दौरान झारखंड सीएम ने विपक्ष पर युवाओं को भटकाने का आरोप लगाया। कहा- 'विपक्ष हल्ला करता रहेगा, हम अपना काम करते जाएंगे। सरकार छात्रों के हित में फैसले ले रही है।' इधर, भाजपा ने मंगलवार को राज्यव्यापी बंद बुलाया है। रांची में भाजपा कार्यकर्ताओं ने कई जगह सड़कें रोकीं और टायर जलाए। कुछ जिलों में कार्यकर्ता जबरन दुकानें बंद कराते नजर आए। कई शहरों लोगों को पुलिस ने हिरासत में लिया गया है। भाजपा ने

आरोप लगाया कि जेएमएम के नेतृत्व वाली सरकार छात्रों की मांगों पर बात करने के बजाय प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज किया। छात्रों ने झारखंड में पीएससी-एसएससी में कथित धांधली के खिलाफ सोमवार को प्रदर्शन किया था। विधानसभा घेराव के दौरान 100 से ज्यादा छात्र घायल हो गए। कई छात्रों के हाथ और पैर में फ्रैक्चर हुए हैं। रांची पुलिस के करीब 14 पुलिसकर्मियों को भी चोटें आई हैं। सरकार और छात्रों के बीच तीन दौर की बातचीत बेनतीजा रही है। हालांकि सरकार ने 9 में से 6 मांगें मान ली हैं। छात्रों का कहना है कि अब वे सिर्फ सीएम हेमंत सोरेन से बात करेंगे। दीपक बोले- हम झारखंड के छात्रों के साथ हैं-झारखंड में छात्रों पर पुलिस की कार्रवाई पर 'कॉकरोच जनता पार्टी' (सीजेपी) के संस्थापक अभिजीत दिपके ने कहा, 'जब राजनीतिक पार्टियां विरोध-प्रदर्शन करती हैं, तो आंसू गैस और लाठीचार्ज का इस्तेमाल क्यों नहीं किया जाता? सिर्फ़ छात्रों के खिलाफ़ ही ऐसा क्यों किया जा रहा है? मैंने देवेंद्र महतो से बात की, जिन्होंने मुझे बताया कि पुलिस ने उन पर लाठीचार्ज किया, जबकि वे पिछले नौ दिनों से भूख हड़ताल पर थे। देश की सभी सरकारों को सोचना चाहिए कि छात्रों पर ज़ुल्म करके उन्हें क्या हासिल हो रहा है ऐसी बर्बरता नहीं होनी चाहिए। हमने देवेंद्र महतो को अपना समर्थन देने का भरोसा दिलाया।

झारखंड में हमारी टीम छात्रों के साथ मिलकर काम कर रही है।'

बिहार-10वीं के टॉपर ने फर्जी आईएएस बनकर रु100 करोड़ कमाए,एंटीलिया जैसा घर, ड्राइवरलेस टेस्ला कार, 8 अकाउंट, 20 क्रेडिट कार्ड मिले

खगड़िया। बिहार के खगड़िया में फर्जी आईएएस अफसर मनीष गुप्ता की 100 करोड़ की संपत्ति का पता चला है। अब पुलिस इस बात की जांच में जुटी है कि मनीष ने कैसे ये संपत्ति जुटाई। उसे रविवार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। 41 साल के मनीष ने शादी नहीं की है। उसने करीब 7 हजार स्क्वेयर फीट जमीन पर मुकेश अंबानी के एंटीलिया जैसा घर बनवाया था, ताकि वह सब पर नजर रख सके। 8 अगस्त को उसके घर पर हुई रेड में 20 क्रेडिट कार्ड और 8 बैंक खातों का डिटेल मिला। 5 आईफोन और आईपैड भी बरामद किए गए हैं। पुलिस अब उसका नेटवर्क खंगालने में जुटी है। शुरुआती जांच में यह बात सामने आई है कि मनीष कनाडा और अमेरिका से ट्रांजैक्शन करता था। मनीष ने 12वीं तक खगड़िया में ही पढ़ाई की। 10वीं में उसने जिले में टॉप किया। बाद में वह यूपीएससी की तैयारी करने दिल्ली चला गया। दिल्ली से लौटने के बाद वह अपने बचपन के दोस्तों से भी कट गया। 10वीं में टॉप किया, आईएएस की तैयारी करने दिल्ली चला गया-मनीष गुप्ता ऐसा रौब जमाकर रखता था कि उसके पड़ोसी उससे दूर ही रहते थे। वह खुद को प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) में काम करने वाला अधिकारी बताता था। वह कहता था कि पीएम मोदी और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजित डोभाल से सीधी बात होती है। मनीष के बारे में जानने के लिए एक न्यूज़ पोर्टल टीम ने उसके बचपन के दोस्तों की तलाश शुरू की। काफी खोजबीन के बाद हमें मनीष का एक क्लासमेट मिला।उसने बताया कि मनीष का जन्म 1975 में हुआ था। उसके पिता खगड़िया के केडीएस कॉलेज में हिंदी के प्रोफेसर थे। मनीष की शुरुआती पढ़ाई जमालपुर-गोगरी इलाके के सरकारी स्कूल में हुई। 1991 में मैट्रिक के एग्जाम में मनीष ने टॉप किया था। 12वीं के बाद वो आईएएस की तैयारी करने अपने बड़े भाई के पास दिल्ली चला गया। मैं अपने बेटे के काम के लिए मनीष के पास 2 साल तक दौड़ता रहा, लेकिन उसने मेरी मदद नहीं की । फिर मैंने उससे संपर्क तोड़ लिया-फर्जी आईएएस का दोस्त। बेटे की पैरवी के लिए दो साल चक्कर लगाया, काम नहीं हुआ-मनीष के दोस्त ने बताया कि मैं अपने बेटे से जुड़े एक काम की पैरवी के लिए मनीष के पास गया था। मुझे लगा कि बचपन का दोस्त बड़ा अधिकारी है। वह मेरी मदद कर सकता है। उस समय मुझे यह अंदाजा नहीं था कि जिस व्यक्ति को मैं बड़ा सरकारी अधिकारी समझ रहा हूं, उसकी पहचान ही फर्जी निकल सकती है। जब मनीष की गिरफ्तारी और पुलिस की कार्रवाई की खबर सामने आई तो पहले मुझे भरोसा नहीं हुआ। मनीष के दोस्त ने बताया कि एक बार किसी विवाद को लेकर मध्य विद्यालय जमालपुर कचहरी के एक शिक्षक को मनीष ने दूर से ही अपना आईडी कार्ड दिखाया था। उसने खुद को सीबीआई अधिकारी बताकर टीचर को भी धमकाया था। सरकारी तख्ती वाली दो गाड़ियां, ड्राइवरलेस टेस्ला कार भी बरामद-खगड़िया पुलिस को सूचना मिली थी कि जमालपुर में रहने वाला मनीष अपनी गाड़ियों पर 'गवर्मेंट ऑफ़ इंडिया' का बोर्ड लगाकर खुद को आईएएस अफसर बताता है। पुलिस टीम ने 8 अगस्त की रात उसके घर पर छापेमारी की। घर के सामने दो गाड़ियां खड़ी थीं और दोनों पर सरकारी तख्ती लगी थी। घर के बाहर एक आदमी हाफ पैंट-टी शर्ट में घूम रहा था। पुलिस ने जब उससे उसके बारे में पूछा तो उसने कहा-''मेरा नाम मनीष गुप्ता है। मैं सीनियर आईएएस अफसर हूं। मैं अजित डोभाल की टीम में काम करता हूं। तुम लोगों की हिम्मत कैसे हुई मेरे घर तक आने की।' मनीष गुप्ता ने अपने मोबाइल में आई कार्ड भी दिखाया। आई कार्ड और उसका कॉन्फिडेंस देखकर पुलिस भी कुछ देर के लिए बैकफुट पर आ गई, लेकिन अफसरों ने आईकार्ड की जांच की तो पता चला ये फर्जी है।' जब तक रेड चली, मनीष पुलिस से तू-तड़ाक करता रहा-पुलिस सूत्रों के मुताबिक मनीष गुप्ता के घर पर करीब 7 घंटे तक रेड चली। रेड के दौरान वो पुलिस के सीनियर अफसरों से भी तू-तड़ाक करता रहा। वह बार बार खुद को बड़ा अधिकारी बताकर पुलिस वालों को सस्पेंड करवाने की धमकी देता रहा। फोन-आईपैड का पासवर्ड नहीं बता रहा-पुलिस ने आरोपी के पास से 5 आईफोन, MacBook, iPad और 4 TB की हार्ड डिस्क बरामद की है। इन डिवाइस में मौजूद कॉल रिकॉर्ड, चैट, ई-मेल, सोशल मीडिया अकाउंट, फोटो, वीडियो, दस्तावेज और बैंकिंग गतिविधियों से पुलिस को पूरे नेटवर्क की जानकारी मिल सकती है। जांच एजेंसी यह पता लगाने में जुटी है कि मनीष किन लोगों से संपर्क में था। लेकिन फर्जी आईएएस फोन और आईपैड का पासवर्ड नहीं बता रहा है। पुलिस अब एक्सपर्ट से मनीष का फोन-आईपैड अनलॉक करवा सकती है। 20 क्रेडिट कार्ड और 8 डेबिट कार्ड का डिटेल खंगाल रही पुलिस-तलाशी के दौरान बड़ी संख्या में बैंकिंग दस्तावेज भी मिले हैं। पुलिस ने 20 क्रेडिट कार्ड, 8 डेबिट कार्ड और 4 चेकबुक बरामद की हैं। इतनी बड़ी संख्या में बैंकिंग कार्ड मिलने के बाद पुलिस अब इनके खातों और लेनदेन की जांच कर रही है। किस कार्ड का इस्तेमाल किसने किया, किन खातों से पैसा आया और कहां गया, यह जानकारी बैंक स्टेटमेंट और केवाईसी रिकॉर्ड से सामने आएगी। मनीष के घर में सीसीटीवी कैमरे भी लगे हैं। पुलिस ने सीसीटीवी का डीवीआर जब्त किया है। इससे घर पर आने-जाने वाले लोगों की पहचान की जाएगी। मनीष के नेटवर्क से अमेरिका और कनाडा से ट्रांजैक्शन होने की जानकारी भी सामने आई है। पुलिस इन ट्रांजैक्शन का डिटेल खंगालने में लगी है।

राममंदिर सीईओ के लिए इंटरव्यू जारी,एनकाउंटर स्पेशलिस्ट पूर्व आईपीएस, अयोध्या के पूर्व डीएम रेस में, 5300 ने किआ अप्लाई, 18 शॉर्टलिस्ट, 3 फाइनल होंगे

अयोध्या। अयोध्या राम मंदिर के चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर (सीईओ) की नियुक्ति के लिए इंटरव्यू चल रहा है। 4

दिन चलने वाले इंटरव्यू के लिए 18 लोगों को बुलाया गया है। पहले दिन मंगलवार को एनकाउंटर स्पेशलिस्ट रहे पूर्व आईपीएस अफसर राजेश पांडेय और अयोध्या के पूर्व डीएम रहे योगेश्वर राम मिश्रा इंटरव्यू देने पहुंचे। सूत्रों के मुताबिक, हर कैंडिडेट का 1-2 घंटे तक इंटरव्यू चल रहा है। कहां-कहां काम किया? भगवान राम में कितनी आस्था है, परिवार में कौन-कौन है? जैसे सवाल किए जा रहे हैं। सीईओ पद के लिए 5,300 से ज्यादा लोगों ने आवेदन किया था, लेकिन सिर्फ 18 लोगों को शॉर्टलिस्ट किया। पूर्व आईपीएस राजेश पांडेय और अयोध्या के पूर्व डीएम रहे योगेश्वर राम मिश्रा के अलावा बाकी 16 नाम सामने नहीं आए हैं। रिटायर्ड जस्टिस प्रमोद कोहली, पूर्व वैज्ञानिक डॉ. सुरेश हावड़े और रिटायर्ड लेफ्टिनेंट जनरल विष्णुकांत चतुर्वेदी इंटरव्यू ले रहे हैं। 18 में सिर्फ 3 नाम फाइनल होंगे। फिर इन तीनों का श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट इंटरव्यू लेगा और इनमें से एक नाम फाइनल करेगा। 5,300 लोगों ने किया आवेदन, 34 सवालों से हुई स्क्रूटनी-राम मंदिर चढ़ावा चोरी के बीच ट्रस्ट ने सीईओ पद के लिए 13 से 18 जुलाई तक आवेदन मांगे थे। सीईओ पद के आवेदकों से ऑनलाइन गूगल फॉर्म के जरिए 34 सवालों के जवाब मांगे गए थे। इन्हीं के आधार पर टीम ने 5,300 आवेदनों की स्क्रूटनी की। इसमें से 18 कैंडिडेट पद के योग्य पाए गए। इसके बाद इन्हें इंटरव्यू के लिए बुलाया गया। आवेदकों के लिए ये प्रमुख शर्तें रखी गई थीं-आयु सीमाः आवेदक की उम्र 50 से 70 साल के बीच होनी चाहिए। कार्यकालः सीईओ की नियुक्ति शुरुआती 3 साल के लिए होगी। कामकाज के प्रदर्शन के आधार पर कार्यकाल आगे बढ़ाया जा सकेगा। अनुभवः सामान्य प्रशासन, वित्त-लेखा, मानव संसाधन, जनसंपर्क, सूचना प्रौद्योगिकी, सुरक्षा और विधि-कानून जैसे क्षेत्रों में कम से कम 20 साल का एक्सपीरियंस जरूरी। आवेदकों से पूछा था-कट्टर हिंदू हैं या आस्थावान-गूगल फार्म में आवेदकों से नाम, जन्मतिथि, उम्र, पता, शहर, राज्य, पिन कोड, मोबाइल नंबर और ईमेल जैसी व्यक्तिगत जानकारी मांगी गई। हिंदी और अंग्रेजी भाषा की समझ से जुड़े सवाल भी थे। इसके अलावा आवेदक की सर्वोच्च शैक्षणिक योग्यता, वर्तमान नौकरी या रिटायरमेंट और पिछली संस्था की जानकारी मांगी गई थी। वह कितने कर्मचारियों का नेतृत्व कर चुका है, यह भी पूछा गया। इसके लिए 1,000 से 5,000 और इससे ज्यादा कर्मचारियों के विकल्प दिए गए थे।

आवेदक से यह भी पूछा गया कि क्या वह पहले किसी सामाजिक या धार्मिक संगठन, मठ या मंदिर से जुड़ा रहा है।अगर हां, तो कितने साल तक जुड़ा रहा, इसकी जानकारी भी मांगी गई।

आवेदक को यह भी बताना था कि वह कट्टर हिंदू है या आस्थावान हिंदू।

इसके अलावा राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के लिए उसका विजन, कार्ययोजना और सुझाव भी मांगा गया था।

हूती विद्रोहियों ने सऊदी के जहाज पर मिसाइल से किया हमला,2 पाकिस्तानी समेत 3 की मौत, लाल सागर में अब तक 8 जहाजों को निशाना बनाया गया

अल-मंदेब स्ट्रेट। कईजहाज अब अफ्रीका के चारों ओर से जा रहे हैं। यह रास्ता काफी लंबा है। इससे सामान पहुंचने में ज्यादा समय लग रहा है। इसका असर सप्लाई पर भी पड़ रहा है। सामान की कमी बढ़ सकती है। सप्लाई लाइन पर दबाव बढ़ रहा है। इससे रोजमर्रा की चीजों का खर्च भी बढ़ सकता है। यमन में ईरान और सऊदी अरब आमने-सामने-ईरान और सऊदी अरब यमन में युद्ध लड़ रहे हैं। दोनों देश वहां विरोधी पक्षों का समर्थन करते हैं। सऊदी अरब अंतरराष्ट्रीय मान्यता मिली सरकार का समर्थन करता है, जबकि ईरान हूतियों के साथ है। हूती संगठन यमन के बड़े हिस्से पर नियंत्रण रखता है।हूतियों ने 2023 और 2024 में भी रेड सी में लगातार जहाजों पर हमले किए थे। इससे समुद्री यातायात पर असर पड़ा था। इस समय हूतियों के हमलों का असर इसलिए ज्यादा महसूस हो रहा है, क्योंकि दुनिया पहले से ही होर्मुज स्ट्रेट के बंद होने से जूझ रही है। दुनिया के लिए रेड सी इतना अहम क्यों है? रेड सी दुनिया के सबसे अहम समुद्री रास्तों में से एक है। इसके एक तरफ सऊदी अरब और यमन हैं, जबकि दूसरी तरफ मिस्र, सूडान, इरिट्रिया, जिबूती और सोमालिया स्थित हैं। दुनिया के करीब 30फीसदी समुद्री व्यापार का आवागमन इसी रास्ते से होता है। रेड सी में आने-जाने के केवल दो रास्ते हैं। पूर्व में बाब अल-मंदेब स्ट्रेट और पश्चिम में स्वेज नहर। इसलिए इनमें से किसी एक रास्ते में रुकावट आने पर वैश्विक व्यापार और तेल आपूर्ति पर बड़ा असर पड़ता है।

अमेरिकी कोर्ट से अडाणी का केस खारिज, 2 साल पहले दर्ज हुआ था केस, भारतीय अधिकारियों को रिश्वत देने, अमेरिकी निवेशकों से धोखाधड़ी के थे आरोप

न्यूयॉर्क। यानी निवेशकों को कंपनी से जुड़ी कुछ अहम जानकारी नहीं दी गई। यही

वजह है कि मामला सिर्फ भारत में कथित रिश्वत देने तक सीमित नहीं रहा। इसमें अमेरिकी निवेशकों का पैसा भी जुड़ गया और अमेरिका में धोखाधड़ी से जुड़े आरोप लगाए गए। अमेरिकी अभियोजकों ने आरोप लगाया कि भारतीय अधिकारियों को कथित रिश्वत देने की योजना बनाई गई, निवेशकों को सही जानकारी नहीं दी गई और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का इस्तेमाल करके धोखाधड़ी की गई। इसके अलावा, अमेरिकी सिक्योरिटी और एक्सचेंज कमीशन ने भी निवेशकों को गलत या अधूरी जानकारी देने के आरोप में अमेरिकी एक्सचेंज कानूनों के तहत कार्रवाई की। न्याय विभाग पहले ही केस बंद करने को कह चुका-18 मई को अमेरिकी न्याय विभाग ने कहा था कि वह इस मामले को आगे नहीं बढ़ाएगा। हालांकि, केस को कानूनी तौर पर खत्म करने के लिए अदालत की मंजूरी जरूरी थी। इसलिए अंतिम फैसला जज को करना था। मामला भारत का, लेकिन अमेरिका में केस कैसे बना? रिश्वत देने की कथित योजना और सोलर पावर का ठेका भारत से जुड़ा था। लेकिन इस मामले में अमेरिकी निवेशकों का पैसा भी लगा था। अडाणी ग्रीन एनर्जी ने सितंबर 2021 में 75 करोड़ डॉलर का बॉन्ड जारी किया था। इसमें करीब 17.5 करोड़ डॉलर अमेरिकी निवेशकों से मिले थे। अमेरिकी जांच के मुताबिक, निवेशकों को कंपनी की रिश्वत रोकने की व्यवस्था और इससे जुड़े जोखिमों के बारे में पूरी और सही जानकारी नहीं दी गई। इसी वजह से मामला अमेरिकी निवेशकों और वहां के पैसों से जुड़े लेनदेन तक पहुंच गया और अमेरिका में भी धोखाधड़ी के आरोप लगे। अमेरिकी अभियोजकों ने इस मामले में विदेशी अधिकारियों को रिश्वत देने, निवेशकों के साथ धोखाधड़ी करने और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से धोखाधड़ी करने से जुड़े अमेरिकी कानूनों के तहत आरोप लगाए। वहीं, अमेरिकी सिक्योरिटी और एक्सचेंज कमीशन ने भी निवेशकों को गलत जानकारी देने से जुड़े कानूनों के तहत कार्रवाई की। 16 की उम्र में स्कूल छोड़कर खड़ा किया साम्राज्य-गौतम अडाणी ने 1988 में गुजरात में महज 16 साल की उम्र में स्कूल छोड़ने के बाद कमोडिटी ट्रेडिंग के साथ अपने करियर की शुरुआत की थी। पिछले कुछ दशकों में उन्होंने अपने ग्रुप का विस्तार पोर्ट्स, एयरपोर्ट्स, माइनिंग, बिजली उत्पादन, ट्रांसमिशन और लॉजिस्टिक्स जैसे क्षेत्रों में किया। आज अडाणी ग्रुप भारत के सबसे बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर साम्राज्यों में से एक है। अमेरिकी केस खत्म होने की खबर ग्रुप के लिए वैश्विक स्तर पर बड़ी जीत मानी जा रही है।

पाकिस्तानी आर्मी ने एलएसी पर 400 तोपें क्यों भेजी? भारतीय सेना के डीजीएमओ ने पाकिस्तान को थो डाला, बड़ा दावा

इस्लामाबाद। नयी दिल्ली। पिछले हफ्ते भारत और पाकिस्तान के डीजीएमओ स्तर पर हुई बातचीत के दौरान दोनों तरफ के सैन्य अधिकारियों के बीच तीखी बहसबाजी होने का दावा किया गया है। पाकिस्तानी सेना के पूर्व अधिकारी मेजर आदिल रजा ने दावा किया है कि डीजीएमओ स्तर पर हुई बातचीत के दौरान भारतीय डीजीएमओ ने पाकिस्तानी अधिकारी से एलएसी पर करीब 400 तोपें भेजने की वजह पूछा। (रिपोर्ट्स में 250 चीनी मूल के एसएच-15 तोप भेजे जाने का दावा)। इसपर पाकिस्तानी डीजीएमओ ने पहले रूटीन तैनाती बताया लेकिन बाद में उन्होंने कहा कि 'एहतियात बरतने के लिए तोपों की तैनाती की गई हैं।' आधुनिक समाचार इस दावे की पुष्टि नहीं करता है। लेकिन मेजर आदिल रजा ने अपने यूट्यूब चैनल पर विश्वसनीय सूत्रों के हवाले से ऐसी बातचीत होने का दावा किया है। आपको बता दें कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद से करीब करीब हर हफ्ते भारत और पाकिस्तानी सेना के बीच डायरेक्टर जनरल ऑफ मिलिट्री ऑपरेशन (डीजीएमओ) के बीच बातचीत होती है ताकि तनाव को कंट्रोल किया जा सके। भारतीय डीजीएमओ ने पाकिस्तानी सेना से पूछे तीखे सवाल-पाकिस्तानी सेना के डीजीएमओ अभी कासिफ अब्दुल्ला हैं जो मेजर जनरल रैंक के अधिकारी हैं।

सीरिया के पूर्व राष्ट्रपति असद को फांसी की सजा,लाखों लोगों की मौत का जिम्मेदार ठहराया गया; ममेरे भाई को पिंजरे में कोर्ट लाया गया

दमिश्क। उनकी सरकार ने उनके शासन के दौरान लोगों पर हुए अत्याचार और हत्याओं के मामलों की जांच शुरू की। रूस और ईरान के साथ के बावजूद कैसे गिरी असद सरकार? गृहयुद्ध के दौरान बशर अल-असद की सरकार को रूस, ईरान और हिजबुल्लाह का मजबूत समर्थन मिला। इसी वजह से वह कई साल तक सत्ता में बने रहे। लेकिन 2024 में हालात बदल गए। इजराइल के लगातार हमलों से हिजबुल्लाह और ईरान समर्थित गुट कमजोर पड़ गए। दूसरी ओर, रूस यूक्रेन युद्ध में उलझा हुआ था, इसलिए वह भी पहले जैसी सैन्य मदद

नहीं कर सका। इसी मौके का फायदा उठाकर तुर्किये के समर्थन वाले विद्रोही गुटों ने उत्तर-पश्चिमी प्रांत इदलिब से बड़ा हमला शुरू किया। कुछ ही दिनों में उन्होंने कई शहरों पर कब्जा कर लिया और 8 दिसंबर 2024 को राजधानी दमिश्क पहुंच गए। विद्रोहियों के दमिश्क पहुंचते ही बशर अल-असद अपने परिवार के साथ रूस भाग गए। उनकी सरकार गिर गई और असद परिवार का 53 साल से ज्यादा पुराना शासन खत्म हो गया। इसके बाद विद्रोही नेता अहमद अल-शरा के नेतृत्व में नई सरकार बनी, जिसने असद शासन के दौरान हुई हत्याओं और अत्याचारों की जांच शुरू की। उसी जांच के तहत अब असद, माहेर और अतीफ के खिलाफ यह फैसला सुनाया गया।

9 साल की बेटी अलग कमरे में नहीं सोती,डरती और रोती है, उसे इंडीपेंडेंट कैसे बनाएं, हमसे अलग सोने की आदत कैसे डालें

नयी दिल्ली। विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड काउंसलर, जयपुर से

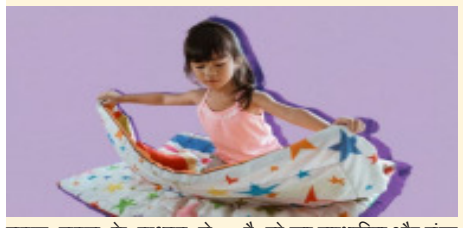

सवाल जवाब के माध्यम से.
सवाल- मैं इंदौर का रहने वाला हूं। मेरी 9 साल की बेटी है। वह रात में अकेले सोने से डरती है। वह अक्सर कहती है कि उसे अंधेरे से डर लगता है और वह सपना देखती है कि हम कहीं चले गए हैं। हमारा मानना है कि अब वह बड़ी हो गई है और उसे अलग कमरे में सोने की आदत डालनी चाहिए ताकि वह आत्मनिर्भर बन सके। हम उसकी भलाई चाहते हैं। लेकिन हमारे लिए यह तय कर पाना मुश्किल हो गया है कि आखिर किस उम्र में बच्चे को अकेले सोने के लिए तैयार करना चाहिए। हमारा डर यह भी है कि कहीं उसे अकेलापन न महसूस हो या

यह बदलाव उसके आत्मविश्वास को नुकसान न पहुंचा दे। कृपया मेरा मार्गदर्शन करें। जवाब- आपकी चिंता स्वाभाविक है। बहुत से पेरेंट्स को इस स्थिति का सामना करना पड़ता है। हालांकि इसमें बहुत चिंता करने की बात नहीं है। आपकी बेटी 9 साल की उम्र में भी आपके साथ ही सो रही है या रात में अकेले सोने से डरती है तो इसका मतलब है कि वह बचपन से ही आपके पास सोती आ रही है। यह उसके लिए सुरक्षा, सुकून और प्यार का प्रतीक बन चुका है, जो एक स्वाभाविक और सुंदर अनुभव है। लेकिन अब समय है कि प्यार के साथ-साथ उसमें धीरे-धीरे स्वतंत्रता के बीज भी बोए जाएं। हेल्दी पेरेंटिंग का मतलब है 'प्यार और स्वतंत्रता का संतुलन' बच्चे जैसे-जैसे बड़े होते हैं, खुद से खाना सीखते हैं, पॉटी-सुसु बताने लगते हैं, स्कूल जाते हैं और पानी की बोतल से खुद पानी पीना सीखते हैं। ये छोटी-छोटी चीजें आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता के संकेत हैं। वह समय के साथ छोटे-छोटे काम खुद से करना सीखते हैं, जबकि बचपन में ये सारे काम कोई बड़ा उनके लिए कर रहा था। इसी तरह से अकेले सोना भी उस स्वतंत्रता की दिशा में एक कदम है। बच्चे को बचपन से ही आत्मनिर्भर बनाना जरूरी- अगर बच्चे बढ़ती उम्र में भी हर काम के लिए पेरेंट्स पर निर्भर रहते हैं तो इसका मतलब है कि अब तक के पालन-पोषण में कुछ कमी रह गई है। कुल मिलाकर इस समय उन्हें स्वतंत्रता देने की जरूरत है। छोटे-छोटे कामों से इसकी शुरुआत करें। बच्चे की क्षमता के अनुसार जितने काम उसके दायरे में आते हैं, वे काम करने के लिए उसे प्रेरित करें। चाहे वह घर के काम हों या उसके खुद के काम। जैसेकि 'पानी का गिलास ला दो', 'अखबार दे दो' और 'ये पैकेट डस्टबिन में फेंक दो' वगैरह-वगैरह। ये काम देखने में छोटे लग सकते हैं, लेकिन इनसे बच्चा महसूस करता है कि वह परिवार का एक अहम हिस्सा है। जब वह कोई काम खुद करता है तो उसकी तारीफ करें और कहें, 'वाह! अब तो तुम बड़े हो गए हो।' इससे वह स्वाभाविक रूप से जिम्मेदारी लेना शुरू करता है। बच्चे में आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए कुछ और कदम उठा सकते हैं। कई बार माता-पिता प्यार में ऐसा

व्यवहार करने लगते हैं, जो अनजाने में बच्चे को बहुत ज्यादा डिपेंडेंट बना देता है। जैसेकि- खाना भी मां ही खिलाएं, कपड़े भी मां ही पहनाएं, सामान भी कोई और उठाए, जिस चीज की जरूरत हो उसे बोलने से पहले ही पूरा कर दिया जाए। ऐसे में बच्चा हर छोटी-बड़ी चीज के लिए दूसरों पर निर्भर रहना सीख जाता है। इससे वह न जिम्मेदारी सीखता है, न निर्णय लेना, न धैर्य, न आत्मविश्वास। वह हर काम में किसी और की मदद ढूंढ़ने लगता है। इसलिए पेरेंट्स को चाहिए कि वे बच्चे को बचपन से ही अपने छोटे-छोटे फैसले लेने दें, उसे अपने काम खुद करना सिखाएं। याद रखें कि हर बार आगे बढ़कर मदद करने से ज्यादा जरूरी उसे यह भरोसा देना है कि वह ये काम खुद भी कर सकता है। इन छोटे-छोटे कामों और बदलावों से बच्चे में जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है, जो उसे अकेले सोने के लिए प्रेरित करती है। इसके साथ ही माता-पिता को यह समझना चाहिए कि अकेले सोना भी आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनने की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा है। यह कोई सजा नहीं, बल्कि बच्चे के लिए खुद पर भरोसा करना सीखने का एक अवसर है। इसलिए जरूरी है कि पहले उसे मानसिक रूप से तैयार करें, प्यार और स्नेह के साथ प्रेरित करें और समय आने पर धीरे-धीरे सोने की यह स्वतंत्रता उसे सौंपें। इसके लिए धीरे-धीरे कोशिश करें और इस दौरान कुछ बातों का विशेष ध्यान रखें। बच्चे को अचानक खुद से न करें दूर- बच्चे को अचानक अलग करना सही तरीका नहीं है। अगर उसे अचानक अकेले सोने के लिए मजबूर किया जाता है तो वह खुद को असुरक्षित, असहाय और अस्वीकृत महसूस कर सकता है।

यह बदलाव उसके आत्मविश्वास को मजबूत करने के बजाय कमजोर कर सकता है। ऐसे में बच्चा या तो हर वक्त माता-पिता की छाया में रहना चाहेगा या फिर भीतर ही भीतर डर और चिंता को दबाकर जीना शुरू कर देगा। इसलिए जरूरी है कि यह बदलाव धीरे-धीरे, प्यार और समझदारी से किया जाए ताकि वह न सिर्फ अलग सोना सीखे, बल्कि खुद पर भरोसा करना भी। अंत में यही कहूंगी कि बच्चों को स्वतंत्र बनाना है तो पहले उन्हें सुरक्षित महसूस कराना होगा क्योंकि आत्मनिर्भरता वहीं पनपती है, जहां विश्वास और भावनात्मक जुड़ाव की जड़ें गहरी हों। इससे उसमें धीरे-धीरे अलग सोने की आदत विकसित होगी।

शहनाज गिल के साथ शूटिंग के दौरान हादसा,गलती से निगल गईं नाक की नथनी

मुंबई। एक्ट्रेस शहनाज गिल एक प्रोजेक्ट की शूटिंग के दौरान हादसे का शिकार हो गईं। सेट पर दौड़ते समय उनकी नाक की नथ अचानक मुंह में चली गई, जिसे वे गलती से निगल गईं। शहनाज ने

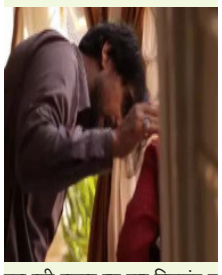

इस पूरी घटना का एक बिहाइंड द सीन्स वीडियो अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया है। हालांकि इस घटना के बाद भी शहनाज ने अपनी शूटिंग रोकी नहीं और काम पूरा किया। सीन के दौरान दौड़ रही थीं शहनाज शहनाज गिल की ओर से शेयर किए गए वीडियो में वे सेट पर एक सीन के लिए दौड़ती नजर आ रही हैं। दौड़ते समय अचानक उनकी नाक की नथ निकलकर मुंह के अंदर चली जाती है। इसके बाद शहनाज खुद को संभालने की कोशिश करती हैं और उल्टी करने का प्रयास करती हैं। स्थिति बिगड़ते देख सेट पर मौजूद एक्टर सौरभ सचदेवा तुरंत दौड़कर उनके पास आते हैं और उनकी पीठ थपथपाकर उनकी मदद करते हैं। हादसा होने के बाद भी पूरी की शूटिंग नाक की नथ निगलने की घटना के बाद भी शहनाज ने सेट पर पैनिक नहीं किया। उन्होंने स्थिति को संभाला और कुछ देर बाद ही दोबारा शूटिंग शुरू कर दी। शहनाज का काम के प्रति यह समर्पण देखकर उनके सह-कलाकारों और क्रू मेंबर्स ने भी उनकी हिम्मत की तारीफ की। आंचल खुराना लगा चुकीं दिखावा करने का आरोप हाल ही में टीवी एक्ट्रेस और 'रोडीज 8' की विनर आंचल खुराना ने पंजाब की मशहूर एक्ट्रेस शहनाज गिल पर कई गंभीर आरोप लगाए थे। टेली मसाला को दिए इंटरव्यू में आंचल ने दावा किया है कि शहनाज असल में वैसी नहीं हैं जैसी सोशल मीडिया पर दिखाई देती हैं।

पति हैं गुस्से वाले-खुश रहें तो प्यार जताएं, लेकिन अंदाज़ा की मिजाज़ कब बिगड़ जाए, डर में रहती हूं-क्या करूं?

नोएडा। सवाल- मेरी उम्र 33 साल है और मेरी शादी को 4 साल हो चुके हैं। मेरे पति बहुत गुस्से वाले हैं। जब वे गुस्से में नहीं होते, तो बहुत ख्याल रखते हैं, लेकिन गुस्सा आने पर उन्हें संभालना मुश्किल हो जाता है। इस वजह से मेरा भी ब्लड प्रेशर

बढ़ जाता है। मैं हमेशा डरी हुई रहती हूं कि न जाने उन्हें किस बात पर गुस्सा आ जाए। अब इस सिचुएशन से निपटना मेरे लिए मुश्किल हो रहा है। मुझे क्या करना चाहिए? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. जया सुकुल, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, नोएडा जी से सवाल जवाब के माध्यम से। जवाब- अपनी समस्या शेयर करने के लिए शुक्रिया। आपकी स्थिति काफी गंभीर है और इसे समझना बहुत जरूरी है। साइकोलॉजी में इस कंडीशन को 'वॉकिंग ऑन एगशेल्स' कहते हैं। यानी आप हर वक्त इस डर में रहती हैं कि आपके किसी कदम से सामने वाला गुस्से से 'फट' न जाए। 4 साल का समय ये समझने के लिए पर्याप्त है कि यह केवल उनका 'स्वभाव' नहीं, बल्कि एक कंसर्निंग पैटर्न है। प्यार और गुस्से का यह 'भ्रम' खतरनाक- अक्सर ऐसे रिश्तों में पार्टनर एक अजीब तरह के भ्रम में रहता है। आप कहती हैं कि 'जब वे गुस्से में नहीं होते, तो बहुत ख्याल रखते हैं।' यही वह 'ट्रैप' है, जो आपको इस टॉक्सिक कंडीशन से बाहर नहीं निकलने देता। साइकोलॉजी के अनुसार, इसे 'इंटरमिटेंट रीइन्फोर्समेंट' कहते हैं। जब कोई व्यक्ति बुरा व्यवहार करता है और फिर अचानक बहुत सारा प्यार दिखाता है, तो सामने वाले को लगता है कि 'वह दिल के बुरे नहीं हैं, बस गुस्सा आ जाता है।' याद रखें, उनका अच्छा व्यवहार उनके अग्रेसिवनेस को जायज नहीं ठहराता। प्यार के बदले में डर की कीमत चुकाना किसी भी स्वस्थ रिश्ते की निशानी नहीं है। डर के साये में पनपने वाला रिश्ता धीरे-धीरे अपनी पहचान और आत्मविश्वास को खत्म कर देता है। आपके शरीर को मिल रहे हैं 'वार्निंग सिग्नल' आपका बढ़ता ब्लड प्रेशर और लगातार रहने वाली एंग्जाइटी महज एक फिजिकल इश्यू नहीं है। इसे 'साइकोसोमैटिक इफेक्ट' कहते हैं। जब ब्रेन किसी तनाव को प्रोसेस नहीं कर पाता या आप अपनी भावनाओं को लंबे समय तक दबाकर रखते हैं, तो ये धीरे-धीरे किसी बीमारी का रूप ले लेता है।लगातार डर में रहने से शरीर में 'कोर्टिसोल' (स्ट्रेस हॉर्मोन) का लेवल बढ़ जाता है। ये इम्यूनिटी, हार्ट बीट और ब्लड

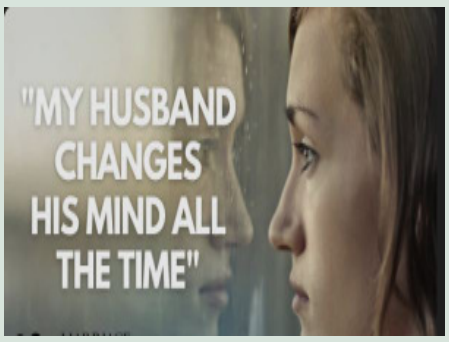

प्रेशर पर सीधा असर डालता है। आपका शरीर बार-बार चेतावनी दे रहा है कि यह माहौल आपके लिए सुरक्षित नहीं है। अगर आज इस पर ध्यान नहीं दिया, तो यह समस्या भविष्य में हार्ट डिजीज या क्रॉनिक डिप्रेशन का रूप ले सकती है। पति के गुस्से की वजह समझें- हर बार गुस्सा सिर्फ स्वभाव से जुड़ा नहीं होता है। कई बार इसके पीछे तनाव, पुराने अनुभव, भावनाओं को व्यक्त करने में कठिनाई या खुद को समझा न पाने की परेशानी भी छिपी हो सकती है। अक्सर पत्नियां खुद को दोष देने लगती हैं या पति को शांत करने की जिम्मेदारी उठा लेती हैं। लेकिन यहां ये समझना जरूरी है कि आप किसी के गुस्से की 'मैनेजर' नहीं हैं। उन्हें शांत करना या उनके ट्रिगर को बचाना आपकी ड्यूटी नहीं है। गुस्सा कब एब्यूजिव हो सकता है,जब हम किसी के साथ भावनात्मक रूप से जुड़े होते हैं, तो हमारा 'लॉजिक' काम करना बंद कर देता है। आप उनके साथ बिताए अच्छे पलों को याद कर बुरे पलों को नजरअंदाज करती हैं। लेकिन आपको ठंडे दिमाग से कुछ सवालों के जवाब खुद को देने होंगे। क्या मैं इस घर में सुरक्षित महसूस करती हूं? क्या मेरी खुशी मेरी सेहत उनकी प्राथमिकता है? क्या बच्चा इस माहौल में स्वस्थ रूप से बढ़ पाएगा? पिछली बार मैं कब बिना किसी डर के खुलकर हंसी थी ? क्या मैं अपनी बहन को ऐसे रिश्ते में रहने की सलाह देती? क्या वे हर किसी के ऊपर इसी तरह चिल्लाते हैं? क्या वे अपने गुस्से पर शर्मिंदगी महसूस करते हैं? क्या वे खुद को बदलने की बात करते हैं? क्या वे इसके लिए प्रोफेशनल मदद चाहते हैं? क्या मैं अगले 20 साल इसी डर में बिता सकती हूं? स्थिति को सुधारने के लिए क्या करें? अगर लगता है कि इस रिश्ते में अभी भी गुंजाइश है और आपके पति बदलाव के लिए तैयार हो सकते हैं, तो एक एक्शन प्लान के साथ काम करना होगा। 1. हेल्दी बाउंड्री तय करें- जब वे शांत हों, तब उनसे बात करें। उन्हें स्पष्ट शब्दों में कहें, 'मुझे आपसे प्यार है, लेकिन आपका चिल्लाना और अपमान करना मुझे स्वीकार्य नहीं है। जब आप चिल्लाएंगे, मैं उस कमरे से बाहर चली जाऊंगी।' इसे 'सेट लिमिट्स' कहते हैं। 2. बातचीत के लिए सही समय चुनें- गुस्से के दौरान दी गई कोई भी दलील 'आग में घी' का काम करती है। इसलिए पति से बातचीत के लिए ऐसा समय चुनें, जब वह खुश हों और उनका मूड अच्छा हो। इस दौरान समझदारी के साथ अपनी बात रखें। 3. प्रोफेशनल हेल्प लें- अक्सर 'घर की बातें घर में' रखने के चक्कर में हम काउंसलर से सलाह नहीं लेते। लेकिन ऐसे समय में प्रोफेशनल हेल्प लेना जरूरी है। इसके लिए 'कपल थेरेपी' या 'एंगर मैनेजमेंट' की क्लासेज जॉइन कर सकते हैं। अगर वे ऐसा करने से मना करते हैं, तो यह संकेत है कि उन्हें आपकी परवाह नहीं है।4. अपना सपोर्ट सिस्टम बनाएं- अकेले इस बोझ को न उठाएं। अपने माता-पिता या किसी भरोसेमंद दोस्त को इस स्थिति के बारे में बताएं। जब लोग जानते हैं कि क्या हो रहा है, तो सामने वाले पर एक सामाजिक दबाव भी बनता है कि वह अपना व्यवहार सुधारे। गुस्से से कैसे निपटें? प्रोफेशनल हेल्प के दौरान भी आपको खुद ही इस गुस्से से निपटना होगा तो इसके लिए कुछ बातों का खास ख्याल रखें। किसी भी रिश्ते को बचाने की जिम्मेदारी केवल एक व्यक्ति की नहीं होती। अगर पति बदलाव के लिए तैयार नहीं हैं, अपनी गलती नहीं मानते और आपका स्वास्थ्य लगातार खराब हो रहा है, तो आप समझदारी से फैसला ले सकती हैं। अंतिम सलाह- आपकी सुरक्षा और आत्म-सम्मान सबसे ऊपर है। पति के अच्छे व्यवहार के दिनों को ढाल बनाकर उनके बुरे व्यवहार को नजरअंदाज न करें। अगर वे बदलाव के लिए तैयार नहीं हैं और आपकी सेहत बिगड़ती जा रही है, तो आपको अपने भविष्य और सुरक्षा के लिए समझदारी से सही फैसला लेना चाहिए।

झारखंड में छात्रों पर लाठीचार्ज पर भड़के प्रकाश राज,बोले- अब ये क्रूरता नहीं चलेगी, अहंकारी से सत्ता और कमजोर होगी

रांची। एक्टर प्रकाश राज ने सोमवार को रांची में झारखंड विधानसभा की ओर मार्च कर रहे प्रदर्शनकारी छात्रों पर पुलिस की कार्रवाई पर प्रतिक्रिया दी। प्रकाश राज ने अपने एक्स अकाउंट पर सोमवार को प्रदर्शन स्थल से कथित तौर पर लिया गया एक वीडियो रीपोस्ट किया। वीडियो में छात्रों को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस और लाठीचार्ज का इस्तेमाल करते हुए दिखाया गया। रिप्लाई देते हुए एक्टर ने लिखा, 'क्यों... क्यों... क्यों? अब ये क्रूरता नहीं चलेगी। इससे सिर्फ घमंड में बैठी सत्ता और कमजोर होगी।' पीयूष ने नसीरुद्दीन शाह के बयान पर सवाल उठाया-झारखंड में जेपीएससी-जेएसएससी परीक्षा में कथित गड़बड़ी के खिलाफ छात्रों का आंदोलन जारी है। इस बीच बॉलीवुड की चुप्पी पर भी सवाल उठ रहे हैं। सोशल मीडिया यूजर्स का कहना है कि दिल्ली के सीजेपी (कॉकरोच जनता पार्टी) प्रदर्शन के दौरान सलमान खान, नसीरुद्दीन शाह, आलिया भट्ट और सोनाक्षी सिन्हा जैसे कई सेलेब्स ने छात्रों के समर्थन में प्रतिक्रिया दी थी।

यूजर्स का दावा है कि झारखंड के छात्रों के मुद्दे पर ज्यादातर बड़े चेहरे चुप हैं। हालांकि, एक्टर पीयूष मिश्रा रांची पहुंचकर छात्रों के समर्थन में खड़े हुए। पीयूष मिश्रा ने झारखंड प्रोटेस्ट में पहुंचकर नसीरुद्दीन शाह के एक बयान पर उन पर कटाक्ष किया। मिश्रा ने कहा था, 'नसीरुद्दीन शाह साहब, आपने कॉकरोच जनता पार्टी के प्रोटेस्ट पर सेलेब्स के कुछ न कहने पर एक बात कही थी कि जिन कुत्तों के मुंह में हड्डी है वह नहीं बोलेंगे। माफ करिएगा, मैं आपका प्रति पूरा सम्मान देकर पूछना चाहता हूं कि इस वक्त वो कौन कुत्ते हैं, जिनके मुंह में हड्डी है।' क्या था नसीरुद्दीन शाह का पूरा बयान? दरअसल, दिल्ली में कॉकरोच जनता पार्टी के प्रोटेस्ट पर शुरुआत में सेलेब्स की चुप्पी पर बात करते हुए नसीरुद्दीन शाह ने द वायर से बात करते हुए कहा था, 'सेलेब्स तब बोलेंगे, जब उनका जमीर उनसे ऐसा करने को बोलेगा। एक कहावत है कि जिस कुत्ते के मुंह में हड्डी होती है, वो भौंक नहीं सकता। जैसे ही हड्डी उसके मुंह से गिरेगी या दांत टूटेंगे, तब वो भौंकेगा।' बता दें कि झारखंड छात्रों के प्रदर्शन के 16वें दिन पीयूष मिश्रा धरना स्थल जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम पहुंचे थे।

उन्होंने मीडिया से बातचीत में कहा था कि वे छात्रों के इंटरव्यू देखकर और उनकी आंखों में दर्द देखकर यहां आए हैं। इस दौरान उन्होंने अपनी फिल्म 'गुलाल' का प्रसिद्ध गाना 'आरंभ है प्रचंड' भी गाया था।

गोविंदा की भड़कीं हुई पत्नी सुनीता- 'उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है',गोविंदा के एक्ट्रेस कोमल के साथ दिखने पर बोलीं- क्या घटिया स्टैंडर्ड है

मुंबई। गोविंदा को एक्ट्रेस कोमल रानी के साथ देखे जाने के सवाल पर प्रतिक्रिया देते हुए पत्नी

सुनीता आहूजा ने कहा कि गोविंदा की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। दरअसल, सोमवार को जब एक पैपराजी ने सुनीता आहूजा से पूछा कि गोविंदा सर भी देखे गए कोमल मैम के साथ, फिल्म का प्रमोशन शुरू हुआ? इस पर सुनीता ने कहा कि एक कहावत सुनी है- 'विनाश काले विपरीत बुद्धि।' और उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। इसलिए यह सब करता है। क्या बोले अब? वहीं, उनसे पूछा गया कि सोशल मीडिया पर गोविंदा को चीटर नंबर 1 कहा जा रहा है, तो सुनीता ने कहा कि यह सवाल गोविंदा के फैंस से पूछना। जब मैं बोलती हूं, तो ये सब मुझे ट्रोल करते हैं। मैं चाहती हूं गोविंदा के फैंस, मीडिया इस चीज का जवाब दें। मुझसे मत पूछो। मुझको कोई इंटरेस्ट ही नहीं है और ये उसके फैंस बताएंगे। उन्होंने आगे कहा कि जब मैं सच बोलती हूं, तो सब मुझे गालियां देते हैं तो अब जो देख रहे हैं, उनका बताना चाहिए गोविंदा सही या मैं और इस बारे में मुझे कुछ बात नहीं करनी। सब भाड़ में जाए। सुनीता ने यह भी कहा कि कुछ करना भी था तो स्टैंडर्ड से करता, यह क्या घटिया स्टैंडर्ड कर रहा है। पहले जो उनका स्टैंडर्ड था न, ये तो स्टैंडर्ड ही नहीं है। यह गोविंदा का स्टैंडर्ड नहीं है। को-एक्ट्रेस के साथ गोविंदा स्पॉट हुए थे-गोविंदा हाल ही में एक्ट्रेस कोमल रानी स्वर्णकार के साथ एयरपोर्ट पर स्पॉट हुए थे। बता दें कि सुनीता ने कुछ समय पहले ही कहा था कि उन्हें कोमल नाम से नफरत है।

सुनील शेट्टी हुए 65 के धमकी मिलने पर अंडरवर्ल्ड डॉन को गालियां दीं,को-एक्ट्रेस से मिलाने के लिए जूनियर आर्टिस्ट को नकली मुख्यमंत्री बनाया

मुंबई। 90 का दशक। मुंबई में अंडरवर्ल्ड का खौफ ऐसा था कि बड़े-बड़े कारोबारी और फिल्म स्टार भी धमकी भरे फोन से घबरा जाते थे। इसी दौर में एक बॉलीवुड एक्टर को भी लगातार धमकी वाले फोन आ रहे थे। करीब डेढ़ साल तक धमकियों का सिलसिला चलता रहा, लेकिन एक दिन बात हद से आगे बढ़ गई। फोन करने वाले गैंगस्टर ने धमकी दी कि वह एक्टर के पिता को गोली मार देगा। बेटे ने अब तक धमकी को नजरअंदाज किया था, लेकिन पिता को धमकी मिलते ही उसका सब्र टूट गया। उसने गैंगस्टर को ही उसी की भाषा में जवाब दिया, गालियां दीं और कहा- मेरे पास तुझसे ज्यादा पैसे भी हैं और ज्यादा कनेक्शन भी। इसलिए कभी मत सोचना कि मैं डर जाऊंगा। यह एक्टर थे बॉलीवुड के 'अन्ना' यानी सुनील शेट्टी और गैंगस्टर था हेमंत पुजारी। 15 साल की उम्र में पुलिस को ट्रेनिंग दी- सुनील शेट्टी ने लल्लनटॉप को दिए इंटरव्यू में बताया था कि जब वह 13-14 साल के थे, तब ब्रूस ली की फिल्मों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मार्शल आर्ट सीखने का फैसला कर लिया। सुनील ने बताया था कि उस दौर में वह क्रिकेट भी खेलते थे, लेकिन खुद को और मजबूत और फुर्तीला बनाने के लिए उन्होंने मार्शल आर्ट्स की ट्रेनिंग शुरू की। लगातार मेहनत और समर्पण का नतीजा यह हुआ कि महज 15 साल की उम्र में उनके सेंसेई (टीचर) ने उन्हें दूसरे छात्रों को ट्रेनिंग देने की जिम्मेदारी सौंप दी। इसके बाद भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) के जवान भी उनसे ट्रेनिंग लेने आने लगे। इतना ही नहीं, वह महाराष्ट्र पुलिस के जवानों को भी फिटनेस और रनिंग की ट्रेनिंग देते थे। सुनील ने बताया था कि वह जवानों के साथ 20 से 30 किलोमीटर तक दौड़ लगाते थे और रेत व पानी में कठिन अभ्यास करवाते थे। पहली फिल्म के पोस्टर खुद सड़कों पर चिपकाए थे-सुनील शेट्टी की पहली फिल्म 'आरजू' लगभग 90-95 प्रतिशत शूट होने के बाद बंद हो गई। इसके बाद दूसरी फिल्म भी शुरू होकर रुक गई। लगातार दो प्रोजेक्ट ठप होने के बाद आखिरकार उन्हें 'बलवान' से बॉलीवुड में डेब्यू करने का मौका मिला। फिल्म 'बलवान' के समय

इतना बड़ा प्रमोशन बजट नहीं था। इसलिए वह खुद अपने रेस्टोरेंट के कर्मचारियों के साथ मुंबई की सड़कों पर फिल्म के पोस्टर चिपकाते थे। लल्लनटॉप को दिए इंटरव्यू में सुनील ने बताया था कि बलवान बॉक्स ऑफिस पर सफल रही। दर्शकों ने फिल्म पसंद की, लेकिन कुछ फिल्म समीक्षकों ने उनकी एक्टिंग की जमकर आलोचना की। एक मशहूर समीक्षक ने अपने रिव्यू में उन्हें 'वुडन डोरनॉब' तक कह दिया था। इतना ही नहीं, उसने यह भी लिख दिया कि सुनील शेट्टी को फिल्मों में काम करने की बजाय अपना रेस्टोरेंट में वापस जाकर इडली-वड़ा बेचना चाहिए। चुनाव प्रचार को लेकर सुनील दत्त ने नाराजगी जताई थी-पिछले साल द ग्रेट इंडियन कपिल शो में सुनील शेट्टी ने बताया था कि एक बार संजय दत्त अपने एक दोस्त के कहने पर चुनाव प्रचार के लिए तैयार हो गए। हालांकि, मजेदार बात यह थी कि जिस नेता के लिए वे प्रचार करने जा रहे थे, वह विपक्षी पार्टी से था और वह उनके पिता सुनील दत्त के खिलाफ चुनाव लड़ रहा था। इस पर संजय दत्त ने मुस्कुराते हुए सफाई दी थी, 'मैं भूल गया था।' सुनील शेट्टी ने आगे बताया था कि बाद में संजय की जगह उन्हें प्रचार के लिए भेजा गया। जब यह बात सुनील दत्त को पता चली तो उन्होंने सुनील शेट्टी को घर बुलाकर कहा, 'बेटा, मैं आपकी दोस्ती समझता हूं, लेकिन मेरे बारे में भी सोचना चाहिए था।' इस पर सुनील शेट्टी ने कहा था कि उस समय उनके मन में बस एक ही बात आई थी- 'आपके बेटे ने नहीं सोचा, मैं क्या सोचूं!' सास के कहने पर फिल्म 'बॉर्डर' में काम किया-'बॉर्डर' सुनील शेट्टी की सबसे फेमस फिल्मों में गिनी जाती है। हालांकि, सुनील ने शुरुआत में इस फिल्म में काम करने से साफ इनकार कर दिया था। लल्लनटॉप को दिए एक इंटरव्यू में सुनील शेट्टी ने बताया कि उस समय फिल्म इंडस्ट्री में जेपी दत्ता की एक अलग ही इमेज थी। लोग कहते थे कि वह शूटिंग के दौरान बेहद रूड रहते हैं और कलाकारों को डांटने या गुस्सा करने से भी नहीं हिचकिचाते। यह सब सुनकर सुनील ने मन बना लिया था कि ऐसे डायरेक्टर के साथ काम नहीं करेंगे। उन्हें लगा कि अगर किसी ने सेट पर बेइज्जती की या गाली दी, तो उनके लिए काम करना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए उन्होंने फिल्म करने से मना कर दिया। इसी बीच उनकी सास ने उन्हें समझाया कि किसी की बातों पर भरोसा करने से पहले खुद फिल्म की कहानी सुननी चाहिए। सास के कहने पर सुनील की जेपी दत्ता से मुलाकात हुई। उन्होंने फिल्म की कहानी सुनी और आखिरकार फिल्म बॉर्डर के लिए हां कर दी थी। कारगिल में घायल जवान से मिलकर रो पड़े थे सुनील शेट्टी-'बॉर्डर' की सफलता के बाद सुनील शेट्टी कारगिल युद्ध के दौरान फॉरवर्ड बेस और सैन्य अस्पताल पहुंचे थे। वहां उनकी मुलाकात 19 साल के एक जवान से हुई, जिसने युद्ध में अपना एक हाथ गंवा दिया था। सुनील को देखते ही जवान बोला, 'भैरव सिंह जी, मेरा एक हाथ चला गया... मुझे वापस भेज दो, दुश्मनों को खत्म करना है।' यह सुनकर सुनील की आंखें भर आईं। जवान के माता-पिता ने उन्हें ही ढांढस बंधाया और कहा, 'रोना मत बेटा, उसने देश के लिए हाथ खोया है। छोटा बेटा भी फौज में जाएगा।' सुनील ने कहा था, उसी दिन उन्हें समझ आया कि भारतीय सेना का जज्बा आम लोगों से बिल्कुल अलग होता है। अक्षय और सुनील को अजय देवगन कहते हैं 'दूधवाला'-सुनील शेट्टी सालों से रात 10-10:30 बजे तक सो जाते हैं और सुबह 5:30 बजे जिम पहुंच जाते हैं। उनकी यह दिनचर्या कभी नहीं बदली। इसी आदत को लेकर अजय देवगन अक्सर उनकी और अक्षय कुमार की खिंचाई करते हैं। सुनील ने लल्लनटॉप को दिए इंटरव्यू में बताया था, 'अजय देवगन अक्सर कहते हैं फिल्म इंडस्ट्री में दो ही दूधवाले हैं–एक अक्षय कुमार और दूसरा सुनील शेट्टी। सुबह-सुबह

स्वत्वाधिकारी
एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड
न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र) 211002 से
मुद्रित एवं सी-41यूपी
एसआईडीसी औद्योगिक
क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।